॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्री रामचरित मानस

## प्रथम सोपान

## बालकाण्ड

श्लोक

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।

मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।

याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।

वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कबीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।

सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥ ५॥

यन्मायावशवर्तिं विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥ ६॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति॥ ७॥

सो. जो सुमिरत सिधि हो गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सो बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥ १॥

मूक हो बाचाल पंगु चढइ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥ २॥

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन।

करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ ३ ॥

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥

बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥ ५ ॥

बंदउ गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥
अमिय मूरिमय चूरन चारू । समन सकल भव रुज परिवारू ॥
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किँ तिलक गुन गन बस करनी ॥
श्रीगुर पद नख मनि गन जोती । सुमिरत दिब्य द्रृष्टि हियँ होती ॥
दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग उर आवइ जासू ॥
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥
सूझहिं राम चरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥

दो. जथा सुंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमि दृग दोष बिभंजन॥
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन। बरनउँ राम चरित भव मोचन॥
बंदउँ प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना॥
सुजन समाज सकल गुन खानी। करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी॥
साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिं जग जस पावा॥
मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा॥
बिधि निषेधमय कलि मल हरनी। करम कथा रबिनंदनि बरनी॥
हरि हर कथा बिराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी॥
बटु बिस्वास अचल निज धरमा। तीरथराज समाज सुकरमा॥
सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा॥
अकथ अलौकिक तीरथरा। दे सद्य फल प्रगट प्रभा॥

दो. सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग॥ २॥

मज्जन फल पेखि ततकाला। काक होहिं पिक बकउ मराला॥

सुनि आचरज करै जनि को। सतसंगति महिमा नहिं गो॥
बालमीक नारद घटजोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी॥
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना॥
मति कीरति गति भूति भला। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पा॥
सो जानब सतसंग प्रभा। लोकहुँ बेद न आन उपा॥
बिनु सतसंग बिबेक न हो। राम कृपा बिनु सुलभ न सो॥
सतसंगत मुद मंगल मूला। सो फल सिधि सब साधन फूला॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पा। पारस परस कुधात सुहा॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥
बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मो सन कहि जात न कैसें। साक बनिक मनि गुन गन जैसें॥

दो. बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं को।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दो॥ ३क॥

संत सरल चित जगत हित जानि सुभा सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु॥ ३ख॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाँ॥

पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें॥
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी॥
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा॥
उदय केत सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके॥
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं॥
बंदउँ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइ पर दोषा॥
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना॥
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही॥
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा॥

दो. उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति॥ ४॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाब भोरा॥
बायस पलिहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥
बंदउँ संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं॥
उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं॥

सुधा सुरा सम साधू असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू॥
गुन अवगुन जानत सब को। जो जेहि भाव नीक तेहि सो॥

दो. भलो भलाहि पै लहइ लहइ निचाहि नीचु।
सुधा सराहि अमरताँ गरल सराहि मीचु॥ ५॥

खल अघ अगुन साधू गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥
भले पोच सब बिधि उपजा। गनि गुन दोष बेद बिलगा॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना॥
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमि सुजीवनु माहुरु मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु मारव महिदेव गवासा॥
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगमागम गुन दोष बिभागा॥

दो. जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥ ६ ॥

अस बिबेक जब दे बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥
काल सुभा करम बरिआ । भले प्रकृति बस चुकइ भला ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ॥
खलउ करहिं भल पा सुसंगू । मिटइ न मलिन सुभा अभंगू ॥
लखि सुबेष जग बंचक जे । बेष प्रताप पूजिहिं ते ॥
उघरहिं अंत न हो निबाहू । कालनेमि जिमि रावन राहू ॥
किहुँ कुबेष साधु सनमानू । जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ॥
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ॥
धूम कुसंगति कारिख हो । लिखि पुरान मंजु मसि सो ॥
सो जल अनल अनिल संघाता । हो जलद जग जीवन दाता ॥

दो. ग्रह भेषज जल पवन पट पा कुजोग सुजोग ।
होहि कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥ ७क ॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।

ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥ ७ख ॥

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥ ७ग ॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब ।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब ॥ ७घ ॥

आकर चारि लाख चौरासी । जाति जीव जल थल नभ बासी ॥
सीय राममय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥
जानि कृपाकर किंकर मोहू । सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू ॥
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं । तातें बिनय करउँ सब पाही ॥
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥
सूझ न एकउ अंग उपा । मन मति रंक मनोरथ रा ॥
मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी । चहि अमि जग जुरइ न छाछी ॥
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठा । सुनिहहिं बालबचन मन ला ॥
जौ बालक कह तोतरि बाता । सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ॥
हँसिहहि कूर कुटिल कुबिचारी । जे पर दूषन भूषनधारी ॥
निज कवित केहि लाग न नीका । सरस हो अथवा अति फीका ॥

जे पर भनिति सुनत हरषाही। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥
जग बहु नर सर सरि सम भा। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पा॥
सज्जन सकृत सिंधु सम को। देखि पूर बिधु बाढ़इ जो॥

दो. भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करहहिं उपहास॥ ८॥

खल परिहास हो हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥
हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही॥
कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू॥
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी॥
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागहि फीकी॥
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुवर की॥
राम भगति भूषित जियँ जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी॥
कबि न हौं नहिं बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू॥
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना॥
भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा॥
कबित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे॥

दो. भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिवेक॥ ९॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जो। राम नाम बिनु सोह न सो॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोन न बसन बिना बर नारी॥
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही॥
जदपि कबित रस एकउ नाही। राम प्रताप प्रकट एहि माहीं॥
सो भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बडप्पनु पावा॥
धूमउ तजइ सहज करुआ। अगरु प्रसंग सुगंध बसा॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी॥

छं. मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की॥
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होहि सुजन मन भावनी॥
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी॥

दो. प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग।
दारु बिचारु कि करइ को बंदि मलय प्रसंग॥ १०क॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान॥ १०ख॥

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी। अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी॥
नृप किरीट तरुनी तनु पा। लहहिं सकल सोभा अधिका॥
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं॥
भगति हेतु बिधि भवन बिहा। सुमिरत सारद आवति धा॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाँ। सो श्रम जा न कोटि उपाँ॥
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरि जस कलि मल हारी॥
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना॥
हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना॥
जौं बरषइ बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकुतामनि चारू॥

दो. जुगुति बेधि पुनि पोहिहिं रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग॥ ११॥

जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला॥
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े। कपट कलेवर कलि मल भाँड़ें॥
बंचक भगत कहा राम के। किंकर कंचन कोह काम के॥
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी॥
जौं अपने अवगुन सब कहँ। बाढ़इ कथा पार नहिं लहँ॥
ताते मैं अति अलप बखाने। थोरे महुँ जानिहहिं सयाने॥
समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी। को न कथा सुनि देहि खोरी॥
एतेहु पर करिहहिं जे असंका। मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका॥
कबि न हौं नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा॥
जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं॥
समुझत अमित राम प्रभुता। करत कथा मन अति कदरा॥

दो. सारद सेस महेस बिधि आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान॥ १२॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सो। तदपि कहें बिनु रहा न को॥
तहाँ बेद अस कारन राखा। भजन प्रभा भाँति बहु भाषा॥
एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद पर धामा॥

ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना॥
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी॥
जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू॥
ग बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥
बुध बरनहिं हरि जस अस जानी। करहि पुनीत सुफल निज बानी॥
तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ ना राम पद माथा॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गा। तेहिं मग चलत सुगम मोहि भा॥

दो. अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं।
चढि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं॥ १३॥

एहि प्रकार बल मनहि देखा। करिहउँ रघुपति कथा सुहा॥
ब्यास आदि कबि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना॥
चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे। पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे॥
कलि के कबिन्ह करउँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा॥
जे प्राकृत कबि परम सयाने। भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने॥
भ जे अहहिं जे होहहिं आगें। प्रनवउँ सबहिं कपट सब त्यागें॥
होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधु समाज भनिति सनमानू॥
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बाल कबि करहीं॥

कीरति भनिति भूति भलि सो। सुरसरि सम सब कहँ हित हो॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सो मोरे। सिनि सुहावनि टाट पटोरे॥

दो. सरल कबित कीरति बिमल सो आदरहिं सुजान।
सहज बयर बिसरा रिपु जो सुनि करहिं बखान॥ १४क॥

सो न हो बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर।
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर॥ १४ख॥

कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल।
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल॥ १४ग॥

सो. बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित॥ १४घ॥

बंदउँ चारि बेद भव बारिधि बोहित सरिस।
जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु॥ १४ङ॥

बंदउँ बिधि पद रेनु भव सागर जेहि कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी॥ १४च॥

दो. बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहउँ कर जोरि।
हो प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि॥ १४छ॥

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता॥
मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत एक हर अबिबेका॥
गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी॥
सेवक स्वामि सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब बिधि तुलसीके॥
कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा। साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा॥
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभा महेस प्रतापू॥
सो उमेस मोहि पर अनुकूला। करिहिं कथा मुद मंगल मूला॥
सुमिरि सिवा सिव पा पसा। बरनउँ रामचरित चित चा॥
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती॥
जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता॥
होहहिं राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी॥

दो. सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसा।

तौ फुर हो जो कहैं सब भाषा भनिति प्रभा ॥ १५ ॥

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ॥
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥
सिय निंदक अघ ओघ नसा । लोक बिसोक बना बसा ॥
बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । कीरति जासु सकल जग माची ॥
प्रगटे जहँ रघुपति ससि चारू । बिस्व सुखद खल कमल तुसारू ॥
दसरथ रा सहित सब रानी । सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥
करउँ प्रनाम करम मन बानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥
जिन्हहि बिरचि बड़ भयउ बिधाता । महिमा अवधि राम पितु माता ॥

सो. बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरे ॥ १६ ॥

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू । जाहि राम पद गूढ़ सनेहू ॥
जोग भोग महँ राखे गो । राम बिलोकत प्रगटे सो ॥
प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना । जासु नेम ब्रत जा न बरना ॥
राम चरन पंकज मन जासू । लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥
बंदउँ लछिमन पद जलजाता । सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥

रघुपति कीरति बिमल पताका। दंड समान भयउ जस जाका॥
सेष सहस्त्रसीस जग कारन। जो अवतरे भूमि भय टारन॥
सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर॥
रिपुसूदन पद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी॥
महावीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना॥

सो. प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानधन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥ १७॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा॥
बंदउँ सब के चरन सुहा। अधम सरीर राम जिन्ह पा॥
रघुपति चरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते॥
बंदउँ पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे॥
सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर बिग्यान बिसारद॥
प्रनवउँ सबहिं धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा॥
जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदउँ सब लायक॥
राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक॥

दो. गिरा अरथ जल बीचि सम कहित भिन्न न भिन्न।
बदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥ १८॥

बंदउँ नाम राम रघुवर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो॥
महामंत्र जो जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू॥
महिमा जासु जान गनरा। प्रथम पूजित नाम प्रभा॥
जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जे पिय संग भवानी॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को॥
नाम प्रभा जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

दो. बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास॥
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास॥ १९॥

आखर मधुर मनोहर दो। बरन बिलोचन जन जिय जो॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के॥

बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक बिसेषि जन त्राता॥
भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन।
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से॥

दो. एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जो।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दो॥ २०॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी॥
नाम रूप दु ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी॥
को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू॥
देखिहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना॥
रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें॥
सुमिरि नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें॥
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी॥

दो. राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार।

तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥ २१ ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़ गति जे । नाम जीहँ जपि जानहिं ते ॥
साधक नाम जपहिं लय लाँ । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाँ ॥
जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भगत जग चारि प्रकारा । सुकृती चारि अनघ उदारा ॥
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा । ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥
चहुँ जुग चहुँ श्रुति ना प्रभा । कलि बिसेषि नहिं आन उपा ॥

दो. सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।
नाम सुप्रेम पियूष हद तिन्हहुँ कि मन मीन ॥ २२ ॥

अगुन सगुन दु ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें । कि जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥
प्रोढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की । कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एकु दारुगत देखि एकू । पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें । कहैं नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥

ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन धन आनँद रासी॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी॥
नाम निरूपन नाम जतन तें। सो प्रगटत जिमि मोल रतन तें॥

दो. निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभा अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार॥ २३॥

राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट कि साधु सुखारी॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा॥
भंजे राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥
दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम कि पावन॥।
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन॥

दो. सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ॥ २४॥

राम सुकंठ बिभीषन दो। राखे सरन जान सबु को॥
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे॥
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा॥
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं॥
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा॥
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी॥
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती॥
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें॥

दो. ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि॥ २५॥

मासपारायण पहला विश्राम

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी॥
नारद जाने नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू॥
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू॥
ध्रुवँ सगलानि जपे हरि नाँ। पायउ अचल अनूपम ठाँ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥

अपतु अजामिलु गजु गनिका। भ मुकुत हरि नाम प्रभा॥
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ा। रामु न सकहिं नाम गुन गा॥

दो. नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥ २६॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भ नाम जपि जीव बिसोका॥
बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू॥
ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें॥
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन जन मीना॥
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला॥
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू॥
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू॥

दो. राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल॥ २७॥

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ ना रघुनाथहि माथा॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती॥
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि दैखि दयानिधि पोसो॥
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीतीं। बिनय सुनत पहिचानत प्रीती॥
गनी गरीब ग्रामनर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर॥
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी॥
साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला॥
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी॥
यह प्राकृत महिपाल सुभा। जान सिरोमनि कोसलरा॥
रीझत राम सनेह निसोतें। को जग मंद मलिनमति मोतें॥

दो. सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु।
उपल कि जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु॥ २८क॥

हौहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास॥ २८ख॥

अति बड़ि मोरि ढिठा खोरी। सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी॥
समुझि सहम मोहि अपडर अपनें। सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनें॥

सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही॥
कहत नसा हो हियँ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की॥
रहति न प्रभु चित चूक कि की। करत सुरति सय बार हि की॥
जेहिं अघ बधे ब्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सो कीन्ह कुचाली॥
सो करतूति बिभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने। राजसभाँ रघुबीर बखाने॥

दो. प्रभु तरु तर कपि डार पर ते कि आपु समान॥
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान॥ २९क॥

राम निकां रावरी है सबही को नीक।
जों यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक॥ २९ख॥

एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु ना।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसा॥ २९ग॥

जागबलिक जो कथा सुहा। भरद्वाज मुनिबरहि सुना॥
कहिहउँ सो संबाद बखानी। सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी॥
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा॥

सो सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा॥
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा॥
ते श्रोता बकता समसीला। सवँदरसी जानहिं हरिलीला॥
जानहिं तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना॥
औरउ जे हरिभगत सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना॥

दो. मै पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहि तसि बालपन तब अति रहैं अचेत॥ ३०क॥

श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मै जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़॥ ३०ख

तदपि कही गुर बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा॥
भाषाबद्ध करबि मैं सो। मोरें मन प्रबोध जेहिं हो॥
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें। तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें॥
निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करउँ कथा भव सरिता तरनी॥
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष बिभंजनि॥
रामकथा कलि पंनग भरनी। पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी॥
रामकथा कलि कामद गा। सुजन सजीवनि मूरि सुहा॥

सो बसुधातल सुधा तरंगिनि। भय भंजनि भ्रम भेक भुंगिनि॥
असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि॥
संत समाज पयोधि रमा सी। बिस्व भार भर अचल छमा सी॥
जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी। जीवन मुकुति हेतु जनु कासी॥
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी॥
सिवप्रय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी॥
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी। रघुबर भगति प्रेम परमिति सी॥

दो. राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु॥ ३१॥

राम चरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुभग सिंगारू॥
जग मंगल गुन ग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के॥
सदगुर ग्यान बिराग जोग के। बिबुध बैद भव भीम रोग के॥
जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल ब्रत धरम नेम के॥
समन पाप संताप सोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के॥
सचिव सुभट भूपति बिचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के॥
काम कोह कलिमल करिगन के। केहरि सावक जन मन बन के॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के॥

मंत्र महामनि बिषय ब्याल के। मेटत कठिन कुंक भाल के॥
हरन मोह तम दिनकर कर से। सेवक सालि पाल जलधर से॥
अभिमत दानि देवतरु बर से। सेवत सुलभ सुखद हरि हर से॥
सुकबि सरद नभ मन उडगन से। रामभगत जन जीवन धन से॥
सकल सुकृत फल भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से॥
सेवक मन मानस मराल से। पावक गंग तंरग माल से॥

दो. कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड।
दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड॥ ३२क॥

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु॥ ३२ख॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी। जेहि बिधि संकर कहा बखानी॥
सो सब हेतु कहब मैं गा। कथाप्रबंध बिचित्र बना॥
जेहि यह कथा सुनी नहिं हो। जनि आचरजु करैं सुनि सो॥
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी। नहिं आचरजु करहिं अस जानी॥
रामकथा कै मिति जग नाहीं। असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं॥
नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा॥

कलपभेद हरिचरित सुहा। भाँति अनेक मुनीसन्ह गा॥
करि न संसय अस उर आनी। सुनि कथा सारद रति मानी॥

दो. राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।
सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह कें बिमल बिचार॥ ३३॥

एहि बिधि सब संसय करि दूरी। सिर धरि गुर पद पंकज धूरी॥
पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी। करत कथा जेहिं लाग न खोरी॥
सादर सिवहि ना अब माथा। बरनउँ बिसद राम गुन गाथा॥
संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा॥
नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा॥
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आ करहिं रघुनायक सेवा॥
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना॥

दो. मज्जहि सज्जन बृंद बहु पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर॥ ३४॥

दरस परस मज्जन अरु पाना। हरइ पाप कह बेद पुराना॥

नदी पुनीत अमित महिमा अति। कहि न सकइ सारद बिमलमति॥
राम धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित अति पावनि॥
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजे तनु नहि संसारा॥
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी॥
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा॥
रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पा बिश्रामा॥
मन करि विषय अनल बन जर। हो सुखी जौ एहिं सर पर॥
रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचे संभु सुहावन पावन॥
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन॥
रचि महेस निज मानस राखा। पा सुसमउ सिवा सन भाषा॥
तातें रामचरितमानस बर। धरे नाम हियँ हेरि हरषि हर॥
कहउँ कथा सो सुखद सुहा। सादर सुनहु सुजन मन ला॥

दो. जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सो कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु॥ ३५॥

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी॥
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। बेद पुरान उदधि घन साधू॥

बरषहिं राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगलकारी॥
लीला सगुन जो कहहिं बखानी। सो स्वच्छता करइ मल हानी॥
प्रेम भगति जो बरनि न जा। सो मधुरता सुसीतलता॥
सो जल सुकृत सालि हित हो। राम भगत जन जीवन सो॥
मेधा महि गत सो जल पावन। सकिलि श्रवन मग चले सुहावन॥
भरे सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना॥

दो. सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।
ते एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि॥ ३६॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना। ग्यान नयन निरखत मन माना॥
रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सो बर बारि अगाधा॥
राम सीय जस सलिल सुधासम। उपमा बीचि बिलास मनोरम॥
पुरइनि सघन चारु चौपा। जुगुति मंजु मनि सीप सुहा॥
छंद सोरठा सुंदर दोहा। सो बहुरंग कमल कुल सोहा॥
अरथ अनूप सुमाव सुभासा। सो पराग मकरंद सुबासा॥
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला। ग्यान बिराग बिचार मराला॥
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहुभाँती॥
अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ग्यान बिग्यान बिचारी॥

नव रस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा॥
सुकृती साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जल बिहग समाना॥
संतसभा चहुँ दिसि अवँरा। श्रद्धा रितु बसंत सम गा॥
भगति निरुपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना॥
सम जम नियम फूल फल ग्याना। हरि पत रति रस बेद बखाना॥
औरउ कथा अनेक प्रसंगा। ते सुक पिक बहुबरन बिहंगा॥

दो. पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु॥ ३७॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे। ते एहि ताल चतुर रखवारे॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी। ते सुरबर मानस अधिकारी॥
अति खल जे बिष बग कागा। एहिं सर निकट न जाहिं अभागा॥
संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न बिषय कथा रस नाना॥
तेहि कारन आवत हियँ हारे। कामी काक बलाक बिचारे॥
आवत एहिं सर अति कठिना। राम कृपा बिनु आ न जा॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला॥
गृह कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम सैल बिसाला॥
बन बहु बिषम मोह मद माना। नदीं कुतर्क भयंकर नाना॥

दो. जे श्रद्धा संबल रहित नहि संतन्ह कर साथ।
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ॥ ३८॥

जौं करि कष्ट जा पुनि को। जातहिं नींद जुड़ा हो॥
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गहुँ न मज्जन पाव अभागा॥
करि न जा सर मज्जन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना॥
जौं बहोरि को पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा॥
सकल बिघ्न ब्यापहि नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही॥
सो सादर सर मज्जनु कर। महा घोर त्रयताप न जर॥
ते नर यह सर तजहिं न का। जिन्ह के राम चरन भल भा॥
जो नहा चह एहिं सर भा। सो सतसंग करउ मन ला॥
अस मानस मानस चख चाही। भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही॥
भयउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगे प्रेम प्रमोद प्रबाहू॥
चली सुभग कबिता सरिता सो। राम बिमल जस जल भरिता सो॥
सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि॥

दो. श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।

संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगति सुरसरितहि जा । मिली सुकीरति सरजु सुहा ॥
सानुज राम समर जसु पावन । मिले महानदु सोन सुहावन ॥
जुग बिच भगति देवधुनि धारा । सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी । राम सरुप सिंधु समुहानी ॥
मानस मूल मिली सुरसरिही । सुनत सुजन मन पावन करिही ॥
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरि तीर तीर बन बागा ॥
उमा महेस बिबाह बराती । ते जलचर अगनित बहुभाँती ॥
रघुबर जनम अनंद बधा । भवँर तरंग मनोहरता ॥

दो. बालचरित चहु बंधु के बनज बिपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारिबिहंग ॥ ४० ॥

सीय स्वयंबर कथा सुहा । सरित सुहावनि सो छबि छा ॥
नदी नाव पटु प्रस्न अनेका । केवट कुसल उतर सबिबेका ॥
सुनि अनुकथन परस्पर हो । पथिक समाज सोह सरि सो ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥
सानुज राम बिबाह उछाहू । सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥

कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं। ते सुकृती मन मुदित नहाहीं॥
राम तिलक हित मंगल साजा। परब जोग जनु जुरे समाजा॥
का कुमति केक केरी। परी जासु फल बिपति घनेरी॥

दो. समन अमित उतपात सब भरतचरित जपजाग।
कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग॥ ४१॥

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी॥
हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू। सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू॥
बरनब राम बिबाह समाजू। सो मुद मंगलमय रितुराजू॥
ग्रीषम दुसह राम बनगवनू। पंथकथा खर आतप पवनू॥
बरषा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी॥
राम राज सुख बिनय बड़ा। बिसद सुखद सो सरद सुहा॥
सती सिरोमनि सिय गुनगाथा। सो गुन अमल अनूपम पाथा॥
भरत सुभा सुसीतलता। सदा एकरस बरनि न जा॥

दो. अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास।
भायप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुबास॥ ४२॥

आरति बिनय दीनता मोरी। लघुता ललित सुबारि न थोरी॥
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी॥
राम सुप्रेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी॥
भव श्रम सोषक तोषक तोषा। समन दुरित दुख दारिद दोषा॥
काम कोह मद मोह नसावन। बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन॥
सादर मज्जन पान किं तें। मिटहिं पाप परिताप हि तें॥
जिन्ह एहि बारि न मानस धो। ते कायर कलिकाल बिगो॥
तृषित निरखि रबि कर भव बारी। फिरिहहि मृग जिमि जीव दुखारी॥

दो. मति अनुहारि सुबारि गुन गनि मन अन्हवा।
सुमिरि भवानी संकरहि कह कबि कथा सुहा॥ ४३क॥

अब रघुपति पद पंकरुह हियँ धरि पा प्रसाद।
कहउँ जुगल मुनिबर्ज कर मिलन सुभग संबाद॥ ४३ख॥

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा। तिन्हहि राम पद अति अनुरागा॥
तापस सम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना॥
माघ मकरगत रबि जब हो। तीरथपतिहिं आव सब को॥
देव दनुज किंनर नर श्रेनी। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं॥

पूजहि माधव पद जलजाता। परसि अखय बटु हरषहिं गाता॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिबर मन भावन॥
तहाँ हो मुनि रिषय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथराजा॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा। कहहिं परसपर हरि गुन गाहा॥

दो. ब्रह्म निरूपम धरम बिधि बरनहिं तत्त्व बिभाग।

कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग॥ ४४॥

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं॥
प्रति संबत अति हो अनंदा। मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृंदा॥
एक बार भरि मकर नहा। सब मुनीस आश्रमन्ह सिधा॥
जगबालिक मुनि परम बिबेकी। भरव्दाज राखे पद टेकी॥
सादर चरन सरोज पखारे। अति पुनीत आसन बैठारे॥
करि पूजा मुनि सुजस बखानी। बोले अति पुनीत मृदु बानी॥
नाथ एक संसउ बड़ मोरें। करगत बेदतत्व सबु तोरें॥
कहत सो मोहि लागत भय लाजा। जौ न कहउँ बड़ हो अकाजा॥

दो. संत कहहि असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव।

हो न बिमल बिबेक उर गुर सन किँ दुराव ॥ ४५ ॥

अस बिचारि प्रगटउँ निज मोहू । हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥
रास नाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद् गावा ॥
संतत जपत संभु अबिनासी । सिव भगवान ग्यान गुन रासी ॥
आकर चारि जीव जग अहहीं । कासीं मरत परम पद लहहीं ॥
सोपि राम महिमा मुनिराया । सिव उपदेसु करत करि दाया ॥
रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही । कहि बुझा कृपानिधि मोही ॥
एक राम अवधेस कुमारा । तिन्ह कर चरित बिदित संसारा ॥
नारि बिरहँ दुखु लहे अपारा । भयहु रोषु रन रावनु मारा ॥

दो. प्रभु सो राम कि अपर को जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्बग्य तुम्ह कहहु बिबेकु बिचारि ॥ ४६ ॥

जैसे मिटै मोर भ्रम भारी । कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी ॥
जागबलिक बोले मुसुका । तुम्हहि बिदित रघुपति प्रभुता ॥
राममगत तुम्ह मन क्रम बानी । चतुरा तुम्हारी मैं जानी ॥
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा । कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढ़ा ॥
तात सुनहु सादर मनु ला । कहउँ राम कै कथा सुहा ॥

महामोहु महिषेसु बिसाला। रामकथा कालिका कराला॥
रामकथा ससि किरन समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना॥
ऐसे संसय कीन्ह भवानी। महादेव तब कहा बखानी॥

दो. कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद।
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद॥ ४७॥

एक बार त्रेता जुग माहीं। संभु ग कुंभज रिषि पाहीं॥
संग सती जगजननि भवानी। पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी॥
रामकथा मुनीबर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुखु मानी॥
रिषि पूछी हरिभगति सुहा। कही संभु अधिकारी पा॥
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा। कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा॥
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दच्छकुमारी॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा। हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा॥
पिता बचन तजि राजु उदासी। दंडक बन बिचरत अबिनासी॥

दो. हृदयँ बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु हो।
गुप्त रुप अवतरे प्रभु गँ जान सबु को॥ ४८क॥

सो. संकर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सो ॥
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥ ४८ख ॥

रावन मरन मनुज कर जाचा । प्रभु बिधि बचनु कीन्ह चह साचा ॥
जौं नहिं जाँ रहइ पछितावा । करत बिचारु न बनत बनावा ॥
एहि बिधि भ सोचबस ईसा । तेहि समय जा दससीसा ॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भयउ तुरत सो कपट कुरंगा ॥
करि छलु मूढ़ हरी बैदेही । प्रभु प्रभा तस बिदित न तेही ॥
मृग बधि बन्धु सहित हरि आ । आश्रमु देखि नयन जल छा ॥
बिरह बिकल नर इव रघुरा । खोजत बिपिन फिरत दो भा ॥
कबहूँ जोग बियोग न जाकें । देखा प्रगट बिरह दुख ताकें ॥

दो. अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान ।
जे मतिमंद बिमोह बस हृदयँ धरहिं कछु आन ॥ ४९ ॥

संभु समय तेहि रामहि देखा । उपजा हियँ अति हरपु बिसेषा ॥
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी । कुसमय जानिन कीन्हि चिन्हारी ॥
जय सच्चिदानंद जग पावन । अस कहि चले मनोज नसावन ॥
चले जात सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥

सतीं सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेषी॥
संकरु जगतबंद्य जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा॥
तिन्ह नृपसुतहि नह परनामा। कहि सच्चिदानंद परधमा॥
भ मगन छबि तासु बिलोकी। अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी॥

दो. ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।

सो कि देह धरि हो नर जाहि न जानत वेद॥ ५०॥

बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी। सो सर्बग्य जथा त्रिपुरारी॥
खोजइ सो कि अग्य इव नारी। ग्यानधाम श्रीपति असुरारी॥
संभुगिरा पुनि मृषा न हो। सिव सर्बग्य जान सबु को॥
अस संसय मन भयउ अपारा। हो न हृदयँ प्रबोध प्रचारा॥
जद्यपि प्रगट न कहे भवानी। हर अंतरजामी सब जानी॥
सुनहि सती तव नारि सुभा। संसय अस न धरि उर का॥
जासु कथा कुभंज रिषि गा। भगति जासु मैं मुनिहि सुना॥
सो मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥

छं. मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।

कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सो रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।
अवतरे अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनि ॥

सो. लाग न उर उपदेसु जदपि कहे सिवँ बार बहु ।
बोले बिहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियँ ॥ ५१ ॥

जौं तुम्हरें मन अति संदेहू । तौ किन जा परीछा लेहू ॥
तब लगि बैठ अहउँ बटछाहिं । जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाही ॥
जैसें जा मोह भ्रम भारी । करेहु सो जतनु बिबेक बिचारी ॥
चलीं सती सिव आयसु पा । करहिं बिचारु करौं का भा ॥
इहाँ संभु अस मन अनुमाना । दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहें न संसय जाहीं । बिधी बिपरीत भला नाहीं ॥
होहि सो जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा । ग सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥

दो. पुनि पुनि हृदयँ विचारु करि धरि सीता कर रुप ।
आगें हो चलि पंथ तेहि जेहिं आवत नरभूप ॥ ५२ ॥

लछिमन दीख उमाकृत बेषा चकित भ भ्रम हृदयँ बिसेषा ॥
कहि न सकत कछु अति गंभीरा । प्रभु प्रभा जानत मतिधीरा ॥
सती कपटु जाने सुरस्वामी । सबदरसी सब अंतरजामी ॥
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना । सो सरबग्य रामु भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहँहुँ दुरा । देखहु नारि सुभाव प्रभा ॥
निज माया बलु हृदयँ बखानी । बोले बिहसि रामु मृदु बानी ॥
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू । पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥
कहे बहोरि कहाँ बृषकेतू । बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो. राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोचु ।
सती सभीत महेस पहिं चलीं हृदयँ बड़ सोचु ॥ ५३ ॥

मैं संकर कर कहा न माना । निज अग्यानु राम पर आना ॥
जा उतरु अब देहउँ काहा । उर उपजा अति दारुन दाहा ॥
जाना राम सतीं दुखु पावा । निज प्रभा कछु प्रगटि जनावा ॥
सतीं दीख कौतुकु मग जाता । आगें रामु सहित श्री भ्राता ॥
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना । सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ॥
देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका । अमित प्रभा एक तें एका ॥

बंदत चरन करत प्रभु सेवा। बिबिध बेष देखे सब देवा॥

दो. सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप।
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप॥ ५४॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते। सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते॥
जीव चराचर जो संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा॥
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे। सीता सहित न बेष घनेरे॥
सो रघुबर सो लछिमनु सीता। देखि सती अति भ सभीता॥
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं। नयन मूदि बैठीं मग माहीं॥
बहुरि बिलोके नयन उघारी। कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी॥
पुनि पुनि ना राम पद सीसा। चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा॥

दो. ग समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात।
लीन्ही परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात॥ ५५॥

मासपारायण दूसरा विश्राम

सतीं समुझि रघुबीर प्रभा। भय बस सिव सन कीन्ह दुरा॥

कछु न परीछा लीन्हि गोसा। कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि ना॥
जो तुम्ह कहा सो मृषा न हो। मोरें मन प्रतीति अति सो॥
तब संकर देखे धरि ध्याना। सतीं जो कीन्ह चरित सब जाना॥
बहुरि राममायहि सिरु नावा। प्रेरि सतिहि जेहिं झूँठ कहावा॥
हरि इच्छा भावी बलवाना। हृदयँ बिचारत संभु सुजाना॥
सतीं कीन्ह सीता कर बेषा। सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा॥
जौं अब करउँ सती सन प्रीती। मिटइ भगति पथु हो अनीती॥

दो. परम पुनीत न जा तजि किँ प्रेम बड़ पापु।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु॥ ५६॥

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा। सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा॥
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं॥
अस बिचारि संकरु मतिधीरा। चले भवन सुमिरत रघुबीरा॥
चलत गगन भै गिरा सुहा। जय महेस भलि भगति दृढ़ा॥
अस पन तुम्ह बिनु करइ को आना। रामभगत समरथ भगवाना॥
सुनि नभगिरा सती उर सोचा। पूछा सिवहि समेत सकोचा॥
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला। सत्यधाम प्रभु दीनदयाला॥
जदपि सतीं पूछा बहु भाँती। तदपि न कहे त्रिपुर आराती॥

दो.  सतीं हृदय अनुमान किय सबु जाने सर्बग्य।
कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य॥ ५७क॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी। चिंता अमित जा नहि बरनी॥
कृपासिंधु सिव परम अगाधा। प्रगट न कहे मोर अपराधा॥
संकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहि तजे हृदयँ अकुलानी॥
निज अघ समुझि न कछु कहि जा। तपइ अवाँ इव उर अधिका॥
सतिहि ससोच जानि बृषकेतू। कहीं कथा सुंदर सुख हेतू॥
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा। बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा॥
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन। बैठे बट तर करि कमलासन॥
संकर सहज सरुप सम्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा॥

दो.  सती बसहि कैलास तब अधिक सोचु मन माहिं।
मरमु न को जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं॥ ५८॥

नित नव सोचु सतीं उर भारा। कब जैहउँ दुख सागर पारा॥
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना। पुनिपति बचनु मृषा करि जाना॥
सो फलु मोहि बिधाताँ दीन्हा। जो कछु उचित रहा सो कीन्हा॥

अब बिधि अस बूझि नहि तोही। संकर बिमुख जिआवसि मोही॥
कहि न जा कछु हृदय गलानी। मन महुँ रामाहि सुमिर सयानी॥
जौ प्रभु दीनदयालु कहावा। आरती हरन बेद जसु गावा॥
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी। छूटउ बेगि देह यह मोरी॥
जौं मोरे सिव चरन सनेहू। मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू॥

दो. तौ सबदरसी सुनि प्रभु करउ सो बेगि उपा।
हो मरनु जेही बिनहिं श्रम दुसह बिपत्ति बिहा॥ ५९॥

सो. जलु पय सरिस बिका देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग हो रसु जा कपट खटा परत पुनि॥ ५७ख॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी। अकथनीय दारुन दुखु भारी॥
बीतें संबत सहस सतासी। तजी समाधि संभु अबिनासी॥
राम नाम सिव सुमिरन लागे। जाने सतीं जगतपति जागे॥
जा संभु पद बंदनु कीन्ही। सनमुख संकर आसनु दीन्हा॥
लगे कहन हरिकथा रसाला। दच्छ प्रजेस भ तेहि काला॥
देखा बिधि बिचारि सब लायक। दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक॥
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा। अति अभिमानु हृदयँ तब आवा॥

नहिं को अस जनमा जग माहीं। प्रभुता पा जाहि मद नाहीं॥

दो. दच्छ लि मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग॥ ६०॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा। बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा॥
बिष्नु बिरंचि महेसु बिहा। चले सकल सुर जान बना॥
सतीं बिलोके ब्योम बिमाना। जात चले सुंदर बिधि नाना॥
सुर सुंदरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना॥
पूछे तब सिवँ कहे बखानी। पिता जग्य सुनि कछु हरषानी॥
जौं महेसु मोहि आयसु देहीं। कुछ दिन जा रहौं मिस एहीं॥
पति परित्याग हृदय दुखु भारी। कहइ न निज अपराध बिचारी॥
बोली सती मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी॥

दो. पिता भवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु हो।
तौ मै जाँ कृपायतन सादर देखन सो॥ ६१॥

कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा॥
दच्छ सकल निज सुता बोला। हमरें बयर तुम्हउ बिसरा॥

ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना। तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना॥
जौं बिनु बोलें जाहु भवानी। रहइ न सीलु सनेहु न कानी॥
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जा बिनु बोलेहुँ न सँदेहा॥
तदपि बिरोध मान जहँ को। तहाँ गँ कल्यानु न हो॥
भाँति अनेक संभु समुझावा। भावी बस न ग्यानु उर आवा॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाँ। नहिं भलि बात हमारे भाँ॥

दो. कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि।
दि मुख्य गन संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि॥ ६२॥

पिता भवन जब ग भवानी। दच्छ त्रास काहुँ न सनमानी॥
सादर भलेहिं मिली एक माता। भगिनीं मिलीं बहुत मुसुकाता॥
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता॥
सतीं जा देखे तब जागा। कतहुँ न दीख संभु कर भागा॥
तब चित चढ़े जो संकर कहे। प्रभु अपमानु समुझि उर दहे॥
पाछिल दुखु न हृदयँ अस ब्यापा। जस यह भयउ महा परितापा॥
जद्यपि जग दारुन दुख नाना। सब तें कठिन जाति अवमाना॥
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा। बहु बिधि जननीं कीन्ह प्रबोधा॥

दो. सिव अपमानु न जा सहि हृदयँ न हो प्रबोध।
सकल सभहि हठि हटकि तब बोलीं बचन सक्रोध॥ ६३॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा। कही सुनी जिन्ह संकर निंदा॥
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ। भली भाँति पछिताब पिताहूँ॥
संत संभु श्रीपति अपबादा। सुनि जहाँ तहँ असि मरजादा॥
काटि तासु जीभ जो बसा। श्रवन मूदि न त चलि परा॥
जगदातमा महेसु पुरारी। जगत जनक सब के हितकारी॥
पिता मंदमति निंदत तेही। दच्छ सुक्र संभव यह देही॥
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू॥
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। भयउ सकल मख हाहाकारा॥

दो. सती मरनु सुनि संभु गन लगे करन मख खीस।
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस॥ ६४॥

समाचार सब संकर पा। बीरभद्रु करि कोप पठा॥
जग्य बिधंस जा तिन्ह कीन्हा। सकल सुरन्ह बिधिवत फलु दीन्हा॥
भे जगबिदित दच्छ गति सो। जसि कछु संभु बिमुख कै हो॥
यह इतिहास सकल जग जानी। ताते मैं संछेप बखानी॥

सतीं मरत हरि सन बरु मागा। जनम जनम सिव पद अनुरागा॥
तेहि कारन हिमगिरि गृह जा। जनमीं पारबती तनु पा॥
जब तें उमा सैल गृह जां। सकल सिद्धि संपति तहँ छा॥
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे। उचित बास हिम भूधर दीन्हे॥

दो. सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति।

प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति॥ ६५॥

सरिता सब पुनित जलु बहहीं। खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं॥
सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा। गिरि पर सकल करहिं अनुरागा॥
सोह सैल गिरिजा गृह आँ। जिमि जनु रामभगति के पाँ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू। ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू॥
नारद समाचार सब पा। कौतुकहीं गिरि गेह सिधा॥
सैलराज बड़ आदर कीन्हा। पद पखारि बर आसनु दीन्हा॥
नारि सहित मुनि पद सिरु नावा। चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा॥
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना। सुता बोलि मेली मुनि चरना॥

दो. त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि॥

कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदयँ बिचारि ॥ ६६ ॥

कह मुनि बिहसि गूढ़ मृदु बानी । सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ॥
सुंदर सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥
सब लच्छन संपन्न कुमारी । होहि संतत पियहि पिआरी ॥
सदा अचल एहि कर अहिवाता । एहि तें जसु पैहहिं पितु माता ॥
होहि पूज्य सकल जग माहीं । एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
एहि कर नामु सुमिरि संसारा । त्रिय चढ़हहिँ पतिब्रत असिधारा ॥
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुन दु चारी ॥
अगुन अमान मातु पितु हीना । उदासीन सब संसय छीना ॥

दो. जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष ॥
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख ॥ ६७ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी । दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥
नारदहुँ यह भेदु न जाना । दसा एक समुझब बिलगाना ॥
सकल सखीं गिरिजा गिरि मैना । पुलक सरीर भरे जल नैना ॥
हो न मृषा देवरिषि भाषा । उमा सो बचनु हृदयँ धरि राखा ॥
उपजे सिव पद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन भा संदेहू ॥

जानि कुवसरु प्रीति दुरा। सखी उछँग बैठी पुनि जा॥
झूठि न हो देवरिषि बानी। सोचहि दंपति सखीं सयानी॥
उर धरि धीर कहइ गिरिरा। कहहु नाथ का करि उपा॥

दो. कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार।
देव दनुज नर नाग मुनि को न मेटनिहार॥ ६८॥

तदपि एक मैं कहउँ उपा। हो करै जौं दै सहा॥
जस बरु मैं बरनैं तुम्ह पाहीं। मिलहि उमहि तस संसय नाहीं॥
जे जे बर के दोष बखाने। ते सब सिव पहि मैं अनुमाने॥
जौं बिबाहु संकर सन हो। दोषउ गुन सम कह सबु को॥
जौं अहि सेज सयन हरि करहीं। बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं॥
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं। तिन्ह कहँ मंद कहत को नाहीं॥
सुभ अरु असुभ सलिल सब बह। सुरसरि को अपुनीत न कह॥
समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसा। रबि पावक सुरसरि की ना॥

दो. जौं अस हिसिषा करहिं नर जड़ि बिबेक अभिमान।
परहिं कलप भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान॥ ६९॥

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना। कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना॥
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें। ईस अनीसहि अंतरु तैसें॥
संभु सहज समरथ भगवाना। एहि बिबाहँ सब बिधि कल्याना॥
दुराराध्य पै अहहिं महेसू। आसुतोष पुनि किँ कलेसू॥
जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी। भावि मेटि सकहिं त्रिपुरारी॥
जद्यपि बर अनेक जग माहीं। एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं॥
बर दायक प्रनतारति भंजन। कृपासिंधु सेवक मन रंजन॥
इच्छित फल बिनु सिव अवराधे। लहि न कोटि जोग जप साधें॥

दो. अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस।
होहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस॥ ७०॥

कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गय। आगिल चरित सुनहु जस भय॥
पतिहि एकांत पा कह मैना। नाथ न मैं समुझे मुनि बैना॥
जौं घरु बरु कुलु हो अनूपा। करि बिबाहु सुता अनुरुपा॥
न त कन्या बरु रहउ कुआरी। कंत उमा मम प्रानपिआरी॥
जौं न मिलहि बरु गिरिजहि जोगू। गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू॥
सो बिचारि पति करेहु बिबाहू। जेहिं न बहोरि हो उर दाहू॥
अस कहि परि चरन धरि सीसा। बोले सहित सनेह गिरीसा॥

बरु पावक प्रगटै ससि माहीं। नारद बचनु अन्यथा नाहीं॥

दो. प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहि निरमयउ जेहिं सो करिहि कल्यान॥ ७१॥

अब जौ तुम्हहि सुता पर नेहू। तौ अस जा सिखावन देहू॥
करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेसू। आन उपायँ न मिटहि कलेसू॥
नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू॥
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका। सबहि भाँति संकरु अकलंका॥
सुनि पति बचन हरषि मन माहीं। ग तुरत उठि गिरिजा पाहीं॥
उमहि बिलोकि नयन भरे बारी। सहित सनेह गोद बैठारी॥
बारहिं बार लेति उर ला। गदगद कंठ न कछु कहि जा॥
जगत मातु सर्बग्य भवानी। मातु सुखद बोलीं मृदु बानी॥

दो. सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहि।
सुंदर गौर सुबिप्रबर अस उपदेसे मोहि॥ ७२॥

करहि जा तपु सैलकुमारी। नारद कहा सो सत्य बिचारी॥
मातु पितहि पुनि यह मत भावा। तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा॥

तपबल रचइ प्रपंच बिधाता। तपबल बिष्नु सकल जग त्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा। तपबल सेषु धरइ महिभारा॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी। करहि जा तपु अस जियँ जानी॥
सुनत बचन बिसमित महतारी। सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी॥
मातु पितुहि बहुबिधि समुझा। चलीं उमा तप हित हरषा॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता। भ बिकल मुख आव न बाता॥

दो. बेदसिरा मुनि आ तब सबहि कहा समुझा॥
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पा॥ ७३॥

उर धरि उमा प्रानपति चरना। जा बिपिन लागीं तपु करना॥
अति सुकुमार न तनु तप जोगू। पति पद सुमिरि तजे सबु भोगू॥
नित नव चरन उपज अनुरागा। बिसरी देह तपहिं मनु लागा॥
संबत सहस मूल फल खा। सागु खा सत बरष गवाँए॥
कछु दिन भोजनु बारि बतासा। कि कठिन कछु दिन उपबासा॥
बेल पाती महि परइ सुखा। तीनि सहस संबत सो खा॥
पुनि परिहरे सुखाने परना। उमहि नाम तब भयउ अपरना॥
देखि उमहि तप खीन सरीरा। ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा॥

दो. भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिजाकुमारि।
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि॥ ७४॥

अस तपु काहुँ न कीन्ह भवानी। भउ अनेक धीर मुनि ग्यानी॥
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी। सत्य सदा संतत सुचि जानी॥
आवै पिता बोलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जाहु तबहीं॥
मिलहिं तुम्हहि जब सप्त रिषीसा। जानेहु तब प्रमान बागीसा॥
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी। पुलक गात गिरिजा हरषानी॥
उमा चरित सुंदर मैं गावा। सुनहु संभु कर चरित सुहावा॥
जब तें सती जा तनु त्यागा। तब सें सिव मन भयउ बिरागा॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा॥

दो. चिदानन्द सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम।
बिचरहिं महि धरि हृदयँ हरि सकल लोक अभिराम॥ ७५॥

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना। कतहुँ राम गुन करहिं बखाना॥
जदपि अकाम तदपि भगवाना। भगत बिरह दुख दुखित सुजाना॥
एहि बिधि गयउ कालु बहु बीती। नित नै हो राम पद प्रीती॥
नैमु प्रेमु संकर कर देखा। अबिचल हृदयँ भगति कै रेखा॥

प्रगटै रामु कृतग्य कृपाला। रूप सील निधि तेज बिसाला॥
बहु प्रकार संकरहि सराहा। तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा॥
बहुबिधि राम सिवहि समुझावा। पारबती कर जन्मु सुनावा॥
अति पुनीत गिरिजा कै करनी। बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी॥

दो. अब बिनती मम सुनेहु सिव जौं मो पर निज नेहु।
जा बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मागें देहु॥ ७६॥

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं। नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं॥
सिर धरि आयसु करि तुम्हारा। परम धरमु यह नाथ हमारा॥
मातु पिता गुर प्रभु कै बानी। बिनहिं बिचार करि सुभ जानी॥
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी। अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी॥
प्रभु तोषे सुनि संकर बचना। भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना॥
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहे। अब उर राखेहु जो हम कहे॥
अंतरधान भ अस भाषी। संकर सो मूरति उर राखी॥
तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आ। बोले प्रभु अति बचन सुहा॥

दो. पारबती पहिं जा तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठहु भवन दूरि करेहु संदेहु॥ ७७॥

रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी। मूरतिमंत तपस्या जैसी॥
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी। करहु कवन कारन तपु भारी॥
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू। हम सन सत्य मरमु किन कहहू॥
कहत बचत मनु अति सकुचा। हँसिहहु सुनि हमारि जड़ता॥
मनु हठ परा न सुनइ सिखावा। चहत बारि पर भीति उठावा॥
नारद कहा सत्य सो जाना। बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना॥
देखहु मुनि अबिबेकु हमारा। चाहि सदा सिवहि भरतारा॥

दो. सुनत बचन बिहसे रिषय गिरिसंभव तब देह।
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसे किसु गेह॥ ७८॥

दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जा। तिन्ह फिरि भवनु न देखा आ॥
चित्रकेतु कर घरु उन घाला। कनककसिपु कर पुनि अस हाला॥
नारद सिख जे सुनहिं नर नारी। अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी॥
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा। आपु सरिस सबही चह कीन्हा॥
तेहि कें बचन मानि बिस्वासा। तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा॥
निर्गुन निलज कुबेष कपाली। अकुल अगेह दिगंबर ब्याली॥
कहहु कवन सुखु अस बरु पाँ। भल भूलिहु ठग के बौराँ॥

पंच कहें सिवँ सती बिबाही। पुनि अवडेरि मरान्हि ताही॥

दो. अब सुख सोवत सोचु नहि भीख मागि भव खाहिं।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं॥ ७९॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा। हम तुम्ह कहुँ बरु नीक बिचारा॥
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला। गावहिं बेद जासु जस लीला॥
दूषन रहित सकल गुन रासी। श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी॥
अस बरु तुम्हहि मिलाब आनी। सुनत बिहसि कह बचन भवानी॥
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा। हठ न छूट छूटै बरु देहा॥
कनकउ पुनि पषान तें हो। जारेहुँ सहजु न परिहर सो॥
नारद बचन न मैं परिहरँ। बसउ भवनु उजरउ नहिं डरँ॥
गुर कें बचन प्रतीति न जेही। सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही॥

दो. महादेव अवगुन भवन बिष्नु सकल गुन धाम।
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम॥ ८०॥

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा। सुनतिं सिख तुम्हारि धरि सीसा॥
अब मैं जन्मु संभु हित हारा। को गुन दूषन करै बिचारा॥

जौं तुम्हरे हठ हृदयँ बिसेषी। रहि न जा बिनु किँ बरेषी॥
तौ कौतुकिन्ह आलसु नाहीं। बर कन्या अनेक जग माहीं॥
जन्म कोटि लगि रगर हमारी। बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी॥
तजउँ न नारद कर उपदेसू। आपु कहहि सत बार महेसू॥
मैं पा परउँ कहइ जगदंबा। तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा॥
देखि प्रेमु बोले मुनि ग्यानी। जय जय जगदंबिके भवानी॥

दो. तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु।
ना चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गातु॥ ८१॥

जा मुनिन्ह हिमवंतु पठा। करि बिनती गिरजहिं गृह ल्या॥
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जा। कथा उमा कै सकल सुना॥
भ मगन सिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तरिषि गवने गेहा॥
मनु थिर करि तब संभु सुजाना। लगे करन रघुनायक ध्याना॥
तारकु असुर भयउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिसाला॥
तेंहि सब लोक लोकपति जीते। भ देव सुख संपति रीते॥
अजर अमर सो जीति न जा। हारे सुर करि बिबिध लरा॥
तब बिरंचि सन जा पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे॥

दो. सब सन कहा बुझा बिधि दनुज निधन तब हो।
संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतइ रन सो॥ ८२॥

मोर कहा सुनि करहु उपा। होहि ईस्वर करिहि सहा॥
सतीं जो तजी दच्छ मख देहा। जनमी जा हिमाचल गेहा॥
तेहिं तपु कीन्ह संभु पति लागी। सिव समाधि बैठे सबु त्यागी॥
जदपि अहइ असमंजस भारी। तदपि बात एक सुनहु हमारी॥
पठवहु कामु जा सिव पाहीं। करै छोभु संकर मन माहीं॥
तब हम जा सिवहि सिर ना। करवाब बिबाहु बरिआ॥
एहि बिधि भलेहि देवहित हो। मर अति नीक कहइ सबु को॥
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू। प्रगटे बिषमबान झषकेतू॥

दो. सुरन्ह कहीं निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभु बिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहे अस मार॥ ८३॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा॥
पर हित लागि तजइ जो देही। संतत संत प्रसंसहिं तेही॥
अस कहि चले सबहि सिरु ना। सुमन धनुष कर सहित सहा॥
चलत मार अस हृदयँ बिचारा। सिव बिरोध ध्रुव मरनु हमारा॥

तब आपन प्रभा बिस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा॥
कोपे जबहि बारिचरकेतू। छन महुँ मिटे सकल श्रुति सेतू॥
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना। धीरज धरम ग्यान बिग्याना॥
सदाचार जप जोग बिरागा। सभय बिबेक कटकु सब भागा॥

छं. भागे बिबेक सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्बत कंदरन्हि महुँ जा तेहि अवसर दुरे॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा।
दु माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा॥

दो. जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भ सकल बस काम॥ ८४॥

सब के हृदयँ मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिं तरु साखा॥
नदीं उमगि अंबुधि कहुँ धा। संगम करहिं तलाव तला॥
जहँ असि दसा जड़न्ह कै बरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी॥
पसु पच्छी नभ जल थलचारी। भ कामबस समय बिसारी॥
मदन अंध ब्याकुल सब लोका। निसि दिनु नहिं अवलोकहिं कोका॥
देव दनुज नर किंनर ब्याला। प्रेत पिसाच भूत बेताला॥

इन्ह कै दसा न कहैं बखानी। सदा काम के चेरे जानी॥
सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी। तेपि कामबस भ बियोगी॥

छं. भ कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं।
दु दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं॥

सो. धरी न काहूँ धिर सबके मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महुँ॥ ८५॥

उभय घरी अस कौतुक भय। जौ लगि कामु संभु पहिं गय॥
सिवहि बिलोकि ससंके मारू। भयउ जथाथिति सबु संसारू॥
भ तुरत सब जीव सुखारे। जिमि मद उतरि गँ मतवारे॥
रुद्रहि देखि मदन भय माना। दुराधरष दुर्गम भगवाना॥
फिरत लाज कछु करि नहिं जा। मरनु ठानि मन रचेसि उपा॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा। कुसुमित नव तरु राजि बिराजा॥
बन उपबन बापिका तड़ागा। परम सुभग सब दिसा बिभागा॥
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा। देखि मुहुँ मन मनसिज जागा॥

छं. जागइ मनोभव मुहुँ मन बन सुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा॥

दो. सकल कला करि कोटि बिधि हारे सेन समेत।
चली न अचल समाधि सिव कोपे हृदयनिकेत॥ ८६॥

देखि रसाल बिटप बर साखा। तेहि पर चढ़े मदनु मन माखा॥
सुमन चाप निज सर संधाने। अति रिस ताकि श्रवन लगि ताने॥
छाड़े बिषम बिसिख उर लागे। छुटि समाधि संभु तब जागे॥
भयउ ईस मन छोभु बिसेषी। नयन उघारि सकल दिसि देखी॥
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका। भयउ कोपु कंपे त्रैलोका॥
तब सिवँ तीसर नयन उघारा। चितवत कामु भयउ जरि छारा॥
हाहाकार भयउ जग भारी। डरपे सुर भ असुर सुखारी॥
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी। भ अकंटक साधक जोगी॥

छं. जोगि अकंटक भ पति गति सुनत रति मुरुछित भ।

रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं ग।
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सन्मुख रही।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही॥

दो. अब तें रति तव नाथ कर होहि नामु अनंगु।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु॥ ८७॥

जब जदुबंस कृष्न अवतारा। होहि हरन महा महिभारा॥
कृष्न तनय होहि पति तोरा। बचनु अन्यथा हो न मोरा॥
रति गवनी सुनि संकर बानी। कथा अपर अब कहउँ बखानी॥
देवन्ह समाचार सब पा। ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधा॥
सब सुर बिष्नु बिरंचि समेता। ग जहाँ सिव कृपानिकेता॥
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा। भ प्रसन्न चंद्र अवतंसा॥
बोले कृपासिंधु बृषकेतू। कहहु अमर आ केहि हेतू॥
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी। तदपि भगति बस बिनवउँ स्वामी॥

दो. सकल सुरन्ह के हृदयँ अस संकर परम उछाहु।
निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु॥ ८८॥

यह उत्सव देखि भरि लोचन। सो कछु करहु मदन मद मोचन।
कामु जारि रति कहुँ बरु दीन्हा। कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा॥
सासति करि पुनि करहिं पसा। नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभा॥
पारबतीं तपु कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा॥
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी। ऐसे हो कहा सुखु मानी॥
तब देवन्ह दुंदुभीं बजां। बरषि सुमन जय जय सुर सा॥
अवसरु जानि सप्तरिषि आ। तुरतहिं बिधि गिरिभवन पठा॥
प्रथम ग जहँ रही भवानी। बोले मधुर बचन छल सानी॥

दो. कहा हमार न सुनेहु तब नारद कें उपदेस।
अब भा झूठ तुम्हार पन जारे कामु महेस॥ ८९॥

मासपारायणतीसरा विश्राम

सुनि बोलीं मुसका भवानी। उचित कहेहु मुनिबर बिग्यानी॥
तुम्हरें जान कामु अब जारा। अब लगि संभु रहे सबिकारा॥
हमरें जान सदा सिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी॥
जौं मैं सिव सेये अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी॥
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा। करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा॥
तुम्ह जो कहा हर जारे मारा। सो अति बड़ अबिबेकु तुम्हारा॥

तात अनल कर सहज सुभा। हिम तेहि निकट जा नहिं का॥
गँ समीप सो अवसि नसा। असि मन्मथ महेस की ना॥

दो. हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास॥
चले भवानिहि ना सिर ग हिमाचल पास॥ ९०॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा। मदन दहन सुनि अति दुखु पावा॥
बहुरि कहे रति कर बरदाना। सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना॥
हृदयँ बिचारि संभु प्रभुता। सादर मुनिबर लि बोला॥
सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचा। बेगि बेदबिधि लगन धरा॥
पत्री सप्तरिषिन्ह सो दीन्ही। गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही॥
जा बिधिहि दीन्हि सो पाती। बाचत प्रीति न हृदयँ समाती॥
लगन बाचि अज सबहि सुना। हरषे मुनि सब सुर समुदा॥
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे। मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे॥

दो. लगे सँवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान।
होहि सगुन मंगल सुभद करहिं अपछरा गान॥ ९१॥

सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा॥

कुंडल कंकन पहिरे ब्याला। तन बिभूति पट केहरि छाला॥
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा॥
गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव बेष सिवधाम कृपाला॥
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। चले बसहँ चढ़ि बाजहिं बाजा॥
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं। बर लायक दुलहिनि जग नाहीं॥
बिष्नु बिरंचि आदि सुरब्राता। चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता॥
सुर समाज सब भाँति अनूपा। नहिं बरात दूलह अनुरूपा॥

दो. बिष्नु कहा अस बिहसि तब बोलि सकल दिसिराज।
बिलग बिलग हो चलहु सब निज निज सहित समाज॥ ९२॥

बर अनुहारि बरात न भा। हँसी करैहहु पर पुर जा॥
बिष्नु बचन सुनि सुर मुसकाने। निज निज सेन सहित बिलगाने॥
मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं। हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं॥
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे। भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे॥
सिव अनुसासन सुनि सब आ। प्रभु पद जलज सीस तिन्ह ना॥
नाना बाहन नाना बेषा। बिहसे सिव समाज निज देखा॥
को मुखहीन बिपुल मुख काहू। बिनु पद कर को बहु पद बाहू॥
बिपुल नयन को नयन बिहीना। रिष्टपुष्ट को अति तनखीना॥

छं. तन खीन को अति पीन पावन को अपावन गति धरें।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें॥
खर स्वान सुर सृकाल मुख गन बेष अगनित को गनै।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै॥

सो. नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि॥ ९३॥

जस दूलहु तसि बनी बराता। कौतुक बिबिध होहिं मग जाता॥
इहाँ हिमाचल रचे बिताना। अति बिचित्र नहिं जा बखाना॥
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं। लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं॥
बन सागर सब नदीं तलावा। हिमगिरि सब कहुँ नेवत पठावा॥
कामरूप सुंदर तन धारी। सहित समाज सहित बर नारी॥
ग सकल तुहिनाचल गेहा। गावहिं मंगल सहित सनेहा॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवरा। जथाजोगु तहँ तहँ सब छा॥
पुर सोभा अवलोकि सुहा। लागइ लघु बिरंचि निपुना॥

छं. लघु लाग बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही।

बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं ॥
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं ॥

दो. जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु बरनि कि जा ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिका ॥ ९४ ॥

नगर निकट बरात सुनि आ । पुर खरभरु सोभा अधिका ॥
करि बनाव सजि बाहन नाना । चले लेन सादर अगवाना ॥
हियँ हरषे सुर सेन निहारी । हरिहि देखि अति भ सुखारी ॥
सिव समाज जब देखन लागे । बिडरि चले बाहन सब भागे ॥
धरि धीरजु तहँ रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने ॥
गँ भवन पूछहिं पितु माता । कहहिं बचन भय कंपित गाता ॥
कहि काह कहि जा न बाता । जम कर धार किधौं बरिआता ॥
बरु बौराह बसहँ असवारा । ब्याल कपाल बिभूषन छारा ॥

छं. तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा ।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा ॥
जो जित रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही ।

देखिहि सो उमा बिबाहु घर घर बात असि लरिकन्ह कही ॥

दो. समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं ।
बाल बुझा बिबिध बिधि निडर होहु डरु नाहिं ॥ ९५ ॥

लै अगवान बरातहि आ । दि सबहि जनवास सुहा ॥
मैनाँ सुभ आरती सँवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चली हरहि हरषानी ॥
बिकट बेष रुद्रहि जब देखा । अबलन्ह उर भय भयउ बिसेषा ॥
भागि भवन पैठीं अति त्रासा । ग महेसु जहाँ जनवासा ॥
मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी । लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी ॥
अधिक सनेहँ गोद बैठारी । स्याम सरोज नयन भरे बारी ॥
जेहिं बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा । तेहिं जड़ बरु बार कस कीन्हा ॥

छं. कस कीन्ह बरु बौराह बिधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता द ।
जो फलु चहि सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लाग ॥
तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महुँ परौं ॥
घरु जा अपजसु हो जग जीवत बिबाहु न हौं करौं ॥

दो. भ बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलापु रोदति बदति सुता सनेहु सँभारि॥ ९६॥

नारद कर मैं काह बिगारा। भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा॥
अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा। बौरे बरहि लगि तपु कीन्हा॥
साचेहुँ उन्ह के मोह न माया। उदासीन धनु धामु न जाया॥
पर घर घालक लाज न भीरा। बाझँ कि जान प्रसव कैं पीरा॥
जननिहि बिकल बिलोकि भवानी। बोली जुत बिबेक मृदु बानी॥
अस बिचारि सोचहि मति माता। सो न टरइ जो रचइ बिधाता॥
करम लिखा जौ बार नाहू। तौ कत दोसु लगा काहू॥

तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका। मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका॥

छं. जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाब तहीं॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं॥
बहु भाँति बिधिहि लगा दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥

दो. तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत।

समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥ ९७ ॥

तब नारद सबहि समुझावा । पूरुब कथाप्रसंगु सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि । सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥
जग संभव पालन लय कारिनि । निज इच्छा लीला बपु धारिनि ॥
जनमीं प्रथम दच्छ गृह जा । नामु सती सुंदर तनु पा ॥
तहँहुँ सती संकरहि बिबाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥
एक बार आवत सिव संगा । देखे रघुकुल कमल पतंगा ॥
भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा । भ्रम बस बेषु सीय कर लीन्हा ॥

छं. सिय बेषु सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरीं ।
हर बिरहँ जा बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया ।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया ॥

दो. सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद ।
छन महुँ ब्यापे सकल पुर घर घर यह संबाद ॥ ९८ ॥

तब मयना हिमवंतु अनंदे। पुनि पुनि पारबती पद बंदे॥
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने। नगर लोग सब अति हरषाने॥
लगे होन पुर मंगलगाना। सजे सबहि हाटक घट नाना॥
भाँति अनेक भ जेवराना। सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा॥
सो जेवनार कि जा बखानी। बसहिं भवन जेहिं मातु भवानी॥
सादर बोले सकल बराती। बिष्नु बिरंचि देव सब जाती॥
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा। लागे परुसन निपुन सुआरा॥
नारिबृंद सुर जेवँत जानी। लगीं देन गारीं मृदु बानी॥

छं. गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि बिंग्य बचन सुनावहीं।
भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु बिनोदु सुनि सचु पावहीं॥
जेवँत जो बढ़्यो अनंदु सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो।
अचवाँइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो॥

दो. बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ लगन सुना आ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठ देव बोला॥ ९९॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहि जथोचित आसन दीन्हे॥
बेदी बेद बिधान सँवारी। सुभग सुमंगल गावहिं नारी॥

सिंघासनु अति दिब्य सुहावा। जा न बरनि बिरंचि बनावा॥
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु ना। हृदयँ सुमिरि निज प्रभु रघुरा॥
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोला। करि सिंगारु सखीं लै आ॥
देखत रूपु सकल सुर मोहे। बरनै छबि अस जग कबि को है॥
जगदंबिका जानि भव भामा। सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा॥
सुंदरता मरजाद भवानी। जा न कोटिहुँ बदन बखानी॥

छं. कोटिहुँ बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा॥
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ॥
अवलोकि सकहिं न सकुच पति पद कमल मनु मधुकरु तहाँ॥

दो. मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजे संभु भवानि।
को सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियँ जानि॥ १००॥

जसि बिबाह कै बिधि श्रुति गा। महामुनिन्ह सो सब करवा॥
गहि गिरीस कुस कन्या पानी। भवहि समरपीं जानि भवानी॥
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा। हिंयँ हरषे तब सकल सुरेसा॥

बेद मंत्र मुनिबर उच्चरहीं। जय जय जय संकर सुर करहीं॥
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना। सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना॥
हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू। सकल भुवन भरि रहा उछाहू॥
दासीं दास तुरग रथ नागा। धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा॥
अन्न कनकभाजन भरि जाना। दाज दीन्ह न जा बखाना॥

छं. दाज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो।
का दैं पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रह्यो॥
सिवँ कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहिं कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ प्रेम परिपूरन हियो॥

दो. नाथ उमा मन प्रान सम गृहकिंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब हो प्रसन्न बरु देहु॥ १०१॥

बहु बिधि संभु सास समुझा। गवनी भवन चरन सिरु ना॥
जननीं उमा बोलि तब लीन्ही। लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही॥
करेहु सदा संकर पद पूजा। नारिधरमु पति दे न दूजा॥
बचन कहत भरे लोचन बारी। बहुरि ला उर लीन्हि कुमारी॥
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं॥

भै अति प्रेम बिकल महतारी। धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी॥
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना। परम प्रेम कछु जा न बरना॥
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी। जा जननि उर पुनि लपटानी॥

छं. जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहूँ दं।
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखीं लै सिव पहिं ग॥
जाचक सकल संतोषि संकरु उमा सहित भवन चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले॥

दो. चले संग हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु।
बिबिध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्ह बृषकेतु॥ १०२॥

तुरत भवन आ गिरिरा। सकल सैल सर लि बोला॥
आदर दान बिनय बहुमाना। सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना॥
जबहिं संभु कैलासहिं आ। सुर सब निज निज लोक सिधा॥
जगत मातु पितु संभु भवानी। तेही सिंगारु न कहउँ बखानी॥
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा। गनन्ह समेत बसहिं कैलासा॥
हर गिरिजा बिहार नित नय। एहि बिधि बिपुल काल चलि गय॥
तब जनमे षटबदन कुमारा। तारकु असुर समर जेहिं मारा॥

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। षन्मुख जन्मु सकल जग जाना॥

छं. जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा।
तेहि हेतु मैं बृषकेतु सुत कर चरित संछेपहिं कहा॥
यह उमा संगु बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्बदा सुखु पावहीं॥

दो. चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु॥ १०३॥

संभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा॥
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी॥
प्रेम बिबस मुख आव न बानी। दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी॥
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा। तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा॥
सिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं। रामहि ते सपनेहुँ न सोहाहीं॥
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू। राम भगत कर लच्छन एहू॥
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी। बिनु अघ तजी सती असि नारी॥
पनु करि रघुपति भगति देखा। को सिव सम रामहि प्रिय भा॥

दो. प्रथमहिं मै कहि सिव चरित बूझा मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार॥ १०४॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला। कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला॥
सुनु मुनि आजु समागम तोरें। कहि न जा जस सुखु मन मोरें॥
राम चरित अति अमित मुनिसा। कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा॥
तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी॥
सारद दारुनारि सम स्वामी। रामु सूत्रधर अंतरजामी॥
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी॥
प्रनवउँ सो कृपाल रघुनाथा। बरनउँ बिसद तासु गुन गाथा॥
परम रम्य गिरिबरु कैलासू। सदा जहाँ सिव उमा निवासू॥

दो. सिद्ध तपोधन जोगिजन सूर किंनर मुनिबृंद।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिब सुखकंद॥ १०५॥

हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं। ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं॥
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला। नित नूतन सुंदर सब काला॥
त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया। सिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया॥
एक बार तेहि तर प्रभु गय। तरु बिलोकि उर अति सुखु भय॥

निज कर डासि नागरिपु छाला। बैठै सहजहिं संभु कृपाला॥
कुंद इंदु दर गौर सरीरा। भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा॥
तरुन अरुन अंबुज सम चरना। नख दुति भगत हृदय तम हरना॥
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी। आननु सरद चंद छबि हारी॥

दो. जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल।
नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालबिधु भाल॥ १०६॥

बैठे सोह कामरिपु कैसें। धरें सरीरु सांतरसु जैसें॥
पारबती भल अवसरु जानी। ग संभु पहिं मातु भवानी॥
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा। बाम भाग आसनु हर दीन्हा॥
बैठीं सिव समीप हरषा। पूरुब जन्म कथा चित आ॥
पति हियँ हेतु अधिक अनुमानी। बिहसि उमा बोलीं प्रिय बानी॥
कथा जो सकल लोक हितकारी। सो पूछन चह सैलकुमारी॥
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी। त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी॥
चर अरु अचर नाग नर देवा। सकल करहिं पद पंकज सेवा॥

दो. प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम॥
जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम॥ १०७॥

जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी। जानि सत्य मोहि निज दासी॥
तौं प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना॥
जासु भवनु सुरतरु तर होा। सहि कि दरिद्र जनित दुखु सो॥
ससिभूषन अस हृदयँ बिचारी। हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी॥
प्रभु जे मुनि परमारथबादी। कहहिं राम कहुँ ब्रह्म अनादी॥
सेस सारदा बेद पुराना। सकल करहिं रघुपति गुन गाना॥
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती। सादर जपहु अनँग आराती॥
रामु सो अवध नृपति सुत सो। की अज अगुन अलखगति को॥

दो. जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति भोरि।
देख चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि॥ १०८॥

जौं अनीह ब्यापक बिभु को। कबहु बुझा नाथ मोहि सो॥
अग्य जानि रिस उर जनि धरहू। जेहि बिधि मोह मिटै सो करहू॥
मै बन दीखि राम प्रभुता। अति भय बिकल न तुम्हहि सुना॥
तदपि मलिन मन बोधु न आवा। सो फलु भली भाँति हम पावा॥
अजहूँ कछु संसउ मन मोरे। करहु कृपा बिनवउँ कर जोरें॥
प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा। नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा॥

तब कर अस बिमोह अब नाहीं। रामकथा पर रुचि मन माहीं॥
कहहु पुनीत राम गुन गाथा। भुजगराज भूषन सुरनाथा॥

दो. बंदउ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि।
बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि॥ १०९॥

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी। दासी मन क्रम बचन तुम्हारी॥
गूढ़उ तत्व न साधु दुरावहिं। आरत अधिकारी जहँ पावहिं॥
अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया॥
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी॥
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बालचरित पुनि कहहु उदारा॥
कहहु जथा जानकी बिबाहीं। राज तजा सो दूषन काहीं॥
बन बसि कीन्हे चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावन मारा॥
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला। सकल कहहु संकर सुखलीला॥

दो. बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम॥ ११०॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहिं बिग्यान मगन मुनि ग्यानी॥

भगति ग्यान बिग्यान बिरागा। पुनि सब बरनहु सहित बिभागा॥
औरउ राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति बिमल बिबेका॥
जो प्रभु मैं पूछा नहि हो। सो दयाल राखहु जनि गो॥
तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना। आन जीव पाँवर का जाना॥
प्रस्न उमा कै सहज सुहा। छल बिहीन सुनि सिव मन भा॥
हर हियँ रामचरित सब आ। प्रेम पुलक लोचन जल छा॥
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा। परमानंद अमित सुख पावा॥

दो. मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहेर कीन्ह।
रघुपति चरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह॥ १११॥

झूठे सत्य जाहि बिनु जानें। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें॥
जेहि जानें जग जा हेरा। जागें जथा सपन भ्रम जा॥
बंदउँ बालरूप सो रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू॥
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी॥
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी। तुम्ह समान नहिं को उपकारी॥
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा॥
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी। कीन्हहु प्रस्न जगत हित लागी॥

दो. रामकृपा तें पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं॥ ११२॥

तदपि असंका कीन्हिहु सो। कहत सुनत सब कर हित हो॥
जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना। श्रवन रंध्र अहिभवन समाना॥
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा। लोचन मोरपंख कर लेखा॥
ते सिर कटु तुंबरि समतूला। जे न नमत हरि गुर पद मूला॥
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी। जीवत सव समान ते प्रानी॥
जो नहिं करइ राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना॥
कुलिस कठोर निठुर सो छाती। सुनि हरिचरित न जो हरषाती॥
गिरिजा सुनहु राम कै लीला। सुर हित दनुज बिमोहनसीला॥

दो. रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि।
सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि॥ ११३॥

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उडावनिहारी॥
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी॥
राम नाम गुन चरित सुहा। जनम करम अगनित श्रुति गा॥

जथा अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुन नाना॥
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी॥
उमा प्रस्न तव सहज सुहा। सुखद संतसंमत मोहि भा॥
एक बात नहि मोहि सोहानी। जदपि मोह बस कहेहु भवानी॥
तुम जो कहा राम को आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना॥

दो. कहहि सुनहि अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच।
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच॥ ११४॥

अग्य अकोबिद अंध अभागी। का बिषय मुकर मन लागी॥
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी। सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी॥
कहहिं ते बेद असंमत बानी। जिन्ह कें सूझ लाभु नहिं हानी॥
मुकर मलिन अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना॥
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं कल्पित बचन अनेका॥
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं॥
बातुल भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे॥
जिन्ह कृत महामोह मद पाना। तिन् कर कहा करि नहिं काना॥

सो. अस निज हृदयँ बिचारि तजु संसय भजु राम पद।

सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम ॥ ११५ ॥

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥
अगुन अरुप अलख अज जो । भगत प्रेम बस सगुन सो हो ॥
जो गुन रहित सगुन सो कैसें । जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तेहि किमि कहि बिमोह प्रसंगा ॥
राम सच्चिदानंद दिनेसा । नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥
सहज प्रकासरुप भगवाना । नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना ॥
हरष बिषाद ग्यान अग्याना । जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना । परमानन्द परेस पुराना ॥

दो. पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ ॥
रघुकुलमनि मम स्वामि सो कहि सिवँ नायउ माथ ॥ ११६ ॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी ॥
जथा गगन घन पटल निहारी । झाँपे मानु कहहिं कुबिचारी ॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाँ । प्रगट जुगल ससि तेहि के भाँ ॥
उमा राम बिषइक अस मोहा । नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
बिषय करन सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ॥

सब कर परम प्रकासक जो। राम अनादि अवधपति सो॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू॥
जासु सत्यता तें जड माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥

दो. रजत सीप महुँ मास जिमि जथा भानु कर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सो भ्रम न सकइ को टारि॥ ११७॥

एहि बिधि जग हरि आश्रित रह। जदपि असत्य देत दुख अह॥
जौं सपनें सिर काटै को। बिनु जागें न दूरि दुख हो॥
जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जा। गिरिजा सो कृपाल रघुरा॥
आदि अंत को जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा॥
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जा नहिं बरनी॥

दो. जेहि इमि गावहि बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान॥
सो दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥ ११८॥

कासीं मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करउँ बिसोकी॥
सो प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुबर सब उर अंतरजामी॥
बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं॥
राम सो परमातमा भवानी। तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी॥
अस संसय आनत उर माहीं। ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं॥
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना। मिटि गै सब कुतरक कै रचना॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुन असंभावना बीती॥

दो. पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि।
बोली गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि॥ ११९॥

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी। मिटा मोह सरदातप भारी॥
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरे। राम स्वरुप जानि मोहि परे॥
नाथ कृपाँ अब गयउ बिषादा। सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा॥
अब मोहि आपनि किंकरि जानी। जदपि सहज जड नारि अयानी॥
प्रथम जो मैं पूछा सो कहहू। जौं मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू॥
राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी। सर्ब रहित सब उर पुर बासी॥
नाथ धरे नरतनु केहि हेतू। मोहि समुझा कहहु बृषकेतू॥

उमा बचन सुनि परम बिनीता। रामकथा पर प्रीति पुनीता॥

दो. हिँयँ हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान॥ १२०क॥

नवान्हपारायनपहला विश्राम
मासपारायण चौथा विश्राम

सो. सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहग नायक गरुड॥ १२०ख॥

सो संबाद उदार जेहि बिधि भा आगें कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ॥ १२०ग॥

हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित।
मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु॥ १२०घ॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहा। बिपुल बिसद निगमागम गा॥
हरि अवतार हेतु जेहि हो। इदमित्थं कहि जा न सो॥

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहि सयानी॥
तदपि संत मुनि बेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना॥
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही। समुझि परइ जस कारन मोही॥
जब जब हो धरम कै हानी। बाढहिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जा नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा॥

दो. असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु॥ १२१॥

सो जस गा भगत भव तरहीं। कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं॥
राम जनम के हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तें एका॥
जनम एक दु कहउँ बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी॥
द्वारपाल हरि के प्रिय दो। जय अरु बिजय जान सब को॥
बिप्र श्राप तें दूनउ भा। तामस असुर देह तिन्ह पा॥
कनककसिपु अरु हाटक लोचन। जगत बिदित सुरपति मद मोचन॥
बिज समर बीर बिख्याता। धरि बराह बपु एक निपाता॥
हो नरहरि दूसर पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा॥

दो. भ निसाचर जा ते महाबीर बलवान।
कुंभकरन रावण सुभट सुर बिज जग जान॥ १२२।

मुकुत न भ हते भगवाना। तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना॥
एक बार तिन्ह के हित लागी। धरे सरीर भगत अनुरागी॥
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता। दसरथ कौसल्या बिख्याता॥
एक कलप एहि बिधि अवतारा। चरित्र पवित्र कि संसारा॥
एक कलप सुर देखि दुखारे। समर जलंधर सन सब हारे॥
संभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरइ न मारा॥
परम सती असुराधिप नारी। तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी॥

दो. छल करि टारे तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह॥
जब तेहि जाने मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह॥ १२३॥

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना॥
तहाँ जलंधर रावन भय। रन हति राम परम पद दय॥
एक जनम कर कारन एहा। जेहि लागि राम धरी नरदेहा॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी॥
नारद श्राप दीन्ह एक बारा। कलप एक तेहि लगि अवतारा॥

गिरिजा चकित भ सुनि बानी। नारद बिष्नुभगत पुनि ग्यानि॥
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा॥
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी। मुनि मन मोह आचरज भारी॥

दो. बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न को।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन हो॥ १२४क॥

सो. कहउँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु।
भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद॥ १२४ख॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि। बह समीप सुरसरी सुहावनि॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देवरिषि मन अति भावा॥
निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा। भयउ रमापति पद अनुरागा॥
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी॥
मुनि गति देखि सुरेस डेराना। कामहि बोलि कीन्ह समाना॥
सहित सहाय जाहु मम हेतू। चके हरषि हियँ जलचरकेतू॥
सुनासीर मन महुँ असि त्रासा। चहत देवरिषि मम पुर बासा॥
जे कामी लोलुप जग माहीं। कुटिल काक इव सबहि डेराहीं॥

दो. सुख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।
छीनि ले जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज॥ १२५॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गय। निज मायाँ बसंत निरमय॥
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा। कूजहिं कोकिल गुंजहि भृंगा॥
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी। काम कृसानु बढ़ावनिहारी॥
रंभादिक सुरनारि नबीना। सकल असमसर कला प्रबीना॥
करहिं गान बहु तान तरंगा। बहुबिधि क्रीड़हि पानि पतंगा॥
देखि सहाय मदन हरषाना। कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना॥
काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी। निज भयँ डरे मनोभव पापी॥
सीम कि चाँपि सकइ को तासु। बड़ रखवार रमापति जासू॥

दो. सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन।
गहेसि जा मुनि चरन तब कहि सुठि आरत बैन॥ १२६॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय बचन काम परितोषा॥
ना चरन सिरु आयसु पा। गयउ मदन तब सहित सहा॥
मुनि सुसीलता आपनि करनी। सुरपति सभाँ जा सब बरनी॥
सुनि सब कें मन अचरजु आवा। मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा॥

तब नारद गवने सिव पाहीं। जिता काम अहमिति मन माहीं॥
मार चरित संकरहिं सुना। अतिप्रिय जानि महेस सिखा॥
बार बार बिनवउँ मुनि तोहीं। जिमि यह कथा सुनायहु मोहीं॥
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ। चलेहुँ प्रसंग दुराडु तबहूँ॥

दो. संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सोहान।
भारद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥ १२७॥

राम कीन्ह चाहहिं सो हो। करै अन्यथा अस नहिं को॥
संभु बचन मुनि मन नहिं भा। तब बिरंचि के लोक सिधा॥
एक बार करतल बर बीना। गावत हरि गुन गान प्रबीना॥
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा। जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा॥
हरषि मिले उठि रमानिकेता। बैठे आसन रिषिहि समेता॥
बोले बिहसि चराचर राया। बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया॥
काम चरित नारद सब भाषे। जद्यपि प्रथम बरजि सिवँ राखे॥
अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया॥

दो. रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान।
तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं मोह मार मद मान॥ १२८॥

सुनु मुनि मोह हो मन ताकें। ग्यान बिराग हृदय नहिं जाके॥
ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा। तुम्हहि कि करइ मनोभव पीरा॥
नारद कहे सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना॥
करुनानिधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरे गरब तरु भारी॥
बेगि सो मै डारिहउँ उखारी। पन हमार सेवक हितकारी॥
मुनि कर हित मम कौतुक हो। अवसि उपाय करबि मै सो॥
तब नारद हरि पद सिर ना। चले हृदयँ अहमिति अधिका॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी॥

दो. बिरचे मग महुँ नगर तेहिं सत जोजन बिस्तार।
श्रीनिवासपुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार॥ १२९॥

बसहिं नगर सुंदर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनुधारी॥
तेहिं पुर बसइ सीलनिधि राजा। अगनित हय गय सेन समाजा॥
सत सुरेस सम बिभव बिलासा। रूप तेज बल नीति निवासा॥
बिस्वमोहनी तासु कुमारी। श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी॥
सो हरिमाया सब गुन खानी। सोभा तासु कि जा बखानी॥
करइ स्वयंबर सो नृपबाला। आ तहँ अगनित महिपाला॥

मुनि कौतुकी नगर तेहिं गय। पुरबासिन्ह सब पूछत भय॥
सुनि सब चरित भूपगृहँ आ। करि पूजा नृप मुनि बैठा॥

दो. आनि देखा नारदहि भूपति राजकुमारि।
कहहु नाथ गुन दोष सब एहि के हृदयँ बिचारि॥ १३०॥

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी। बड़ी बार लगि रहे निहारी॥
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने। हृदयँ हरष नहिं प्रगट बखाने॥
जो एहि बरइ अमर सो हो। समरभूमि तेहि जीत न को॥
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरइ सीलनिधि कन्या जाही॥
लच्छन सब बिचारि उर राखे। कछुक बना भूप सन भाषे॥
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं। नारद चले सोच मन माहीं॥
करौं जा सो जतन बिचारी। जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी॥
जप तप कछु न हो तेहि काला। हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला॥

दो. एहि अवसर चाहि परम सोभा रूप बिसाल।
जो बिलोकि रीझै कुँरि तब मेलै जयमाल॥ १३१॥

हरि सन मागौं सुंदरता। होहि जात गहरु अति भा॥

मोरें हित हरि सम नहिं को। एहि अवसर सहाय सो हो॥
बहुबिधि बिनय कीन्हि तेहि काला। प्रगटे प्रभु कौतुकी कृपाला॥
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने। होहि काजु हिँ हरषाने॥
अति आरति कहि कथा सुना। करहु कृपा करि होहु सहा॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भाँति नहिं पावौं ओही॥
जेहि बिधि नाथ हो हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा॥
निज माया बल देखि बिसाला। हियँ हँसि बोले दीनदयाला॥

दो. जेहि बिधि होहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार।
सो हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार॥ १३२॥

कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी। बैद न दे सुनहु मुनि जोगी॥
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठय। कहि अस अंतरहित प्रभु भय॥
माया बिबस भ मुनि मूढ़ा। समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा॥
गवने तुरत तहाँ रिषिरा। जहाँ स्वयंबर भूमि बना॥
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समाजा॥
मुनि मन हरष रूप अति मोरें। मोहि तजि आनहि बारिहि न भोरें॥
मुनि हित कारन कृपानिधाना। दीन्ह कुरूप न जा बखाना॥
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा। नारद जानि सबहिं सिर नावा॥

दो. रहे तहाँ दु रुद्र गन ते जानहिं सब भे।
बिप्रबेष देखत फिरहिं परम कौतुकी ते॥ १३३॥

जेंहि समाज बैंठे मुनि जा। हृदयँ रूप अहमिति अधिका॥
तहँ बैठ महेस गन दो। बिप्रबेष गति लखइ न को॥
करहिं कूटि नारदहि सुना। नीकि दीन्हि हरि सुंदरता॥
रीझहि राजकुँरि छबि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराँ। हँसहिं संभु गन अति सचु पाँ॥
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी। समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी॥
काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा। सो सरूप नृपकन्याँ देखा॥
मर्कट बदन भयंकर देही। देखत हृदयँ क्रोध भा तेही॥

दो. सखीं संग लै कुँरि तब चलि जनु राजमराल।
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल॥ १३४॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि देहि न बिलोकी भूली॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसकाहीं॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला। कुँरि हरषि मेले जयमाला॥

दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। नृपसमाज सब भयउ निरासा॥
मुनि अति बिकल मोंहँ मति नाठी। मनि गिरि ग छूटि जनु गाँठी॥
तब हर गन बोले मुसुका। निज मुख मुकुर बिलोकहु जा॥
अस कहि दो भागे भयँ भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी॥
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा। तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा॥

दो. होहु निसाचर जा तुम्ह कपटी पापी दो।
हँसेहु हमहि सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि को॥ १३५॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा। तदपि हृदयँ संतोष न आवा॥
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदी चले कमलापति पाहीं॥
देहउँ श्राप कि मरिहउँ जा। जगत मोर उपहास करा॥
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सो राजकुमारी॥
बोले मधुर बचन सुरसां। मुनि कहँ चले बिकल की नां॥
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा। माया बस न रहा मन बोधा॥
पर संपदा सकहु नहिं देखी। तुम्हरें इरिषा कपट बिसेषी॥
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु। सुरन्ह प्रेरी बिष पान करायहु॥

दो. असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु।

स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु ॥ १३६ ॥

परम स्वतंत्र न सिर पर को । भावइ मनहि करहु तुम्ह सो ॥
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू । बिसमय हरष न हियँ कछु धरहू ॥
डहकि डहकि परिचेहु सब काहू । अति असंक मन सदा उछाहू ॥
करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा । अब लगि तुम्हहि न काहूँ साधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सो तनु धरहु श्राप मम एहा ॥
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ही तुम्ह भारी । नारी बिरहँ तुम्ह होब दुखारी ॥

दो. श्राप सीस धरी हरषि हियँ प्रभु बहु बिनती कीन्हि ।
निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि ॥ १३७ ॥

जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
तब मुनि अति सभीत हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥
मृषा हो मम श्राप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे ॥
जपहु जा संकर सत नामा । होहि हृदयँ तुरंत बिश्रामा ॥

को नहिं सिव समान प्रिय मोरें। असि परतीति तजहु जनि भोरें॥
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भगति हमारी॥
अस उर धरि महि बिचरहु जा। अब न तुम्हहि माया निरा॥

दो. बहुबिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भ अंतरधान॥
सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान॥ १३८॥

हर गन मुनिहि जात पथ देखी। बिगतमोह मन हरष बिसेषी॥
अति सभीत नारद पहिं आ। गहि पद आरत बचन सुना॥
हर गन हम न बिप्र मुनिराया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया॥
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीनदयाला॥
निसिचर जा होहु तुम्ह दो। बैभव बिपुल तेज बल हो॥
भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ। धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ।
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा। होहहु मुकुत न पुनि संसारा॥
चले जुगल मुनि पद सिर ना। भ निसाचर कालहि पा॥

दो. एक कलप एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार।
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुबि भार॥ १३९॥

एहि बिधि जनम करम हरि केरे। सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे॥
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं। चारु चरित नानाबिधि करहीं॥
तब तब कथा मुनीसन्ह गा। परम पुनीत प्रबंध बना॥
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने। करहिं न सुनि आचरजु सयाने॥
हरि अनंत हरिकथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता॥
रामचंद्र के चरित सुहा। कलप कोटि लगि जाहिं न गा॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी। हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी॥
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी॥ सेवत सुलभ सकल दुख हारी॥

सो. सुर नर मुनि को नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल॥
अस बिचारि मन माहिं भजि महामाया पतिहि॥ १४०॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी। कहउँ बिचित्र कथा बिस्तारी॥
जेहि कारन अज अगुन अरूपा। ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा॥
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा। बंधु समेत धरें मुनिबेषा॥
जासु चरित अवलोकि भवानी। सती सरीर रहिहु बौरानी॥
अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी। तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी॥
लीला कीन्हि जो तेहिं अवतारा। सो सब कहिहउँ मति अनुसारा॥
भरद्वाज सुनि संकर बानी। सकुचि सप्रेम उमा मुसकानी॥

लगे बहुरि बरने बृषकेतू। सो अवतार भयउ जेहि हेतू॥

दो. सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन ला॥
राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहा॥ १४१॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा। जिन्ह तें भै नरसृष्टि अनूपा॥
दंपति धरम आचरन नीका। अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू। ध्रुव हरि भगत भयउ सुत जासू॥
लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही। बेद पुरान प्रसंसहि जाही॥
देवहूति पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला। जठर धरे जेहिं कपिल कृपाला॥
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना। तत्व बिचार निपुन भगवाना॥
तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु सब बिधि प्रतिपाला॥

सो. हो न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन।
हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति बिनु॥ १४२॥

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा॥
तीरथ बर नैमिष बिख्याता। अति पुनीत साधक सिधि दाता॥

बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा। तहँ हियँ हरषि चले मनु राजा॥
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा। ग्यान भगति जनु धरें सरीरा॥
पहुँचे जा धेनुमति तीरा। हरषि नहाने निरमल नीरा॥
आ मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी। धरम धुरंधर नृपरिषि जानी॥
जहँ जँह तीरथ रहे सुहा। मुनिन्ह सकल सादर करवा॥
कृस सरीर मुनिपट परिधाना। सत समाज नित सुनहिं पुराना।

दो. द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग॥ १४३॥

करहिं अहार साक फल कंदा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे। बारि अधार मूल फल त्यागे॥
उर अभिलाष निंरंतर हो। देखा नयन परम प्रभु सो॥
अगुन अखंड अनंत अनादी। जेहि चिंतहिं परमारथबादी॥
नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा॥
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना॥
ऐसे प्रभु सेवक बस अह। भगत हेतु लीलातनु गह॥
जौं यह बचन सत्य श्रुति भाषा। तौ हमार पूजहि अभिलाषा॥

दो. एहि बिधि बीतें बरष षट सहस बारि आहार।
संबत सप्त सहस्त्र पुनि रहे समीर अधार॥ १४४॥

बरष सहस दस त्यागे सो। ठाढ़े रहे एक पद दो॥
बिधि हरि तप देखि अपारा। मनु समीप आ बहु बारा॥
मागहु बर बहु भाँति लोभा। परम धीर नहिं चलहिं चला॥
अस्थिमात्र हो रहे सरीरा। तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा॥
प्रभु सर्बग्य दास निज जानी। गति अनन्य तापस नृप रानी॥
मागु मागु बरु भै नभ बानी। परम गभीर कृपामृत सानी॥
मृतक जिआवनि गिरा सुहा। श्रबन रंध्र हो उर जब आ॥
हृष्टपुष्ट तन भ सुहा। मानहुँ अबहिं भवन ते आ॥

दो. श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदयँ समात॥ १४५॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु। बिधि हरि हर बंदित पद रेनू॥
सेवत सुलभ सकल सुख दायक। प्रनतपाल सचराचर नायक॥
जौं अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न हो यह बर देहू॥
जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं॥

जो भुसुंडि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन॥
दंपति बचन परम प्रिय लागे। मुदुल बिनीत प्रेम रस पागे॥
भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना॥

दो. नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥ १४६॥

सरद मयंक बदन छबि सींवा। चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा॥
अधर अरुन रद सुंदर नासा। बिधु कर निकर बिनिंदक हासा॥
नव अबुंज अंबक छबि नीकी। चितवनि ललित भावँती जी की॥
भुकुटि मनोज चाप छबि हारी। तिलक ललाट पटल दुतिकारी॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा। कुटिल केस जनु मधुप समाजा॥
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला। पदिक हार भूषन मनिजाला॥
केहरि कंधर चारु जने। बाहु बिभूषन सुंदर ते॥
करि कर सरि सुभग भुजदंडा। कटि निषंग कर सर कोदंडा॥

दो. तडित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि॥
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँर छबि छीनि॥ १४७॥

पद राजीव बरनि नहि जाहीं। मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं॥
बाम भाग सोभति अनुकूला। आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला॥
जासु अंस उपजहिं गुनखानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी॥
भृकुटि बिलास जासु जग हो। राम बाम दिसि सीता सो॥
छबिसमुद्र हरि रूप बिलोकी। एकटक रहे नयन पट रोकी॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा। तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा॥
हरष बिबस तन दसा भुलानी। परे दंड इव गहि पद पानी॥
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा। तुरत उठा करुनापुंजा॥

दो. बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि।
मागहु बर जो भाव मन महादानि अनुमानि॥ १४८॥

सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी। धरि धीरजु बोली मृदु बानी॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे। अब पूरे सब काम हमारे॥
एक लालसा बड़ि उर माही। सुगम अगम कहि जात सो नाहीं॥
तुम्हहि देत अति सुगम गोसां। अगम लाग मोहि निज कृपनां॥
जथा दरिद्र बिबुधतरु पा। बहु संपति मागत सकुचा॥
तासु प्रभा जान नहिं सो। तथा हृदयँ मम संसय हो॥

सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी॥
सकुच बिहा मागु नृप मोहि। मोरें नहिं अदेय कछु तोही॥

दो. दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभा॥
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुरा॥ १४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले॥
आपु सरिस खोजौं कहँ जा। नृप तव तनय होब मैं आ॥
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें। देबि मागु बरु जो रुचि तोरे॥
जो बरु नाथ चतुर नृप मागा। सो कृपाल मोहि अति प्रिय लागा॥
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठा। जदपि भगत हित तुम्हहि सोहा॥
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी। ब्रह्म सकल उर अंतरजामी॥
अस समुझत मन संसय हो। कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सो॥
जे निज भगत नाथ तव अहहीं। जो सुख पावहिं जो गति लहहीं॥

दो. सो सुख सो गति सो भगति सो निज चरन सनेहु॥
सो बिबेक सो रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु॥ १५०॥

सुनु मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना॥

जो कछु रुचि तुम्हेर मन माहीं। मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं॥
मातु बिबेक अलोकिक तोरें। कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें।
बंदि चरन मनु कहे बहोरी। अवर एक बिनति प्रभु मोरी॥
सुत बिषइक तव पद रति हो। मोहि बड़ मूढ़ कहै किन को॥
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना। मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना॥
अस बरु मागि चरन गहि रहे। एवमस्तु करुनानिधि कहे॥
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी। बसहु जा सुरपति रजधानी॥

सो. तहँ करि भोग बिसाल तात गउँ कछु काल पुनि।
होहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत॥ १५१॥

इच्छामय नरबेष सँवारें। होहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे॥
अंसन्ह सहित देह धरि ताता। करिहउँ चरित भगत सुखदाता॥
जे सुनि सादर नर बड़भागी। भव तरिहहिं ममता मद त्यागी॥
आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया। सो अवतरिहि मोरि यह माया॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य पन सत्य हमारा॥
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अंतरधान भ भगवाना॥
दंपति उर धरि भगत कृपाला। तेहिं आश्रम निवसे कछु काला॥
समय पा तनु तजि अनयासा। जा कीन्ह अमरावति बासा॥

दो. यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु॥ १५२॥

मासपारायणपाँचवाँ विश्राम

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति संभु बखानी॥
बिस्व बिदित एक कैकय देसू। सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू॥
धरम धुरंधर नीति निधाना। तेज प्रताप सील बलवाना॥
तेहि कें भ जुगल सुत बीरा। सब गुन धाम महा रनधीरा॥

राज धनी जो जेठ सुत आही। नाम प्रतापभानु अस ताही॥
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा। भुजबल अतुल अचल संग्रामा॥
भाहि भाहि परम समीती। सकल दोष छल बरजित प्रीती॥
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवन बन कीन्हा॥

दो. जब प्रतापरबि भयउ नृप फिरी दोहा देस।
प्रजा पाल अति बेदबिधि कतहुँ नहीं अघ लेस॥ १५३॥

नृप हितकारक सचिव सयाना। नाम धरमरुचि सुक्र समाना॥
सचिव सयान बंधु बलबीरा। आपु प्रतापपुंज रनधीरा॥
सेन संग चतुरंग अपारा। अमित सुभट सब समर जुझारा॥
सेन बिलोकि रा हरषाना। अरु बाजे गहगहे निसाना॥
बिजय हेतु कटक बना। सुदिन साधि नृप चले बजा॥
जँह तहँ परीं अनेक लरां। जीते सकल भूप बरिआ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे। लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हें॥
सकल अवनि मंडल तेहि काला। एक प्रतापभानु महिपाला॥

दो. स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेसु।
अरथ धरम कामादि सुख सेवइ समयँ नरेसु॥ १५४॥

भूप प्रतापभानु बल पा। कामधेनु भै भूमि सुहा॥
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी। धरमसील सुंदर नर नारी॥
सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती। नृप हित हेतु सिखव नित नीती॥
गुर सुर संत पितर महिदेवा। करइ सदा नृप सब कै सेवा॥
भूप धरम जे बेद बखाने। सकल करइ सादर सुख माने॥
दिन प्रति देह बिबिध बिधि दाना। सुनहु सास्त्र बर बेद पुराना॥
नाना बापीं कूप तड़ागा। सुमन बाटिका सुंदर बागा॥

बिप्रभवन सुरभवन सुहा। सब तीरथन्ह बिचित्र बना॥

दो. जँह लगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्त्र सहस्त्र नृप कि सहित अनुराग॥ १५५॥

हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना॥
करइ जे धरम करम मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ग्यानी॥
चढ़ि बर बाजि बार एक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा॥
बिंध्याचल गभीर बन गय। मृग पुनीत बहु मारत भय॥
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरे ससिहि ग्रसि राहू॥
बड़ बिधु नहि समात मुख माहीं। मनहुँ क्रोधबस उगिलत नाहीं॥
कोल कराल दसन छबि गा। तनु बिसाल पीवर अधिका॥
घुरुघुरात हय आरौ पाँ। चकित बिलोकत कान उठाँ॥

दो. नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु।
चपरि चले हय सुटुकि नृप हाँकि न हो निबाहु॥ १५६॥

आवत देखि अधिक रव बाजी। चले बराह मरुत गति भाजी॥
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना। महि मिलि गयउ बिलोकत बाना॥

तकि तकि तीर महीस चलावा। करि छल सुर सरीर बचावा॥
प्रगटत दुरत जा मृग भागा। रिस बस भूप चले संग लागा॥
गयउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू॥
अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृग मग तजइ नरेसू॥
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा। भागि पैठ गिरिगुहाँ गभीरा॥
अगम देखि नृप अति पछिता। फिरे महाबन परे भुला॥

दो. खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत।
खोजत ब्याकुल सरित सर जल बिनु भयउ अचेत॥ १५७॥

फिरत बिपिन आश्रम एक देखा। तहँ बस नृपति कपट मुनिबेषा॥
जासु देस नृप लीन्ह छड़ा। समर सेन तजि गयउ परा॥
समय प्रतापभानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी॥
गयउ न गृह मन बहुत गलानी। मिला न राजहि नृप अभिमानी॥
रिस उर मारि रंक जिमि राजा। बिपिन बसइ तापस कें साजा॥
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रतापरबि तेहि तब चीन्हा॥
रा तृषित नहि सो पहिचाना। देखि सुबेष महामुनि जाना॥
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा। परम चतुर न कहे निज नामा॥
दो० भूपति तृषित बिलोकि तेहिं सरबरु दीन्ह देखा।

मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषा ॥ १५८ ॥

गै श्रम सकल सुखी नृप भय । निज आश्रम तापस लै गय ॥
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी । पुनि तापस बोले मृदु बानी ॥
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें । सुंदर जुबा जीव परहेलें ॥
चक्रबर्ति के लच्छन तोरें । देखत दया लागि अति मोरें ॥
नाम प्रतापभानु अवनीसा । तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥
फिरत अहेरें परेँ भुला । बडे भाग देखउँ पद आ ॥
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा । जानत हौं कछु भल होनिहारा ॥
कह मुनि तात भयउ अँधियारा । जोजन सत्तरि नगरु तुम्हारा ॥

दो. निसा घोर गम्भीर बन पंथ न सुनहु सुजान ।
बसहु आजु अस जानि तुम्ह जाहु होत बिहान ॥ १५९क ॥

तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहा ।
आपुनु आवइ ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जा ॥ १५९ख ॥

भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा । बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥

नृप बहु भाति प्रसंसे ताही। चरन बंदि निज भाग्य सराही॥
पुनि बोले मृदु गिरा सुहा। जानि पिता प्रभु करउँ ढिठा॥
मोहि मुनिस सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज कहहु बखानी॥
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना। भूप सुहृद सो कपट सयाना॥
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा। छल बल कीन्ह चहइ निज काजा॥
समुझि राजसुख दुखित अराती। अवाँ अनल इव सुलगइ छाती॥
सरल बचन नृप के सुनि काना। बयर सँभारि हृदयँ हरषाना॥

दो. कपट बोरि बानी मृदुल बोले जुगुति समेत।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेति॥ १६०॥

कह नृप जे बिग्यान निधाना। तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना॥
सदा रहहि अपनपौ दुराँ। सब बिधि कुसल कुबेष बनाँ॥
तेहि तें कहहि संत श्रुति टेरें। परम अकिंचन प्रिय हरि केरें॥
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा। होत बिरंचि सिवहि संदेहा॥
जोसि सोसि तव चरन नमामी। मो पर कृपा करि अब स्वामी॥
सहज प्रीति भूपति कै देखी। आपु बिषय बिस्वास बिसेषी॥
सब प्रकार राजहि अपना। बोले अधिक सनेह जना॥
सुनु सतिभा कहउँ महिपाला। इहाँ बसत बीते बहु काला॥

दो. अब लगि मोहि न मिले को मैं न जनावउँ काहु।
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु॥ १६१क॥

सो. तुलसी देखि सुबेषु भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।
सुंदर केकिहि पेखु बचन सुधा सम असन अहि॥ १६१ख

तातें गुपुत रहउँ जग माहीं। हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं॥
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाँ। कहहु कवनि सिधि लोक रिझाँ॥
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें। प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें॥
अब जौं तात दुरावउँ तोही। दारुन दोष घटइ अति मोही॥
जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा। तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा॥
देखा स्वबस कर्म मन बानी। तब बोला तापस बगध्यानी॥
नाम हमार एकतनु भा। सुनि नृप बोले पुनि सिरु ना॥
कहहु नाम कर अरथ बखानी। मोहि सेवक अति आपन जानी॥

दो. आदिसृष्टि उपजी जबहिं तब उतपति भै मोरि।
नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि॥ १६२॥

जनि आचरुज करहु मन माहीं। सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं॥
तपबल तें जग सृजइ बिधाता। तपबल बिष्नु भ परित्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा। तप तें अगम न कछु संसारा॥
भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा। कथा पुरातन कहै सो लागा॥
करम धरम इतिहास अनेका। करइ निरूपन बिरति बिबेका॥
उदभव पालन प्रलय कहानी। कहेसि अमित आचरज बखानी॥
सुनि महिप तापस बस भय। आपन नाम कहत तब लय॥
कह तापस नृप जानउँ तोही। कीन्हेहु कपट लाग भल मोही॥

सो. सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहि तोहि पर अति प्रीति सो चतुरता बिचारि तव॥ १६३॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा। सत्यकेतु तव पिता नरेसा॥
गुर प्रसाद सब जानि राजा। कहि न आपन जानि अकाजा॥
देखि तात तव सहज सुधा। प्रीति प्रतीति नीति निपुना॥
उपजि परि ममता मन मोरें। कहउँ कथा निज पूछे तोरें॥
अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं। मागु जो भूप भाव मन माहीं॥
सुनि सुबचन भूपति हरषाना। गहि पद बिनय कीन्हि बिधि नाना॥
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें। चारि पदारथ करतल मोरें॥

प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी। मागि अगम बर हौं असोकी॥

दो. जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि को।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत हो॥ १६४॥

कह तापस नृप ऐसे हो। कारन एक कठिन सुनु सो॥
कालउ तु पद नाहि सीसा। एक बिप्रकुल छाड़ि महीसा॥
तपबल बिप्र सदा बरिआरा। तिन्ह के कोप न को रखवारा॥
जौं बिप्रन्ह सब करहु नरेसा। तौ तु बस बिधि बिष्नु महेसा॥
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआ। सत्य कहउँ दो भुजा उठा॥
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला। तोर नास नहि कवनेहुँ काला॥
हरषे रा बचन सुनि तासू। नाथ न हो मोर अब नासू॥
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना। मो कहुँ सर्ब काल कल्याना॥

दो. एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब निज कहहु त हमहि न खोरि॥ १६५॥

तातें मै तोहि बरजउँ राजा। कहें कथा तव परम अकाजा॥

छठें श्रवन यह परत कहानी। नास तुम्हार सत्य मम बानी॥
यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा। नास तोर सुनु भानुप्रतापा॥
आन उपायँ निधन तव नाहीं। जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं॥
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुर कोप कहहु को राखा॥
राखइ गुर जौं कोप बिधाता। गुर बिरोध नहिं को जग त्राता॥
जौं न चलब हम कहे तुम्हारें। हो नास नहिं सोच हमारें॥
एकहिं डर डरपत मन मोरा। प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा॥

दो. होहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सो।
तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखउँ कोँ॥ १६६॥

सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं। कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं॥
अहइ एक अति सुगम उपा। तहाँ परंतु एक कठिना॥
मम आधीन जुगुति नृप सो। मोर जाब तव नगर न हो॥
आजु लगें अरु जब तें भयँ। काहू के गृह ग्राम न गयँ॥
जौं न जाँ तव हो अकाजू। बना आ असमंजस आजू॥
सुनि महीस बोले मृदु बानी। नाथ निगम असि नीति बखानी॥
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं। गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं॥
जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत सिर रेनू॥

दो. अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल।
मोहि लागि दुख सहि प्रभु सज्जन दीनदयाल॥ १६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रबीना॥
सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही। जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही॥
अवसि काज मैं करिहउँ तोरा। मन तन बचन भगत तैं मोरा॥
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभा। फलइ तबहिं जब करि दुरा॥
जौं नरेस मैं करौं रसोा। तुम्ह परुसहु मोहि जान न को॥
अन्न सो जो जो भोजन कर। सो सो तव आयसु अनुसर॥
पुनि तिन्ह के गृह जेवँइ जो। तव बस हो भूप सुनु सो॥
जा उपाय रचहु नृप एहू। संबत भरि संकलप करेहू॥

दो. नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकलप लगि दिनहिंकरिब जेवनार॥ १६८॥

एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरें। होहहिं सकल बिप्र बस तोरें॥
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा। तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा॥
और एक तोहि कहँ लखा। मैं एहि बेष न आब का॥

तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया। हरि आनब मैं करि निज माया॥
तपबल तेहि करि आपु समाना। रखिहउँ इहाँ बरष परवाना॥
मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा। सब बिधि तोर सँवारब काजा॥
गै निसि बहुत सयन अब कीजे। मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे॥
मैं तपबल तोहि तुरग समेता। पहुँचेहउँ सोवतहि निकेता॥

दो. मैं आब सो बेषु धरि पहिचानेहु तब मोहि।
जब एकांत बोला सब कथा सुनावौं तोहि॥ १६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जा बैठ छलग्यानी॥
श्रमित भूप निद्रा अति आ। सो किमि सोव सोच अधिका॥
कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहिं सूकर हो नृपहि भुलावा॥
परम मित्र तापस नृप केरा। जानइ सो अति कपट घनेरा॥
तेहि के सत सुत अरु दस भा। खल अति अजय देव दुखदा॥
प्रथमहि भूप समर सब मारे। बिप्र संत सुर देखि दुखारे॥
तेहिं खल पाछिल बयरु सँभरा। तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा॥
जेहि रिपु छय सो रचेन्हि उपा। भावी बस न जान कछु रा॥

दो. रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनि न ताहु।

अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु ॥ १७० ॥

तापस नृप निज सखहि निहारी । हरषि मिले उठि भयउ सुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुना । जातुधान बोला सुख पा ॥
अब साधैं रिपु सुनहु नरेसा । जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सो । बिनु औषध बिआधि बिधि खो ॥
कुल समेत रिपु मूल बहा । चौथे दिवस मिलब मैं आ ॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी । चला महाकपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहि बाजि समेता । पहुँचासि छन माझ निकेता ॥
नृपहि नारि पहिं सयन करा । हयगृहँ बाँधेसि बाजि बना ॥

दो. राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरि खोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥ १७१ ॥

आपु बिरचि उपरोहित रूपा । परे जा तेहि सेज अनूपा ॥
जागे नृप अनभँ बिहाना । देखि भवन अति अचरजु माना ॥
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी । उठे गवँहि जेहि जान न रानी ॥
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेहीं । पुर नर नारि न जाने केहीं ॥
गँ जाम जुग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाज बधावा ॥

उपरोहितहि देख जब राजा। चकित बिलोकि सुमिरि सो काजा॥
जुग सम नृपहि ग दिन तीनी। कपटी मुनि पद रह मति लीनी॥
समय जानि उपरोहित आवा। नृपहि मते सब कहि समुझावा॥

दो. नृप हरषे पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत।
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत॥ १७२॥

उपरोहित जेवनार बना। छरस चारि बिधि जसि श्रुति गा॥
मायामय तेहिं कीन्ह रसो। बिंजन बहु गनि सकइ न को॥
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ बिप्र माँसु खल साँधा॥
भोजन कहुँ सब बिप्र बोला। पद पखारि सादर बैठा॥
परुसन जबहिं लाग महिपाला। भै अकासबानी तेहि काला॥
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू। है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू॥
भयउ रसों भूसुर माँसू। सब द्विज उठे मानि बिस्वासू॥
भूप बिकल मति मोहँ भुलानी। भावी बस आव मुख बानी॥

दो. बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार।
जा निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार॥ १७३॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोला। घालै लि सहित समुदा॥
ईस्वर राखा धरम हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा॥
संबत मध्य नास तव हो। जलदाता न रहिहि कुल को॥
नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा। भै बहोरि बर गिरा अकासा॥
बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा। नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा॥
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी। भूप गयउ जहँ भोजन खानी॥
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा। फिरे रा मन सोच अपारा॥
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुना। त्रसित परे अवनीं अकुला॥

दो. भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर।
किँ अन्यथा हो नहिं बिप्रश्राप अति घोर॥ १७४॥

अस कहि सब महिदेव सिधा। समाचार पुरलोगन्ह पा॥
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं। बिचरत हंस काग किय जेहीं॥
उपरोहितहि भवन पहुँचा। असुर तापसहि खबरि जना॥
तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठा। सजि सजि सेन भूप सब धा॥
घेरेन्हि नगर निसान बजा। बिबिध भाँति नित हो लरा॥
जूझे सकल सुभट करि करनी। बंधु समेत परे नृप धरनी॥
सत्यकेतु कुल को नहिं बाँचा। बिप्रश्राप किमि हो असाँचा॥

रिपु जिति सब नृप नगर बसा। निज पुर गवने जय जसु पा॥

दो. भरद्वाज सुनु जाहि जब हो बिधाता बाम।
धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम॥ ।१७५॥

काल पा मुनि सुनु सो राजा। भयउ निसाचर सहित समाजा॥
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा। रावन नाम बीर बरिबंडा॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भयउ सो कुंभकरन बलधामा॥
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू। भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू॥
नाम बिभीषन जेहि जग जाना। बिष्नुभगत बिग्यान निधाना॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे। भ निसाचर घोर घनेरे॥
कामरूप खल जिनस अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिबेका॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी। बरनि न जाहिं बिस्व परितापी॥

दो. उपजे जदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर श्राप बस भ सकल अघरूप॥ १७६॥

कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भा। परम उग्र नहिं बरनि सो जा॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता। मागहु बर प्रसन्न मैं ताता॥

करि बिनती पद गहि दससीसा। बोले बचन सुनहु जगदीसा॥
हम काहू के मरहिं न मारें। बानर मनुज जाति दु बारें॥
एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्माँ मिलि तेहि बर दीन्हा॥
पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गय। तेहि बिलोकि मन बिसमय भय॥
जौं एहिं खल नित करब अहारू। होहि सब उजारि संसारू॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी। मागेसि नीद मास षट केरी॥

दो. ग बिभीषन पास पुनि कहे पुत्र बर मागु।
तेहिं मागे भगवंत पद कमल अमल अनुरागु॥ १७७॥

तिन्हि दे बर ब्रह्म सिधा। हरषित ते अपने गृह आ॥
मय तनुजा मंदोदरि नामा। परम सुंदरी नारि ललामा॥
सो मयँ दीन्हि रावनहि आनी। होहि जातुधानपति जानी॥
हरषित भयउ नारि भलि पा। पुनि दो बंधु बिआहेसि जा॥
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी। बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी॥
सो मय दानवँ बहुरि सँवारा। कनक रचित मनिभवन अपारा॥
भोगावति जसि अहिकुल बासा। अमरावति जसि सक्रनिवासा॥
तिन्ह तें अधिक रम्य अति बंका। जग बिख्यात नाम तेहि लंका॥

दो. खां सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आव।
कनक कोट मनि खचित दृढ़ बरनि न जा बनाव॥ १७८क॥

हरिप्रेरित जेहिं कलप जो जातुधानपति हो।
सूर प्रतापी अतुलबल दल समेत बस सो॥ १७८ख॥

रहे तहाँ निसिचर भट भारे। ते सब सुरन्ह समर संघारे॥
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे। रच्छक कोटि जच्छपति केरे॥
दसमुख कतहुँ खबरि असि पा। सेन साजि गढ़ घेरेसि जा॥
देखि बिकट भट बड़ि कटका। जच्छ जीव लै ग परा॥
फिरि सब नगर दसानन देखा। गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्हि तहाँ रावन रजधानी॥
जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हे॥
एक बार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा॥

दो. कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हेसि जा उठा।
मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पा॥ १७९॥

सुख संपति सुत सेन सहा। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ा॥
नित नूतन सब बाढ़त जा। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिका॥
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहुँ नहिं प्रतिभट जग जाता॥
करइ पान सोवइ षट मासा। जागत होइ तिहुँ पुर त्रासा॥
जौं दिन प्रति अहार कर सोई। बिस्व बेगि सब चौपट होई॥
समर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अमित बीर बलवाना॥
बारिदनाद जेठ सुत तासू। भट महुँ प्रथम लीक जग जासू॥
जेहि न होइ रन सनमुख कोई। सुरपुर नितहिं परावन होई॥

दो. कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय॥ १८०॥

कामरूप जानहिं सब माया। सपनेहुँ जिन्ह कें धरम न दाया॥
दसमुख बैठ सभाँ एक बारा। देखि अमित आपन परिवारा॥
सुत समूह जन परिजन नाती। गे को पार निसाचर जाती॥
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी॥

सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी बिबुध बरूथा॥
ते सनमुख नहिं करही लराई। देखि सबल रिपु जाहिं पराई॥

तेन्ह कर मरन एक बिधि हो। कहउँ बुझा सुनहु अब सो॥
द्विजभोजन मख होम सराधा॥ सब कै जा करहु तुम्ह बाधा॥

दो. छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आ।
तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली भाँति अपना॥ १८१॥

मेघनाद कहुँ पुनि हँकरावा। दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा॥

जे सुर समर धीर बलवाना। जिन्ह कें लरिबे कर अभिमाना॥
तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी। उठि सुत पितु अनुसासन काँधी॥
एहि बिधि सबही अग्या दीन्ही। आपुनु चले गदा कर लीन्ही॥
चलत दसानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्त्रवहिं सुर रवनी॥
रावन आवत सुने सकोहा। देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा॥
दिगपालन्ह के लोक सुहा। सूने सकल दसानन पा॥
पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी। दे देवतन्ह गारि पचारी॥
रन मद मत्त फिरइ जग धावा। प्रतिभट खौजत कतहुँ न पावा॥
रबि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनि काल जम सब अधिकारी॥
किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहिं लागा॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसबर्ती नर नारी॥

आयसु करहिं सकल भयभीता। नवहिं आ नित चरन बिनीता॥

दो. भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि को न सुतंत्र।
मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र॥ १८२ख॥

देव जच्छ गंधर्व नर किंनर नाग कुमारि।
जीति बरीं निज बाहुबल बहु सुंदर बर नारि॥ १८२ख॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहे। सो सब जनु पहिलेहिं करि रहे॥
प्रथमहिं जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा। तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा॥
देखत भीमरूप सब पापी। निसिचर निकर देव परितापी॥
करहि उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं करि माया॥
जेहि बिधि हो धर्म निर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रतिकूला॥
जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं। नगर गाँ पुर आगि लगावहिं॥
सुभ आचरन कतहुँ नहिं हो। देव बिप्र गुरू मान न को॥
नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना। सपनेहुँ सुनि न बेद पुराना॥

छं. जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवन सुनइ दससीसा।
आपुनु उठि धावइ रहै न पावइ धरि सब घालइ खीसा॥

अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनि नहि काना।
तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह बेद पुराना॥

सो. बरनि न जा अनीति घोर निसाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति॥ १८३॥

मासपारायण छठा विश्राम

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा। जे लंपट परधन परदारा॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा॥
जिन्ह के यह आचरन भवानी। ते जानेहु निसिचर सब प्रानी॥
अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी॥
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही। जस मोहि गरु एक परद्रोही॥
सकल धर्म देखइ बिपरीता। कहि न सकइ रावन भय भीता॥
धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी। ग तहाँ जहँ सुर मुनि झारी॥
निज संताप सुनासि रो। काहू तें कछु काज न हो॥

छं. सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका।
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका॥
ब्रह्माँ सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसा।

जा करि तैं दासी सो अबिनासी हमरे तोर सहा ॥

सो. धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु ।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥ १८४ ॥

बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहँ पा प्रभु करि पुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह को । को कह पयनिधि बस प्रभु सो ॥
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीति । प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मैं रहैं । अवसर पा बचन एक कहैं ॥
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं । कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
अग जगमय सब रहित बिरागी । प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥
मोर बचन सब के मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दो. सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर ।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥ १८५ ॥

छं. जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिधुंसुता प्रिय कंता ॥

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ को।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सो॥
जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहिं सृष्टि उपा त्रिबिध बना संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानि भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ को नहि जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

दो. जानि सभय सुरभूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥ १८६॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा॥
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउँ दिनकर बंस उदारा॥
कस्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा। कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा॥
तिन्ह के गृह अवतरिहउँ जा। रघुकुल तिलक सो चारि भा॥
नारद बचन सत्य सब करिहउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ॥
हरिहउँ सकल भूमि गरुआ। निर्भय होहु देव समुदा॥
गगन ब्रह्मबानी सुनी काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना॥
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा। अभय भ भरोस जियँ आवा॥

दो. निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखा।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जा॥ १८७॥

ग देव सब निज निज धामा। भूमि सहित मन कहुँ बिश्रामा।
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा। हरषे देव बिलंब न कीन्हा॥
बनचर देह धरि छिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरि मारग चितवहिं मतिधीरा॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी॥
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा॥

अवधपुरीं रघुकुलमनि रा। बेद बिदित तेहि दसरथ नाँ॥
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी। हृदयँ भगति मति सारँगपानी॥

दो. कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत॥ १८८॥

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं॥
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ॥
धरहु धीर होहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी॥
सृंगी रिषहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें॥
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा॥
यह हबि बाँटि देहु नृप जा। जथा जोग जेहि भाग बना॥

दो. तब अदृस्य भ पावक सकल सभहि समुझा॥
परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समा॥ १८९॥

तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलां। कौसल्यादि तहाँ चलि आ॥

अर्ध भाग कौसल्याहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा॥
कैके कहँ नृप सो दय। रह्यो सो उभय भाग पुनि भय॥
कौसल्या कैके हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि॥
एहि बिधि गर्भसहित सब नारी। भं हृदयँ हरषित सुख भारी॥
जा दिन तें हरि गर्भहिं आ। सकल लोक सुख संपति छा॥
मंदिर महँ सब राजहिं रानी। सोभा सील तेज की खानीं॥
सुख जुत कछुक काल चलि गय। जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भय॥

दो. जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भ अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल॥ १९०॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥
सीतल मंद सुरभि बह बा। हरषित सुर संतन मन चा॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्त्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा॥
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना॥
गगन बिमल सकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा॥
बरषहिं सुमन सुंजलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा॥

दो. सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥ १९१॥

छं. भ प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥
कह दु कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर पति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहा मातु बुझा जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डौली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना हो बालक सुरभूपा।

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

दो. बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥ १९२ ॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आ सब रानी ॥
हरषित जहँ तहँ धां दासी । आनँद मगन सकल पुरबासी ॥
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठत करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत सुभ हो । मोरें गृह आवा प्रभु सो ॥
परमानंद पूरि मन राजा । कहा बोला बजावहु बाजा ॥
गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा । आ द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखेन्हि जा । रूप रासि गुन कहि न सिरा ॥

दो. नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥ १९३ ॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा । कहि न जा जेहि भाँति बनावा ॥
सुमनबृष्टि अकास तें हो । ब्रह्मानंद मगन सब लो ॥

बृंद बृंद मिलि चलीं लोगा। सहज संगार किँ उठि धा॥
कनक कलस मंगल धरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा॥
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं॥
मागध सूत बंदिगन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक॥
सर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहिं पावा राखा नहिं ताहू॥
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥

दो. गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद॥ १९४॥

कैकयसुता सुमित्रा दो। सुंदर सुत जनमत भैं ओ॥
वह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकइ सारद अहिराजा॥
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती। प्रभुहि मिलन आ जनु राती॥
देखि भानू जनु मन सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी॥
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी। उड़इ अभीर मनहुँ अरुनारी॥
मंदिर मनि समूह जनु तारा। नृप गृह कलस सो इंदु उदारा॥
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी। जनु खग मूखर समयँ जनु सानी॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेँ जात न जाना॥

दो. मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ को।
रथ समेत रबि थाके निसा कवन बिधि हो॥ १९५॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना। दिन मनि चले करत गुनगाना॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरनत निज भागा॥
औरउ एक कहउँ निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी॥
काक भुसुंडि संग हम दो। मनुजरूप जानइ नहिं को॥
परमानंद प्रेमसुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले॥
यह सुभ चरित जान पै सो। कृपा राम कै जापर हो॥
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा॥

दो. मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहि असीस।
सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस॥ १९६॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती। जात न जानि दिन अरु राती॥
नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठ मुनि ग्यानी॥
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरि नाम जो मुनि गुनि राखा॥
इन्ह के नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा॥

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥
बिस्व भरन पोषन कर जो। ताकर नाम भरत अस हो॥
जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥

दो. लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥ १९७॥

धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी। बेद तत्व नृप तव सुत चारी॥
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना। बाल केलि तेहिं सुख माना॥
बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी॥
भरत सत्रुहन दूनउ भा। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ा॥
स्याम गौर सुंदर दो जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी॥
चारि सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा॥
हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा॥
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना। मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना॥

दो. ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद॥ १९८॥

काम कोटि छबि स्याम सरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा॥
अरुन चरन पकंज नख जोती। कमल दलन्हि बैठे जनु मोती॥
रेख कुलिस धवज अंकुर सोहे। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे॥
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा। नाभि गभीर जान जेहि देखा॥
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हियँ हरि नख अति सोभा रूरी॥
उर मनिहार पदिक की सोभा। बिप्र चरन देखत मन लोभा॥
कंबु कंठ अति चिबुक सुहा। आनन अमित मदन छबि छा॥
दु दु दसन अधर अरुनारे। नासा तिलक को बरनै पारे॥
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे॥
पीत झगुलिआ तनु पहिरा। जानु पानि बिचरनि मोहि भा॥
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा। सो जानइ सपनेहुँ जेहि देखा॥

दो. सुख संदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत।
दंपति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत॥ १९९॥

एहि बिधि राम जगत पितु माता। कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता॥
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी॥

रघुपति बिमुख जतन कर कोरी। कवन सकइ भव बंधन छोरी॥
जीव चराचर बस कै राखे। सो माया प्रभु सों भय भाखे॥
भृकुटि बिलास नचावइ ताही। अस प्रभु छाड़ि भजि कहु काही॥
मन क्रम बचन छाड़ि चतुरा। भजत कृपा करिहहिं रघुरा॥
एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा॥
लै उछंग कबहुँक हलरावै। कबहुँ पालनें घालि झुलावै॥

दो. प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान॥ २००॥

एक बार जननीं अन्हवा। करि सिंगार पलनाँ पौढ़ा॥

निज कुल इष्टदेव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना॥
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा। आपु ग जहँ पाक बनावा॥
बहुरि मातु तहवाँ चलि आ। भोजन करत देख सुत जा॥
गै जननी सिसु पहिं भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता॥
बहुरि आ देखा सुत सो। हृदयँ कंप मन धीर न हो॥
इहाँ उहाँ दु बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी॥

दो. देखरावा मातहि निज अदभुत रुप अखंड ।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ २०१ ॥

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन । बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥
काल कर्म गुन ग्यान सुभा । सो देखा जो सुना न का ॥
देखी माया सब बिधि गाढ़ी । अति सभीत जोरें कर ठाढ़ी ॥
देखा जीव नचावइ जाही । देखी भगति जो छोरइ ताही ॥
तन पुलकित मुख बचन न आवा । नयन मूदि चरननि सिरु नावा ॥
बिसमयवंत देखि महतारी । भ बहुरि सिसुरूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जा भय माना । जगत पिता मैं सुत करि जाना ॥
हरि जननि बहुबिधि समुझा । यह जनि कतहुँ कहसि सुनु मा ॥

दो. बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि ॥
अब जनि कबहूँ ब्यापै प्रभु मोहि माया तोरि ॥ २०२ ॥

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा । अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥
कछुक काल बीतें सब भा । बड़े भ परिजन सुखदा ॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जा । बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पा ॥

परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारि सुकुमारा॥
मन क्रम बचन अगोचर जो। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सो॥
भोजन करत बोल जब राजा। नहिं आवत तजि बाल समाजा॥
कौसल्या जब बोलन जा। ठुमकु ठुमकु प्रभु चलहिं परा॥
निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा॥
धूरस धूरि भरें तनु आ। भूपति बिहसि गोद बैठा॥

दो. भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पा।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटा॥ २०३॥

बालचरित अति सरल सुहा। सारद सेष संभु श्रुति गा॥
जिन कर मन इन्ह सन नहिं राता। ते जन बंचित कि बिधाता॥
भ कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जने गुरु पितु माता॥
गुरगृहँ ग पढ़न रघुरा। अलप काल बिद्या सब आ॥
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी॥
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला॥
करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा॥
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भा। थकित होहिं सब लोग लुगा॥

दो.  कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल॥ २०४॥

बंधु सखा संग लेहिं बोला। बन मृगया नित खेलहिं जा॥
पावन मृग मारहिं जियँ जानी। दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी॥
जे मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे॥
अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता अग्या अनुसरहीं॥
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सो संजोगा॥
बेद पुरान सुनहिं मन ला। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझा॥
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषइ मन राजा॥

दो.  ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप॥ २०५॥

यह सब चरित कहा मैं गा। आगिलि कथा सुनहु मन ला॥
बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहि बिपिन सुभ आश्रम जानी॥
जहँ जप जग्य मुनि करही। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं॥
देखत जग्य निसाचर धावहि। करहि उपद्रव मुनि दुख पावहिं॥

गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहि न निसिचर पापी॥
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरे हरन महि भारा॥
एहुँ मिस देखौं पद जा। करि बिनती आनौ दो भा॥
ग्यान बिराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मै देखब भरि नयना॥

दो. बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार।
करि मज्जन सर जल ग भूप दरबार॥ २०६॥

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गय लै बिप्र समाजा॥
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी॥
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा॥
बिबिध भाँति भोजन करवावा। मुनिवर हृदयँ हरष अति पावा॥
पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह बिसारी॥
भ मगन देखत मुख सोभा। जनु चकोर पूरन ससि लोभा॥
तब मन हरषि बचन कह रा। मुनि अस कृपा न कीन्हिहु का॥
केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ बारा॥
असुर समूह सतावहिं मोही। मै जाचन आयउँ नृप तोही॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा॥

दो. देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान॥ २०७॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी॥
चौथेंपन पायउँ सुत चारी। बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी॥
मागहु भूमि धेनु धन कोसा। सर्बस दैं आजु सहरोसा॥
देह प्रान तें प्रिय कछु नाही। सो मुनि दैं निमिष एक माही॥
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नां। राम देत नहिं बनइ गोसा॥
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुंदर सुत परम किसोरा॥
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी॥
तब बसिष्ट बहु निधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा॥
अति आदर दो तनय बोला। हृदयँ ला बहु भाँति सिखा॥
मेरे प्रान नाथ सुत दो। तुम्ह मुनि पिता आन नहिं को॥

दो. सौंपे भूप रिषिहि सुत बहु बिधि दे असीस।
जननी भवन ग प्रभु चले ना पद सीस॥ २०८क॥

सो. पुरुषसिंह दो बीर हरषि चले मुनि भय हरन॥
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन॥ २०८ख

अरुन नयन उर बाहु बिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला॥
कटि पट पीत कसें बर भाथा। रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा॥
स्याम गौर सुंदर दो भा। बिस्बामित्र महानिधि पा॥
प्रभु ब्रह्मन्यदेव मै जाना। मोहि निति पिता तजेहु भगवाना॥
चले जात मुनि दीन्हि दिखा। सुनि ताड़का क्रोध करि धा॥
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥
तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही। बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्ही॥
जाते लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तनु तेज प्रकासा॥

दो. आयुष सब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि॥ २०९॥

प्रात कहा मुनि सन रघुरा। निर्भय जग्य करहु तुम्ह जा॥
होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख कीं रखवारी॥
सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा॥
पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा॥
मारि असुर द्विज निर्मयकारी। अस्तुति करहिं देव मुनि झारी॥

तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया॥
भगति हेतु बहु कथा पुराना। कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना॥
तब मुनि सादर कहा बुझा। चरित एक प्रभु देखि जा॥
धनुषजग्य मुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा॥
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी॥

दो. गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर॥ २१०॥

छं. परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भ तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख हो कर जोरि रही॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पा।
अति निर्मल बानीं अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुरा॥
मै नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदा।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आ॥
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।

देखैं भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना ।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भ सिव सीस धरी ।
सो पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरे कृपाल हरी ॥
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥

दो. अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥ २११ ॥

मासपारायण सातवाँ विश्राम

चले राम लछिमन मुनि संगा । ग जहाँ जग पावनि गंगा ॥
गाधिसूनु सब कथा सुना । जेहि प्रकार सुरसरि महि आ ॥
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहा । बिबिध दान महिदेवन्हि पा ॥
हरषि चले मुनि बृंद सहाया । बेगि बिदेह नगर निराया ॥
पुर रम्यता राम जब देखी । हरषे अनुज समेत बिसेषी ॥
बापीं कूप सरित सर नाना । सलिल सुधासम मनि सोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा । कूजत कल बहुबरन बिहंगा ॥

बरन बरन बिकसे बन जाता। त्रिबिध समीर सदा सुखदाता॥

दो. सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास॥ २१२॥

बनइ न बरनत नगर निका। जहाँ जा मन तहँइँ लोभा॥
चारु बजारु बिचित्र अँबारी। मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी॥
धनिक बनिक बर धनद समाना। बैठ सकल बस्तु लै नाना॥
चौहट सुंदर गलीं सुहा। संतत रहहिं सुगंध सिंचा॥
मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता॥
अति अनूप जहँ जनक निवासू। बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू॥
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी॥

दो. धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति॥ २१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा॥
बनी बिसाल बाजि गज साला। हय गय रथ संकुल सब काला॥

सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे॥
पुर बाहेर सर सारित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा॥
देखि अनूप एक अँवरा। सब सुपास सब भाँति सुहा॥
कौसिक कहे मोर मनु माना। इहाँ रहि रघुबीर सुजाना॥
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता॥
बिस्वामित्र महामुनि आ। समाचार मिथिलापति पा॥

दो. संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित रा एहि भाँति॥ २१४॥

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़ रा अनंदे॥
कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा। बिस्वामित्र नृपहि बैठारा॥
तेहि अवसर आ दो भा। ग रहे देखन फुलवा॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा। लोचन सुखद बिस्व चित चोरा॥
उठे सकल जब रघुपति आ। बिस्वामित्र निकट बैठा॥
भ सब सुखी देखि दो भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता॥
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी॥

दो. प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर।
बोले मुनि पद ना सिरु गदगद गिरा गभीर॥ २१५॥

कहहु नाथ सुंदर दो बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सो आवा॥
सहज बिरागरुप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा॥
ताते प्रभु पूछउँ सतिभा। कहहु नाथ जनि करहु दुरा॥
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा॥
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका। बचन तुम्हार न हो अलीका॥
ए प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी॥
रघुकुल मनि दसरथ के जा। मम हित लागि नरेस पठा॥

दो. रामु लखनु दो बंधुबर रूप सील बल धाम।
मख राखे सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम॥ २१६॥

मुनि तव चरन देखि कह रा। कहि न सकउँ निज पुन्य प्राभा॥
सुंदर स्याम गौर दो भ्राता। आनँदहू के आनँद दाता॥
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि। कहि न जा मन भाव सुहावनि॥
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू॥

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू॥
मुनिहि प्रसंसि ना पद सीसू। चले लवा नगर अवनीसू॥
सुंदर सदनु सुखद सब काला। तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला॥
करि पूजा सब बिधि सेवका। गयउ रा गृह बिदा करा॥

दो. रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिश्रामु।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु॥ २१७॥

लखन हृदयँ लालसा बिसेषी। जा जनकपुर आ देखी॥
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं। प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं॥
राम अनुज मन की गति जानी। भगत बछलता हिंयँ हुलसानी॥
परम बिनीत सकुचि मुसुका। बोले गुर अनुसासन पा॥
नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं। प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं॥
जौं रार आयसु मैं पावौं। नगर देखा तुरत लै आवौ॥
सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती। कस न राम तुम्ह राखहु नीती॥
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता। प्रेम बिबस सेवक सुखदाता॥

दो. जा देखी आवहु नगरु सुख निधान दो भा।
करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखा॥ २१८॥

मासपारायण आठवाँ विश्राम

नवान्हपारायण दूसरा विश्राम

मुनि पद कमल बंदि दो भ्राता। चले लोक लोचन सुख दाता॥
बालक बृंदि देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मनु लोभा॥
पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा॥
तन अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी॥
केहरि कंधर बाहु बिसाला। उर अति रुचिर नागमनि माला॥
सुभग सोन सरसीरुह लोचन। बदन मयंक तापत्रय मोचन॥
कानन्हि कनक फूल छबि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं॥
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी। तिलक रेखा सोभा जनु चाँकी॥

दो. रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक कुंचित केस।
नख सिख सुंदर बंधु दो सोभा सकल सुदेस॥ २१९॥

देखन नगरु भूपसुत आ। समाचार पुरबासिन्ह पा॥
धा धाम काम सब त्यागी। मनहु रंक निधि लूटन लागी॥
निरखि सहज सुंदर दो भा। होहिं सुखी लोचन फल पा॥
जुबतीं भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं॥

कहहिं परसपर बचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती॥
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। सोभा असि कहुँ सुनिति नाहीं॥
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी। बिकट बेष मुख पंच पुरारी॥
अपर दे अस को न आही। यह छबि सखि पटतरि जाही॥

दो. बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख घाम।
अंग अंग पर वारिहिं कोटि कोटि सत काम॥ २२०॥

कहहु सखी अस को तनुधारी। जो न मोह यह रूप निहारी॥
को सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी॥
ए दो दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा॥
मुनि कौसिक मख के रखवारे। जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे॥
स्याम गात कल कंज बिलोचन। जो मारीच सुभुज मदु मोचन॥
कौसल्या सुत सो सुख खानी। नामु रामु धनु सायक पानी॥
गौर किसोर बेषु बर काछें। कर सर चाप राम के पाछें॥
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता॥

दो. बिप्रकाजु करि बंधु दो मग मुनिबधू उधारि।
आ देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि॥ २२१॥

देखि राम छबि को एक कह। जोगु जानकिहि यह बरु अह॥
जौ सखि इन्हहि देख नरनाहू। पन परिहरि हठि करइ बिबाहू॥
को कह ए भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने॥
सखि परंतु पनु रा न तज। बिधि बस हठि अबिबेकहि भज॥
को कह जौं भल अहइ बिधाता। सब कहँ सुनि उचित फलदाता॥
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू। नाहिन आलि इहाँ संदेहू॥
जौ बिधि बस अस बनै सँजोगू। तौ कृतकृत्य हो सब लोगू॥
सखि हमरें आरति अति तातें। कबहुँक ए आवहिं एहि नातें॥

दो. नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि।
यह संघटु तब हो जब पुन्य पुराकृत भूरि॥ २२२॥

बोली अपर कहेहु सखि नीका। एहिं बिआह अति हित सबहीं का॥
को कह संकर चाप कठोरा। ए स्यामल मृदुगात किसोरा॥
सबु असमंजस अहइ सयानी। यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी॥
सखि इन्ह कहँ को को अस कहहीं। बड़ प्रभा देखत लघु अहहीं॥
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी॥
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें। यह प्रतीति परिहरि न भोरें॥

जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी। तेहिं स्यामल बरु रचे बिचारी॥
तासु बचन सुनि सब हरषानीं। ऐसे हो कहहिं मुदु बानी॥

दो. हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दो तहँ तहँ परमानंद॥ २२३॥

पुर पूरब दिसि गे दो भा। जहँ धनुमख हित भूमि बना॥
अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सँवारी॥
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला। रचे जहाँ बेठहिं महिपाला॥
तेहि पाछें समीप चहुँ पासा। अपर मंच मंडली बिलासा॥
कछुक ऊँचि सब भाँति सुहा। बैठहिं नगर लोग जहँ जा॥
तिन्ह के निकट बिसाल सुहा। धवल धाम बहुबरन बना॥
जहँ बैठें देखहिं सब नारी। जथा जोगु निज कुल अनुहारी॥
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना॥

दो. सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात।
तन पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दो भ्रात॥ २२४॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने॥

निज निज रुचि सब लेंहिं बोला। सहित सनेह जाहिं दो भा॥
राम देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना॥
लव निमेष महँ भुवन निकाया। रचइ जासु अनुसासन माया॥
भगति हेतु सो दीनदयाला। चितवत चकित धनुष मखसाला॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलंबु त्रास मन माहीं॥
जासु त्रास डर कहुँ डर हो। भजन प्रभा देखावत सो॥
कहि बातें मृदु मधुर सुहां। कि बिदा बालक बरिआ॥

दो. सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दो भा।
गुर पद पंकज ना सिर बैठे आयसु पा॥ २२५॥

निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा। सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा॥
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी॥
मुनिबर सयन कीन्हि तब जा। लगे चरन चापन दो भा॥
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी॥
ते दो बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल पलोटत प्रीते॥
बारबार मुनि अग्या दीन्ही। रघुबर जा सयन तब कीन्ही॥
चापत चरन लखनु उर लाँ। सभय सप्रेम परम सचु पाँ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जलजाता॥

दो. उठे लखन निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान ॥
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥ २२६ ॥

सकल सौच करि जा नहा । नित्य निबाहि मुनिहि सिर ना ॥
समय जानि गुर आयसु पा । लेन प्रसून चले दो भा ॥
भूप बागु बर देखे जा । जहँ बसंत रितु रही लोभा ॥
लागे बिटप मनोहर नाना । बरन बरन बर बेलि बिताना ॥
नव पल्लव फल सुमान सुहा । निज संपति सुर रूख लजा ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥
मध्य बाग सरु सोह सुहावा । मनि सोपान बिचित्र बनावा ॥
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा । जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥

दो. बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत ।
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥ २२७ ॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालिगन । लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥
तेहि अवसर सीता तहँ आ । गिरिजा पूजन जननि पठा ॥
संग सखीं सब सुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी ॥

सर समीप गिरिजा गृह सोहा। बरनि न जा देखि मनु मोहा॥
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। ग मुदित मन गौरि निकेता॥
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा॥
एक सखी सिय संगु बिहा। ग रही देखन फुलवा॥
तेहि दो बंधु बिलोके जा। प्रेम बिबस सीता पहिं आ॥

दो. तासु दसा देखि सखिन्ह पुलक गात जलु नैन।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहि सब मृदु बैन॥ २२८॥

देखन बागु कुँर दु आ। बय किसोर सब भाँति सुहा॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी॥
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी। सिय हियँ अति उतकंठा जानी॥
एक कहइ नृपसुत ते आली। सुने जे मुनि सँग आ काली॥
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्ह स्वबस नगर नर नारी॥
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिहिं देखन जोगू॥
तासु वचन अति सियहि सुहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने॥
चली अग्र करि प्रिय सखि सो। प्रीति पुरातन लखइ न को॥

दो. सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत॥

चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ॥ २२९ ॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही ॥ मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही ॥
अस कहि फिरि चित तेहि ओरा । सिय मुख ससि भ नयन चकोरा ॥
भ बिलोचन चारु अचंचल । मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥
देखि सीय सोभा सुखु पावा । हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥
जनु बिरंचि सब निज निपुना । बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखा ॥
सुंदरता कहुँ सुंदर कर । छबिगृहँ दीपसिखा जनु बर ॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी । केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी ॥

दो. सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥ २३० ॥

तात जनकतनया यह सो । धनुषजग्य जेहि कारन हो ॥
पूजन गौरि सखीं लै आ । करत प्रकासु फिरइ फुलवा ॥
जासु बिलोकि अलोकिक सोभा । सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥
सो सबु कारन जान बिधाता । फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभा । मनु कुपंथ पगु धरइ न का ॥

मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी॥
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी। नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी॥
मंगन लहहि न जिन्ह कै नाहीं। ते नरबर थोरे जग माहीं॥

दो. करत बतकहि अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान॥ २३१॥

चितवहि चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ ग नृपकिसोर मनु चिंता॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी॥
लता ओट तब सखिन्ह लखा। स्यामल गौर किसोर सुहा॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥
थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें॥
अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी॥
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी॥

दो. लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दो भा।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगा॥ २३२॥

सोभा सीवँ सुभग दो बीरा। नील पीत जलजाभ सरीरा॥
मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के॥
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहा। श्रवन सुभग भूषन छबि छा॥
बिकट भृकुटि कच घूघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे॥
चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला॥
मुखछबि कहि न जा मोहि पाहीं। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं॥
उर मनि माल कंबु कल गीवा। काम कलभ कर भुज बलसींवा॥
सुमन समेत बाम कर दोना। सावँर कुँर सखी सुठि लोना॥

दो. केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान॥ २३३॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू॥
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दो रघुसिंघ निहारे॥
नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा॥
परबस सखिन्ह लखी जब सीता। भयउ गहरु सब कहहि सभीता॥
पुनि आब एहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ बिलंबु मातु भय मानी॥

धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरि अपनपउ पितुबस जाने॥

दो. देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि॥ २३४॥

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति॥
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी॥
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित भीतीं लिख लीन्ही॥
ग भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी॥
जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥
जय गज बदन षड़ानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभा बेदु नहिं जाना॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥

दो. पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥ २३५॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी॥
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥

मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
कीन्हेँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥
बिनय प्रेम बस भ भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरे। बोली गौरि हरषु हियँ भरे॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥

छं. मनु जाहिं राचे मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

सो. जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जा कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ २३६॥

हृदयँ सराहत सीय लोना। गुर समीप गवने दो भा॥
राम कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभा छुत छल नाहीं॥
सुमन पा मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहु भान्ह दीन्ही॥
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भ सुखारे॥

करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी॥
बिगत दिवसु गुरु आयसु पा। संध्या करन चले दो भा॥
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा। सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा॥
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं॥

दो. जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक॥ २३७॥

घटइ बढ़इ बिरहनि दुखदा। ग्रसइ राहु निज संधिहिं पा॥
कोक सिकप्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चंद्रमा तोही॥
बैदेही मुख पटतर दीन्हे। हो दोष बड़ अनुचित कीन्हे॥
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी। गुरु पहिं चले निसा बड़ि जानी॥
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा। आयसु पा कीन्ह बिश्रामा॥
बिगत निसा रघुनायक जागे। बंधु बिलोकि कहन अस लागे॥
उदउ अरुन अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुखदाता॥
बोले लखनु जोरि जुग पानी। प्रभु प्रभा सूचक मृदु बानी॥

दो. अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भ नृपति बलहीन॥ २३८॥

नृप सब नखत करहिं उजिआरी। टारि न सकहिं चाप तम भारी॥
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निसा अवसाना॥
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे। होहहिं टूटें धनुष सुखारे॥
उयउ भानु बिनु श्रम तम नासा। दुरे नखत जग तेजु प्रकासा॥
रबि निज उदय ब्याज रघुराया। प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया॥
तव भुज बल महिमा उदघाटी। प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी॥
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने। हो सुचि सहज पुनीत नहाने॥
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आ। चरन सरोज सुभग सिर ना॥
सतानंदु तब जनक बोला। कौसिक मुनि पहिं तुरत पठा॥
जनक बिनय तिन्ह आ सुना। हरषे बोलि लि दो भा॥

दो. सतानंदपद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जा।
चलहु तात मुनि कहे तब पठवा जनक बोला॥ २३९॥

सीय स्वयंबरु देखि जा। ईसु काहि धौं दे बड़ा॥
लखन कहा जस भाजनु सो। नाथ कृपा तव जापर हो॥
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी। दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी॥
पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुषमख साला॥

रंगभूमि आ दो भा। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पा॥
चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुबान जरठ नर नारी॥
देखी जनक भीर भै भारी। सुचि सेवक सब लि हँकारी॥
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू। आसन उचित देहू सब काहू॥

दो. कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि॥ २४०॥

राजकुँर तेहि अवसर आ। मनहुँ मनोहरता तन छा॥
गुन सागर नागर बर बीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा॥
राज समाज बिराजत रूरे। उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे॥
जिन्ह कें रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी॥
देखहिं रूप महा रनधीरा। मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहुँ भयानक मूरति भारी॥
रहे असुर छल छोनिप बेषा। तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा॥
पुरबासिन्ह देखे दो भा। नरभूषन लोचन सुखदा॥

दो. नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप॥ २४१॥

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसैं। सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें॥
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी। सिसु सम प्रीति न जाति बखानी॥
जोगिन्ह परम तत्वमय भासा। सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा॥
हरिभगतन्ह देखे दो भ्राता। इष्टदेव इव सब सुख दाता॥
रामहि चितव भायँ जेहि सीया। सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया॥
उर अनुभवति न कहि सक सो। कवन प्रकार कहै कबि को॥
एहि बिधि रहा जाहि जस भा। तेहिं तस देखे कोसलरा॥

दो. राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर।
सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर॥ २४२॥

सहज मनोहर मूरति दो। कोटि काम उपमा लघु सो॥
सरद चंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भावते जी के॥
चितवत चारु मार मनु हरनी। भावति हृदय जाति नहीं बरनी॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला॥
कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा॥
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं॥

पीत चौतनीं सिरन्हि सुहा। कुसुम कलीं बिच बीच बनां॥
रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ। जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ॥

दो. कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।
बृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल॥ २४३॥

कटि तूनीर पीत पट बाँधे। कर सर धनुष बाम बर काँधे॥
पीत जग्य उपबीत सुहा। नख सिख मंजु महाछबि छा॥
देखि लोग सब भ सुखारे। एकटक लोचन चलत न तारे॥
हरषे जनकु देखि दो भा। मुनि पद कमल गहे तब जा॥
करि बिनती निज कथा सुना। रंग अवनि सब मुनिहि देखा॥
जहँ जहँ जाहि कुँर बर दो। तहँ तहँ चकित चितव सबु को॥
निज निज रुख रामहि सबु देखा। को न जान कछु मरमु बिसेषा॥
भलि रचना मुनि नृप सन कहे। राजाँ मुदित महासुख लहे॥

दो. सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दो बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥ २४४॥

प्रभुहि देखि सब नृप हिँयँ हारे। जनु राकेस उदय भँ तारे॥

असि प्रतीति सब के मन माहीं। राम चाप तोरब सक नाहीं॥
बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला। मेलिहि सीय राम उर माला॥
अस बिचारि गवनहु घर भा। जसु प्रतापु बलु तेजु गवाँई॥
बिहसे अपर भूप सुनि बानी। जे अबिबेक अंध अभिमानी॥
तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा। बिनु तोरें को कुँरि बिआहा॥
एक बार कालउ किन होउ। सिय हित समर जितब हम सोउ॥
यह सुनि अवर महिप मुसकाने। धरमसील हरिभगत सयाने॥

सो. सीय बिआहबि राम गरब दूरि करि नृपन्ह के॥
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे॥ २४५॥

ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजा। मन मोदकन्हि कि भूख बुता॥
सिख हमारि सुनि परम पुनीता। जगदंबा जानहु जियँ सीता॥
जगत पिता रघुपतिहि बिचारी। भरि लोचन छबि लेहु निहारी॥
सुंदर सुखद सकल गुन रासी। ए दोउ बंधु संभु उर बासी॥
सुधा समुद्र समीप बिहा। मृगजलु निरखि मरहु कत धा॥
करहु जा जा कहुँ जो भावा। हम तौ आजु जनम फलु पावा॥
अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना। बरषहिं सुमन करहिं कल गाना॥

दो. जानि सुवसरु सीय तब पठ जनक बोला।
चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवां॥ २४६॥

सिय सोभा नहिं जा बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी॥
उपमा सकल मोहि लघु लागीं। प्राकृत नारि अंग अनुरागीं॥
सिय बरनि ते उपमा दे। कुकबि कहा अजसु को ले॥
जौ पटतरि तीय सम सीया। जग असि जुबति कहाँ कमनीया॥
गिरा मुखर तन अरध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी॥
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही। कहि रमासम किमि बैदेही॥
जौ छबि सुधा पयोनिधि हो। परम रूपमय कच्छप सो॥
सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू॥

दो. एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय समतूल॥ २४७॥

चलिं संग लै सखीं सयानी। गावत गीत मनोहर बानी॥
सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छबि भारी॥
भूषन सकल सुदेस सुहा। अंग अंग रचि सखिन्ह बना॥

रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी॥
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजा। बरषि प्रसून अपछरा गा॥
पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चित सकल भुआला॥
सीय चकित चित रामहि चाहा। भ मोहबस सब नरनाहा॥
मुनि समीप देखे दो भा। लगे ललकि लोचन निधि पा॥

दो. गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि॥
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि॥ २४८॥

राम रूपु अरु सिय छबि देखें। नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें॥
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं॥
हरु बिधि बेगि जनक जड़ता। मति हमारि असि देहि सुहा॥
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहु। सीय राम कर करै बिबाहू॥
जग भल कहहि भाव सब काहू। हठ कीन्हे अंतहुँ उर दाहू॥
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू। बरु साँवरो जानकी जोगू॥
तब बंदीजन जनक बौला। बिरिदावली कहत चलि आ॥
कह नृप जा कहहु पन मोरा। चले भाट हियँ हरषु न थोरा॥

दो. बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।

पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठा बिसाल ॥ २४९ ॥

नृप भुजबल बिधु सिवधनु राहू । गरु कठोर बिदित सब काहू ॥
रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गवँहिं सिधारे ॥
सो पुरारि कोदंडु कठोरा । राज समाज आजु जो तोरा ॥
त्रिभुवन जय समेत बैदेही ॥ बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ॥
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । भटमानी अतिसय मन माखे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुला । चले इष्टदेवन्ह सिर ना ॥
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं । चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दो. तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजा ।
मनहुँ पा भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआ ॥ २५० ॥

भूप सहस दस एकहि बारा । लगे उठावन टरइ न टारा ॥
डगइ न संभु सरासन कैसें । कामी बचन सती मनु जैसें ॥
सब नृप भ जोगु उपहासी । जैसें बिनु बिराग संन्यासी ॥
कीरति बिजय बीरता भारी । चले चाप कर बरबस हारी ॥
श्रीहत भ हारि हियँ राजा । बैठे निज निज जा समाजा ॥

नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने॥
दीप दीप के भूपति नाना। आ सुनि हम जो पनु ठाना॥
देव दनुज धरि मनुज सरीरा। बिपुल बीर आ रनधीरा॥

दो. कुँरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय।
पावनिहार बिरंचि जनु रचे न धनु दमनीय॥ २५१॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा। काहुँ न संकर चाप चढ़ावा॥
रहउ चढ़ाब तोरब भा। तिलु भरि भूमि न सके छड़ा॥
अब जनि को माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू॥
सुकृत जा जौं पनु परिहरँ। कुँरि कुआरि रहउ का करँ॥
जो जनतेँ बिनु भट भुबि भा। तौ पनु करि होतेँ न हँसा॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भ दुखारी॥
माखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें। रदपट फरकत नयन रिसौंहें॥

दो. कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
ना राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान॥ २५२॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ को हो। तेहिं समाज अस कहइ न को॥
कही जनक जसि अनुचित बानी। बिद्यमान रघुकुल मनि जानी॥
सुनहु भानुकुल पंकज भानू। कहउँ सुभा न कछु अभिमानू॥
जौ तुम्हारि अनुसासन पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना॥
नाथ जानि अस आयसु हो। कौतुकु करौं बिलोकि सो॥
कमल नाल जिमि चाफ चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं॥

दो. तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥ २५३॥

लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले॥
सकल लोक सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने॥
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भ पुनि पुनि पुलकाहीं॥
सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे॥
बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी॥
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा॥
सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा। हरषु बिषादु न कछु उर आवा॥

ठाढ़े भ उठि सहज सुभाँ। ठवनि जुबा मृगराजु लजाँ॥

दो. उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥ २५४॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने॥
भ बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा॥
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी॥
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भ सुखारी॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभा हमारे॥
तौ सिवधनु मृनाल की नां। तोरहुँ राम गनेस गोसां॥

दो. रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोला।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखा॥ २५५॥

सखि सब कौतुक देखनिहारे। जेठ कहावत हितू हमारे॥
को न बुझा कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं॥

रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
सो धनु राजकुँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं॥
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनि न रानी॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषे सुजसु सकल संसारा॥
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा॥

दो. मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥ २५६॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे॥
देबि तजि संसउ अस जानी। भंजब धनुष रामु सुनु रानी॥
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती॥
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही॥
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥
करहु सफल आपनि सेवका। करि हितु हरहु चाप गरुआ॥
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिँ तु सेवा॥
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी॥

दो. देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर ॥
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥ २५७ ॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा । पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी । समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥
सचिव सभय सिख दे न को । बुध समाज बड़ अनुचित हो ॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा । सिरस सुमन कन बेधि हीरा ॥
सकल सभा कै मति भै भोरी । अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरु रघुपतिहि निहारी ॥
अति परिताप सीय मन माही । लव निमेष जुग सब सय जाहीं ॥

दो. प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥ २५८ ॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
लोचन जलु रह लोचन कोना । जैसे परम कृपन कर सोना ॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर पनु साचा । रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥

तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहिं मोहि रघुबर कै दासी॥
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना॥
सियहि बिलोकि तके धनु कैसे। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसे॥

दो. लखन लखे रघुबंसमनि ताके हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु॥ २५९॥

दिसकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला॥
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा॥
चाप सपीप रामु जब आ। नर नारिन्ह सुर सुकृत मना॥
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू॥
भृगुपति केरि गरब गरुआ। सुर मुनिबरन्ह केरि कदरा॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा॥
संभुचाप बड बोहितु पा। चढे जा सब संगु बना॥
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहि को कड़हारू॥

दो. राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चित सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि॥ २६०॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही॥
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुँ करइ का सुधा तड़ागा॥
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें॥
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी॥
गुरहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा। अति लाघवँ उठा धनु लीन्हा॥
दमके दामिनि जिमि जब लय। पुनि नभ धनु मंडल सम भय॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥

छं. भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडे राम तुलसी जयति बचन उचारही॥

सो. संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबलु।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस॥ २६१॥

प्रभु दो चापखंड महि डारे। देखि लोग सब भ सुखारे॥

कोसिकरुप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाहु सुहावन॥
रामरूप राकेसु निहारी। बढ़त बीचि पुलकावलि भारी॥
बाजे नभ गहगहे निसाना। देवबधू नाचहिं करि गाना॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रसंसहि देहिं असीसा॥
बरिसहिं सुमन रंग बहु माला। गावहिं किंनर गीत रसाला॥
रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुषभंग धुनि जात न जानी॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी। भंजे राम संभुधनु भारी॥

दो. बंदी मागध सूतगन बिरुद बदहिं मतिधीर।
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर॥ २६२॥

झाँझि मृदंग संख सहना। भेरि ढोल दुंदुभी सुहा॥
बाजहिं बहु बाजने सुहा। जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गा॥
सखिन्ह सहित हरषी अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी॥
जनक लहे सुखु सोचु बिहा। पैरत थकें थाह जनु पा॥
श्रीहत भ भूप धनु टूटे। जैसें दिवस दीप छबि छूटे॥
सीय सुखहि बरनि केहि भाँती। जनु चातकी पा जलु स्वाती॥
रामहि लखनु बिलोकत कैसें। ससिहि चकोर किसोरकु जैसें॥

सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा॥

दो. संग सखीं सुदंर चतुर गावहिं मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥ २६३॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे। छबिगन मध्य महाछबि जैसें॥
कर सरोज जयमाल सुहा। बिस्व बिजय सोभा जेहिं छा॥
तन सकोचु मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेमु लखि परइ न काहू॥
जा समीप राम छबि देखी। रहि जनु कुँअरि चित्र अवरेखी॥
चतुर सखीं लखि कहा बुझा। पहिरावहु जयमाल सुहा॥
सुनत जुगल कर माल उठा। प्रेम बिबस पहिरा न जा॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥

सो. रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन॥ २६४॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे। खल भ मलिन साधु सब राजे॥
सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा॥

नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं। बार बार कुसुमांजलि छूटीं॥
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरदावलि उच्चरहीं॥
महि पाताल नाक जसु ब्यापा। राम बरी सिय भंजे चापा॥
करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि बित्त बिसारी॥
सोहति सीय राम कै जौरी। छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी॥
सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता। करति न चरन परस अति भीता॥

दो. गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि॥ २६५॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे। कूर कपूत मूढ़ मन माखे॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे॥
लेहु छड़ा सीय कह को। धरि बाँधहु नृप बालक दो॥
तोरें धनुषु चाड़ नहिं सर। जीवत हमहि कुँरि को बर॥
जौं बिदेहु कछु करै सहा। जीतहु समर सहित दो भा॥
साधु भूप बोले सुनि बानी। राजसमाजहि लाज लजानी॥
बलु प्रतापु बीरता बड़ा। नाक पिनाकहि संग सिधा॥
सो सूरता कि अब कहुँ पा। असि बुधि तौ बिधि मुहँ मसि ला॥

दो. देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा मदु कोहु।
लखन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु॥ २६६॥

बैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नाग अरि भागू॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिवद्रोही॥
लोभी लोलुप कल कीरति चह। अकलंकता कि कामी लह॥
हरि पद बिमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालचु नरनाहा॥
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सखीं लवा गं जहँ रानी॥
रामु सुभायँ चले गुरु पाहीं। सिय सनेहु बरनत मन माहीं॥
रानिन्ह सहित सोचबस सीया। अब धौं बिधिहि काह करनीया॥
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं॥

दो. अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहुँ मत्त गजगन निरखि सिंघकिसोरहि चोप॥ २६७॥

खरभरु देखि बिकल पुर नारीं। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं॥
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयसु भृगुकुल कमल पतंगा॥
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने॥
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा॥

सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन हो आवा॥
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते॥
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जने माल मृगछाला॥
कटि मुनि बसन तून दु बाँधें। धनु सर कर कुठारु कल काँधें॥

दो. सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जा सरुप।
धरि मुनितनु जनु बीर रसु आयउ जहँ सब भूप॥ २६८॥

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा॥
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आ खुटानी॥
जनक बहोरि आ सिरु नावा। सीय बोला प्रनामु करावा॥
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै ग सयानीं॥
बिस्वामित्रु मिले पुनि आ। पद सरोज मेले दो भा॥
रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा॥
रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन॥

दो. बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर॥
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापे कोपु सरीर॥ २६९॥

समाचार कहि जनक सुना। जेहि कारन महीप सब आ॥
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे॥
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥
बेगि देखा मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू॥
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी॥ सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी॥
भृगुपति कर सुभा सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता॥

दो. सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥ २७०॥

मासपारायण नवाँ विश्राम

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होहि के एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहि किन मोही। सुनि रिसा बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवका। अरि करनी करि करि लरा॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगा बिहा समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकां। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसां॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसा कह भृगुकुलकेतू॥

दो. रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँमार॥
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥ २७१॥

लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तौरें। देखा राम नयन के भोरें॥
छुत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करि कत रोसू।
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभा न मोरा॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥

दो. मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥ २७२॥

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥
इहाँ कुम्हड़बतिया को नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुसुत समुझि जने बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गा। हमरें कुल इन्ह पर न सुरा॥
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पा परि तुम्हारें॥
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥

दो. जो बिलोकि अनुचित कहैं छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गभीर॥ २७३॥

कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल कालबस निज कुल घालकु॥
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू॥
काल कवलु होहि छन माहीं। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकउ जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥
लखन कहे मुनि सुजस तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥

बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥

दो. सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
बिद्यमान रन पा रिपु कायर कथहिं प्रतापु॥ २७४॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरे कर घोरा॥
अब जनि दे दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा॥
कौसिक कहा छमि अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगें अपराधी गुरुद्रोही॥
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें॥
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेँ श्रम थोरें॥

दो. गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिरइ सूझ।
अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥ २७५॥

कहे लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा॥
माता पितहि उरिन भ नीकें। गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें॥

सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि ग ब्याज बड़ बाढ़ा॥
अब आनि ब्यवहरिआ बोली। तुरत दँ मैं थैली खोली॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा॥
भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही॥
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे॥

दो. लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥ २७६॥

नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करि न कोहू॥
जौं पै प्रभु प्रभा कछु जाना। तौ कि बराबरि करत अयाना॥
जौं लरिका कछु अचगरि करहीं। गुर पितु मातु मोद मन भरहीं॥
करि कृपा सिसु सेवक जानी। तुम्ह सम सील धीर मुनि ग्यानी॥
राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लखनु बहुरि मुसकाने॥
हँसत देखि नख सिख रिस ब्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी॥
गौर सरीर स्याम मन माहीं। कालकूटमुख पयमुख नाहीं॥
सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही। नीचु मीचु सम देख न मौहीं॥

दो. लखन कहे हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल॥ २७७॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया। परिहरि कोपु करि अब दाया॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने। बैठि होहिं पाय पिराने॥
जौ अति प्रिय तौ करि उपा। जोरि को बड़ गुनी बोला॥
बोलत लखनहिं जनकु डेराहीं। मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं॥
थर थर कापहिं पुर नर नारी। छोट कुमार खोट बड़ भारी॥
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी। रिस तन जरइ हो बल हानी॥
बोले रामहि दे निहोरा। बचउँ बिचारि बंधु लघु तोरा॥
मनु मलीन तनु सुंदर कैसें। बिष रस भरा कनक घटु जैसैं॥

दो. सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम।
गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम॥ २७८॥

अति बिनीत मृदु सीतल बानी। बोले रामु जोरि जुग पानी॥
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना। बालक बचनु करि नहिं काना॥
बररै बालक एकु सुभा। इन्हहि न संत बिदूषहिं का॥
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा॥

कृपा कोपु बधु बँधब गोसां। मो पर करि दास की ना॥
कहि बेगि जेहि बिधि रिस जा। मुनिनायक सो करौं उपा॥
कह मुनि राम जा रिस कैसें। अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें॥
एहि के कंठ कुठारु न दीन्हा। तौ मैं काह कोपु करि कीन्हा॥

दो. गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर।
परसु अछत देखउँ जित बैरी भूपकिसोर॥ २७९॥

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती। भा कुठारु कुंठित नृपघाती॥
भयउ बाम बिधि फिरे सुभा। मोरे हृदयँ कृपा कसि का॥
आजु दया दुखु दुसह सहावा। सुनि सौमित्र बिहसि सिरु नावा॥
बा कृपा मूरति अनुकूला। बोलत बचन झरत जनु फूला॥
जौं पै कृपाँ जरिहिं मुनि गाता। क्रोध भँ तनु राख बिधाता॥
देखु जनक हठि बालक एहू। कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू॥
बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा। देखत छोट खोट नृप ढोटा॥
बिहसे लखनु कहा मन माहीं। मूदें आँखि कतहुँ को नाहीं॥

दो. परसुरामु तब राम प्रति बोले उर अति क्रोधु।
संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु॥ २८०॥

बंधु कहइ कटु संमत तोरें। तू छल बिनय करसि कर जोरें॥
करु परितोषु मोर संग्रामा। नाहिं त छाड़ कहाब रामा॥
छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही। बंधु सहित न त मारउँ तोही॥
भृगुपति बकहिं कुठार उठाँ। मन मुसकाहिं रामु सिर नाँ॥
गुनह लखन कर हम पर रोषू। कतहुँ सुधाहु ते बड़ दोषू॥
टेढ़ जानि सब बंदइ काहू। बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू॥
राम कहे रिस तजि मुनीसा। कर कुठारु आगें यह सीसा॥
जेंहिं रिस जा करि सो स्वामी। मोहि जानि आपन अनुगामी॥

दो. प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु बिप्रबर रोसु।
बेषु बिलोकें कहेसि कछु बालकहू नहिं दोसु॥ २८१॥

देखि कुठार बान धनु धारी। भै लरिकहि रिस बीरु बिचारी॥
नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा। बंस सुभायँ उतरु तेंहिं दीन्हा॥
जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नां। पद रज सिर सिसु धरत गोसां॥
छमहु चूक अनजानत केरी। चहि बिप्र उर कृपा घनेरी॥
हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा॥ कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा॥
राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहारा॥

देव एकु गुनु धनुष हमारें। नव गुन परम पुनीत तुम्हारें॥
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु बिप्र अपराध हमारे॥

दो. बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बंधु सम बाम॥ २८२॥

निपटहिं द्विज करि जानहि मोही। मैं जस बिप्र सुनावउँ तोही॥
चाप स्रुवा सर आहुति जानू। कोप मोर अति घोर कृसानु॥
समिधि सेन चतुरंग सुहा। महा महीप भ पसु आ॥
मै एहि परसु काटि बलि दीन्हे। समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्हे॥
मोर प्रभा बिदित नहिं तोरें। बोलसि निदरि बिप्र के भोरें॥
भंजे चापु दापु बड़ बाढ़ा। अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढ़ा॥
राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी॥
छुतहिं टूट पिनाक पुराना। मैं कहि हेतु करौं अभिमाना॥

दो. जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहिं माथ॥ २८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक हो बलवाना॥

जौं रन हमहि पचारै को। लरहिं सुखेन कालु किन हो॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंकु तेहिं पावँर आना॥
कहउँ सुभा न कुलहि प्रसंसी। कालहु डरहिं न रन रघुबंसी॥
बिप्रबंस कै असि प्रभुता। अभय हो जो तुम्हहि डेरा॥
सुनु मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के॥
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥
देत चापु आपुहिं चलि गय। परसुराम मन बिसमय भय॥

दो. जाना राम प्रभा तब पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु अमात॥ २८४॥

जय रघुबंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानु॥
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी॥
बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अति नागर॥
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय सरीर छबि कोटि अनंगा॥
करौं काह मुख एक प्रसंसा। जय महेस मन मानस हंसा॥
अनुचित बहुत कहेँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दो भ्राता॥
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू। भृगुपति ग बनहि तप हेतू॥
अपभयँ कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवँहिं पराने॥

दो. देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं प्रभु पर बरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल॥ २८५॥

अति गहगहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे॥
जूथ जूथ मिलि सुमुख सुनयनीं। करहिं गान कल कोकिलबयनी॥
सुखु बिदेह कर बरनि न जा। जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पा॥
गत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधु उदयँ चकोरकुमारी॥
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजे रामा॥
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भां। अब जो उचित सो कहि गोसा॥
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना। रहा बिबाहु चाप आधीना॥
टूटतहीं धनु भयउ बिबाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहु॥

दो. तदपि जा तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर बेद बिदित आचारु॥ २८६॥

दूत अवधपुर पठवहु जा। आनहिं नृप दसरथहि बोला॥
मुदित रा कहि भलेहिं कृपाला। पठ दूत बोलि तेहि काला॥
बहुरि महाजन सकल बोला। आ सबन्हि सादर सिर ना॥

हाट बाट मंदिर सुरबासा। नगरु सँवारहु चारिहुँ पासा॥
हरषि चले निज निज गृह आ। पुनि परिचारक बोलि पठा॥
रचहु बिचित्र बितान बना। सिर धरि बचन चले सचु पा॥
पठ बोलि गुनी तिन्ह नाना। जे बितान बिधि कुसल सुजाना॥
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा। बिरचे कनक कदलि के खंभा॥

दो. हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल।
रचना देखि बिचित्र अति मनु बिरंचि कर भूल॥ २८७॥

बेनि हरित मनिमय सब कीन्हे। सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हे॥
कनक कलित अहिबेल बना। लखि नहि परइ सपरन सुहा॥
तेहि के रचि पचि बंध बना। बिच बिच मुकता दाम सुहा॥
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा। चीरि कोरि पचि रचे सरोजा॥
कि भृंग बहुरंग बिहंगा। गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा॥
सुर प्रतिमा खंभन गढ़ी काढ़ी। मंगल द्रब्य लिँ सब ठाढ़ी॥
चौंकें भाँति अनेक पुरां। सिंधुर मनिमय सहज सुहा॥

दो. सौरभ पल्लव सुभग सुठि कि नीलमनि कोरि॥
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि॥ २८८॥

रचे रुचिर बर बंदनिबारे। मनहुँ मनोभवँ फंद सँवारे॥
मंगल कलस अनेक बना। ध्वज पताक पट चमर सुहा॥
दीप मनोहर मनिमय नाना। जा न बरनि बिचित्र बिताना॥
जेहिं मंडप दुलहिनि बैदेही। सो बरनै असि मति कबि केही॥
दूलहु रामु रूप गुन सागर। सो बितानु तिहुँ लोक उजागर॥
जनक भवन कै सौभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखि तैसी॥
जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी। तेहि लघु लगहिं भुवन दस चारी॥
जो संपदा नीच गृह सोहा। सो बिलोकि सुरनायक मोहा॥

दो. बसइ नगर जेहि लच्छ करि कपट नारि बर बेषु॥
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेषु॥ २८९॥

पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन॥
भूप द्वार तिन्ह खबरि जना। दसरथ नृप सुनि लि बोला॥
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपु उठि लीन्ही॥
बारि बिलोचन बाचत पाँती। पुलक गात आ भरि छाती॥
रामु लखनु उर कर बर चीठी। रहि ग कहत न खाटी मीठी॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची। हरषी सभा बात सुनि साँची॥

खेलत रहे तहाँ सुधि पा। आ भरतु सहित हित भा॥
पूछत अति सनेहँ सकुचा। तात कहाँ तें पाती आ॥

दो. कुसल प्रानप्रिय बंधु दो अहहिं कहहु केहिं देस।
सुनि सनेह साने बचन बाची बहुरि नरेस॥ २९०॥

सुनि पाती पुलके दो भ्राता। अधिक सनेहु समात न गाता॥
प्रीति पुनीत भरत कै देखी। सकल सभाँ सुखु लहे बिसेषी॥
तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर बचन उचारे॥
भैया कहहु कुसल दो बारे। तुम्ह नीकें निज नयन निहारे॥
स्यामल गौर धरें धनु भाथा। बय किसोर कौसिक मुनि साथा॥
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभा। प्रेम बिबस पुनि पुनि कह रा॥
जा दिन तें मुनि ग लवा। तब तें आजु साँचि सुधि पा॥
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने। सुनि प्रिय बचन दूत मुसकाने॥

दो. सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न को।
रामु लखनु जिन्ह के तनय बिस्व बिभूषन दो॥ २९१॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे। पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे॥

जिन्ह के जस प्रताप कें आगे। ससि मलीन रबि सीतल लागे॥
तिन्ह कहँ कहि नाथ किमि चीन्हे। देखि रबि कि दीप कर लीन्हे॥
सीय स्वयंबर भूप अनेका। समिटे सुभट एक तें एका॥
संभु सरासनु काहुँ न टारा। हारे सकल बीर बरिआरा॥
तीनि लोक महँ जे भटमानी। सभ कै सकति संभु धनु भानी॥
सकइ उठा सरासुर मेरू। सो हियँ हारि गयउ करि फेरू॥
जेहि कौतुक सिवसैलु उठावा। सो तेहि सभाँ पराभउ पावा॥

दो. तहाँ राम रघुबंस मनि सुनि महा महिपाल।
भंजे चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल॥ २९२॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आ। बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखा॥
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा। करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा॥
राजन रामु अतुलबल जैसें। तेज निधान लखनु पुनि तैसें॥
कंपहि भूप बिलोकत जाकें। जिमि गज हरि किसोर के ताकें॥
देव देखि तव बालक दो। अब न आँखि तर आवत को॥
दूत बचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीर रस पागी॥
सभा समेत रा अनुरागे। दूतन्ह देन निछावरि लागे॥
कहि अनीति ते मूदहिं काना। धरमु बिचारि सबहिं सुख माना॥

दो. तब उठि भूप बसिष्ठ कहुँ दीन्हि पत्रिका जा।
कथा सुना गुरहि सब सादर दूत बोला॥ २९३॥

सुनि बोले गुर अति सुखु पा। पुन्य पुरुष कहुँ महि सुख छा॥
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाँ। धरमसील पहिं जाहिं सुभाँ॥
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी। तसि पुनीत कौसल्या देबी॥
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं। भयउ न है को होने नाहीं॥
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड़ काकें। राजन राम सरिस सुत जाकें॥
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी। गुन सागर बर बालक चारी॥
तुम्ह कहुँ सर्ब काल कल्याना। सजहु बरात बजा निसाना॥

दो. चलहु बेगि सुनि गुर बचन भलेहिं नाथ सिरु ना।
भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बासु देवा॥ २९४॥

राजा सबु रनिवास बोला। जनक पत्रिका बाचि सुना॥
सुनि संदेसु सकल हरषानीं। अपर कथा सब भूप बखानीं॥
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी। मनहुँ सिखिनि सुनि बारिद बनी॥

मुदित असीस देहिं गुरु नारीं। अति आनंद मगन महतारीं॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती। हृदयँ लगा जुड़ावहिं छाती॥
राम लखन कै कीरति करनी। बारहिं बार भूपबर बरनी॥
मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधा। रानिन्ह तब महिदेव बोला॥
दि दान आनंद समेता। चले बिप्रबर आसिष देता॥

सो. जाचक लि हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि बिधि।
चिरु जीवहुँ सुत चारि चक्रबर्ति दसरत्थ के॥ २९५॥

कहत चले पहिरें पट नाना। हरषि हने गहगहे निसाना॥
समाचार सब लोगन्ह पा। लागे घर घर होने बधा॥
भुवन चारि दस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू॥
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे। मग गृह गलीं सँवारन लागे॥
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि। राम पुरी मंगलमय पावनि॥
तदपि प्रीति कै प्रीति सुहा। मंगल रचना रची बना॥
ध्वज पताक पट चामर चारु। छावा परम बिचित्र बजारू॥
कनक कलस तोरन मनि जाला। हरद दूब दधि अच्छत माला॥

दो. मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बना।

बीथीं सीचीं चतुरसम चौकें चारु पुरा ॥ २९६ ॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि । सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि ॥
बिधुबदनीं मृग सावक लोचनि । निज सरुप रति मानु बिमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुल बानीं । सुनिकल रव कलकंठि लजानीं ॥
भूप भवन किमि जा बखाना । बिस्व बिमोहन रचे बिताना ॥
मंगल द्रब्य मनोहर नाना । राजत बाजत बिपुल निसाना ॥
कतहुँ बिरिद बंदी उच्चरहीं । कतहुँ बेद धुनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुंदरि मंगल गीता । लै लै नामु रामु अरु सीता ॥
बहुत उछाहु भवनु अति थोरा । मानहुँ उमगि चला चहु ओरा ॥

दो. सोभा दसरथ भवन कइ को कबि बरनै पार ।
जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार ॥ २९७ ॥

भूप भरत पुनि लि बोला । हय गय स्यंदन साजहु जा ॥
चलहु बेगि रघुबीर बराता । सुनत पुलक पूरे दो भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बोला । आयसु दीन्ह मुदित उठि धा ॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । बरन बरन बर बाजि बिराजे ॥
सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अय इव जरत धरत पग धरनी ॥

नाना जाति न जाहिं बखाने। निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने॥
तिन्ह सब छयल भ असवारा। भरत सरिस बय राजकुमारा॥
सब सुंदर सब भूषनधारी। कर सर चाप तून कटि भारी॥

दो. छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नबीन।
जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रबीन॥ २९८॥

बाँधे बिरद बीर रन गाढ़े। निकसि भ पुर बाहेर ठाढ़े॥
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना। हरषहिं सुनि सुनि पवन निसाना॥
रथ सारथिन्ह बिचित्र बना। ध्वज पताक मनि भूषन ला॥
चवँर चारु किंकिन धुनि करही। भानु जान सोभा अपहरहीं॥
सावँकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते॥
सुंदर सकल अलंकृत सोहे। जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे॥
जे जल चलहिं थलहि की ना। टाप न बूड़ बेग अधिका॥
अस्त्र सस्त्र सबु साजु बना। रथी सारथिन्ह लि बोला॥

दो. चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात।
होत सगुन सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात॥ २९९॥

कलित करिबरन्हि परीं अँबारीं। कहि न जाहिं जेहि भाँति सँवारीं॥
चले मत्तगज घंट बिराजी। मनहुँ सुभग सावन घन राजी॥
बाहन अपर अनेक बिधाना। सिबिका सुभग सुखासन जाना॥
तिन्ह चढ़ि चले बिप्रबर बृन्दा। जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा॥
मागध सूत बंदि गुनगायक। चले जान चढ़ि जो जेहि लायक॥
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती। चले बस्तु भरि अगनित भाँती॥
कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। बिबिध बस्तु को बरनै पारा॥
चले सकल सेवक समुदा। निज निज साजु समाजु बना॥

दो. सब कें उर निर्भर हरषु पूरित पुलक सरीर।
कबहिं देखिबे नयन भरि रामु लखनू दो बीर॥ ३००॥

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हिंस चहु ओरा॥
निदरि घनहि घुर्म्मरहिं निसाना। निज परा कछु सुनि न काना॥
महा भीर भूपति के द्वारें। रज हो जा पषान पबारें॥
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारीं। लिँएँ आरती मंगल थारी॥
गावहिं गीत मनोहर नाना। अति आनंदु न जा बखाना॥
तब सुमंत्र दु स्पंदन साजी। जोते रबि हय निंदक बाजी॥
दो रथ रुचिर भूप पहिं आने। नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने॥

राज समाजु एक रथ साजा। दूसर तेज पुंज अति भ्राजा॥

दो. तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढ़ा नरेसु।
आपु चढ़े स्पंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु॥ ३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसें। सुर गुर संग पुरंदर जैसें॥
करि कुल रीति बेद बिधि रा। देखि सबहि सब भाँति बना॥
सुमिरि रामु गुर आयसु पा। चले महीपति संख बजा॥
हरषे बिबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता॥
भयउ कोलाहल हय गय गाजे। ब्योम बरात बाजने बाजे॥
सुर नर नारि सुमंगल गा। सरस राग बाजहिं सहना॥
घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं। सरव करहिं पाक फहराहीं॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना। हास कुसल कल गान सुजाना।

दो. तुरग नचावहिं कुँअर बर अकनि मृदंग निसान॥
नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान॥ ३०२॥

बनइ न बरनत बनी बराता। होहिं सगुन सुंदर सुभदाता॥
चारा चाषु बाम दिसि ले। मनहुँ सकल मंगल कहि दे॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरसु सब काहूँ पावा॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघट सवाल आव बर नारी॥
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा। सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा॥
मृगमाला फिरि दाहिनि आ। मंगल गन जनु दीन्हि देखा॥
छेमकरी कह छेम बिसेषी। स्यामा बाम सुतरु पर देखी॥
सनमुख आयउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दु बिप्र प्रबीना॥

दो. मंगलमय कल्यानमय अभिमत फल दातार।
जनु सब साचे होन हित भ सगुन एक बार॥ ३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकें। सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें॥
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता। समधी दसरथु जनकु पुनीता॥
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे। अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे॥
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना। हय गय गाजहिं हने निसाना॥
आवत जानि भानुकुल केतू। सरितन्हि जनक बँधा सेतू॥
बीच बीच बर बास बना। सुरपुर सरिस संपदा छा॥
असन सयन बर बसन सुहा। पावहिं सब निज निज मन भा॥
नित नूतन सुख लखि अनुकूले। सकल बरातिन्ह मंदिर भूले॥

दो. आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान॥ ३०४॥

मासपारायणदसवाँ विश्राम

कनक कलस भरि कोपर थारा। भाजन ललित अनेक प्रकारा॥
भरे सुधासम सब पकवाने। नाना भाँति न जाहिं बखाने॥
फल अनेक बर बस्तु सुहां। हरषि भेंट हित भूप पठां॥
भूषन बसन महामनि नाना। खग मृग हय गय बहुबिधि जाना॥
मंगल सगुन सुगंध सुहा। बहुत भाँति महिपाल पठा॥
दधि चिरा उपहार अपारा। भरि भरि काँवरि चले कहारा॥
अगवानन्ह जब दीखि बराता।उर आनंदु पुलक भर गाता॥
देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन्ह हने निसाना॥

दो. हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल।
जनु आनंद समुद्र दु मिलत बिहा सुबेल॥ ३०५॥

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदित देव दुंदुभीं बजावहिं॥
बस्तु सकल राखीं नृप आगें। बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागें॥
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा। भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा॥

करि पूजा मान्यता बड़ा। जनवासे कहुँ चले लवा॥
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं। देखि धनहु धन मदु परिहरहीं॥
अति सुंदर दीन्हे जनवासा। जहँ सब कहुँ सब भाँति सुपासा॥
जानी सियँ बरात पुर आ। कछु निज महिमा प्रगटि जना॥
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोला। भूप पहुन करन पठा॥

दो. सिधि सब सिय आयसु अकनि गं जहाँ जनवास।
लिँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास॥ ३०६॥

निज निज बास बिलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती॥
बिभव भेद कछु को न जाना। सकल जनक कर करहिं बखाना॥
सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी॥
पितु आगमनु सुनत दो भा। हृदयँ न अति आनंदु अमा॥
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं। पितु दरसन लालचु मन माहीं॥
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी। उपजा उर संतोषु बिसेषी॥
हरषि बंधु दो हृदयँ लगा। पुलक अंग अंबक जल छा॥
चले जहाँ दसरथु जनवासे। मनहुँ सरोबर तके पिआसे॥

दो. भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत।

उठे हरषि सुखसिंधु महुँ चले थाह सी लेत ॥ ३०७ ॥

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । बार बार पद रज धरि सीसा ॥
कौसिक रा लिये उर ला । कहि असीस पूछी कुसला ॥
पुनि दंडवत करत दो भा । देखि नृपति उर सुखु न समा ॥
सुत हियँ ला दुसह दुख मेटे । मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे ॥
पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह ना । प्रेम मुदित मुनिबर उर ला ॥
बिप्र बृंद बंदे दुहुँ भां । मन भावती असीसें पां ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । लि उठा ला उर रामा ॥
हरषे लखन देखि दो भ्राता । मिले प्रेम परिपूरित गाता ॥

दो. पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत ।
मिले जथाबिधि सबहि प्रभु परम कृपाल बिनीत ॥ ३०८ ॥

रामहि देखि बरात जुड़ानी । प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुत चारी । जनु धन धरमादिक तनुधारी ॥
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी । मुदित नगर नर नारि बिसेषी ॥
सुमन बरिसि सुर हनहिं निसाना । नाकनटीं नाचहिं करि गाना ॥
सतानंद अरु बिप्र सचिव गन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥

सहित बरात रा सनमाना। आयसु मागि फिरे अगवाना॥
प्रथम बरात लगन तें आ। तातें पुर प्रमोदु अधिका॥
ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं। बढ़हुँ दिवस निसि बिधि सन कहहीं॥

दो. रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दो राज।
जहँ जहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज॥ ।३०९॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथ सुकृत रामु धरें देही॥
इन्ह सम काँहु न सिव अवराधे। काहिँ न इन्ह समान फल लाधे॥
इन्ह सम को न भयउ जग माहीं। है नहिं कतहूँ होने नाहीं॥
हम सब सकल सुकृत कै रासी। भ जग जनमि जनकपुर बासी॥
जिन्ह जानकी राम छबि देखी। को सुकृती हम सरिस बिसेषी॥
पुनि देखब रघुबीर बिआहू। लेब भली बिधि लोचन लाहू॥
कहहिं परसपर कोकिलबयनीं। एहि बिआहँ बड़ लाभु सुनयनीं॥
बड़ें भाग बिधि बात बना। नयन अतिथि होहहिं दो भा॥

दो. बारहिं बार सनेह बस जनक बोलाब सीय।
लेन आहहिं बंधु दो कोटि काम कमनीय॥ ३१०॥

बिबिध भाँति होहि पहुना। प्रिय न काहि अस सासुर मा॥
तब तब राम लखनहि निहारी। होहहिं सब पुर लोग सुखारी॥
सखि जस राम लखनकर जोटा। तैसे भूप संग दु ढोटा॥
स्याम गौर सब अंग सुहा। ते सब कहहिं देखि जे आ॥
कहा एक मैं आजु निहारे। जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे॥
भरतु रामही की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नर नारी॥
लखनु सत्रुसूदनु एकरूपा। नख सिख ते सब अंग अनूपा॥
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं। उपमा कहुँ त्रिभुवन को नाहीं॥

छं. उपमा न को कह दास तुलसी कतहुँ कबि कोबिद कहैं।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से ए अहैं॥
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं॥
ब्याहिहुँ चारि भा एहिं पुर हम सुमंगल गावहीं॥

सो. कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन।
सखि सबु करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दो॥ ३११॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। आनँद उमगि उमगि उर भरहीं॥
जे नृप सीय स्वयंबर आ। देखि बंधु सब तिन्ह सुख पा॥

कहत राम जसु बिसद बिसाला। निज निज भवन ग महिपाला॥
ग बीति कुछ दिन एहि भाँती। प्रमुदित पुरजन सकल बराती॥
मंगल मूल लगन दिनु आवा। हिम रितु अगहनु मासु सुहावा॥
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू। लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू॥
पठै दीन्हि नारद सन सो। गनी जनक के गनकन्ह जो॥
सुनी सकल लोगन्ह यह बाता। कहहिं जोतिषी आहिं बिधाता॥

दो. धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल।
बिप्रन्ह कहे बिदेह सन जानि सगुन अनुकुल॥ ३१२॥

उपरोहितहि कहे नरनाहा। अब बिलंब कर कारनु काहा॥
सतानंद तब सचिव बोला। मंगल सकल साजि सब ल्या॥
संख निसान पनव बहु बाजे। मंगल कलस सगुन सुभ साजे॥
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता। करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता॥
लेन चले सादर एहि भाँती। ग जहाँ जनवास बराती॥
कोसलपति कर देखि समाजू। अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू॥
भयउ समउ अब धारि पा। यह सुनि परा निसानहिं घा॥
गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा। चले संग मुनि साधु समाजा॥

दो.  भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि।
लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि॥ ३१३॥

सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिं सुमन बजा निसाना॥
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा। चढ़े बिमानन्हि नाना जूथा॥
प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू। चले बिलोकन राम बिआहू॥
देखि जनकपुरु सुर अनुरागे। निज निज लोक सबहिं लघु लागे॥
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना। रचना सकल अलौकिक नाना॥
नगर नारि नर रूप निधाना। सुघर सुधरम सुसील सुजाना॥
तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं। भ नखत जनु बिधु उजिआरीं॥
बिधिहि भयह आचरजु बिसेषी। निज करनी कछु कतहुँ न देखी॥

दो.  सिवँ समुझा देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदयँ बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु॥ ३१४॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं॥
करतल होहिं पदारथ चारी। ते सिय रामु कहे कामारी॥
एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा। पुनि आगें बर बसह चलावा॥
देवन्ह देखे दसरथु जाता। महामोद मन पुलकित गाता॥

साधु समाज संग महिदेवा। जनु तनु धरें करहिं सुख सेवा॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी। जनु अपबरग सकल तनुधारी॥
मरकत कनक बरन बर जोरी। देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी॥
पुनि रामहि बिलोकि हियँ हरषे। नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे॥

दो. राम रूपु नख सिख सुभग बारहिं बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि॥ ३१५॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा। तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा॥
ब्याह बिभूषन बिबिध बना। मंगल सब सब भाँति सुहा॥
सरद बिमल बिधु बदनु सुहावन। नयन नवल राजीव लजावन॥
सकल अलौकिक सुंदरता। कहि न जा मनहीं मन भा॥
बंधु मनोहर सोहहिं संगा। जात नचावत चपल तुरंगा॥
राजकुँर बर बाजि देखावहिं। बंस प्रसंसक बिरिद सुनावहिं॥
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे। गति बिलोकि खगनायकु लाजे॥
कहि न जा सब भाँति सुहावा। बाजि बेषु जनु काम बनावा॥

छं. जनु बाजि बेषु बना मनसिजु राम हित अति सोह।
आपनें बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोह॥

जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे।
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे॥

दो. प्रभु मनसहिं लयलीन मनु चलत बाजि छबि पाव।
भूषित उड़गन तड़ित घनु जनु बर बरहि नचाव॥ ३१६॥

जेहिं बर बाजि रामु असवारा। तेहि सारदउ न बरनै पारा॥
संकरु राम रूप अनुरागे। नयन पंचदस अति प्रिय लागे॥
हरि हित सहित रामु जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे॥
निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठइ नयन जानि पछिताने॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते डेवढ़ लोचन लाहू॥
रामहि चितव सुरेस सुजाना। गौतम श्रापु परम हित माना॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। आजु पुरंदर सम को नाहीं॥
मुदित देवगन रामहि देखी। नृपसमाज दुहुँ हरषु बिसेषी॥

छं. अति हरषु राजसमाज दुहु दिसि दुंदुभीं बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी॥
एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानि सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं॥

दो. सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि॥ ३१७॥

बिधुबदनीं सब सब मृगलोचनि। सब निज तन छबि रति मदु मोचनि॥
पहिरें बरन बरन बर चीरा। सकल बिभूषन सजें सरीरा॥
सकल सुमंगल अंग बनाँ। करहिं गान कलकंठि लजाँ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं। चालि बिलोकि काम गज लाजहिं॥
बाजहिं बाजने बिबिध प्रकारा। नभ अरु नगर सुमंगलचारा॥
सची सारदा रमा भवानी। जे सुरतिय सुचि सहज सयानी॥
कपट नारि बर बेष बना। मिलीं सकल रनिवासहिं जा॥
करहिं गान कल मंगल बानीं। हरष बिबस सब काहुँ न जानी॥

छं. को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्मु बर परिछन चली।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली॥
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हियँ हरषित भ॥
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुंग पुलकावलि छ॥

दो. जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम बर बेषु।

सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेषु ॥ ३१८ ॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी । परिछनि करहिं मुदित मन रानी ॥
बेद बिहित अरु कुल आचारू । कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू ॥
पंच सबद धुनि मंगल गाना । पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा । राम गमनु मंडप तब कीन्हा ॥
दसरथु सहित समाज बिराजे । बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥
समयँ समयँ सुर बरषहिं फूला । सांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल हो । आपनि पर कछु सुनइ न को ॥
एहि बिधि रामु मंडपहिं आ । अरघु दे आसन बैठा ॥

छं. बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुखु पावहीं ॥
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुरबर बिप्र बेष बना कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं ॥

दो. ना बारी भाट नट राम निछावरि पा ।
मुदित असीसहिं ना सिर हरषु न हृदयँ समा ॥ ३१९ ॥

मिले जनकु दसरथु अति प्रीतीं। करि बैदिक लौकिक सब रीतीं॥
मिलत महा दो राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कबि लाजे॥
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी। इन्ह सम ए उपमा उर आनी॥
सामध देखि देव अनुरागे। सुमन बरषि जसु गावन लागे॥
जगु बिरंचि उपजावा जब तें। देखे सुने ब्याह बहु तब तें॥
सकल भाँति सम साजु समाजू। सम समधी देखे हम आजू॥
देव गिरा सुनि सुंदर साँची। प्रीति अलौकिक दुहु दिसि माची॥
देत पाँवड़े अरघु सुहा। सादर जनकु मंडपहिं ल्या॥

छं. मंडपु बिलोकि बिचीत्र रचनाँ रुचिरताँ मुनि मन हरे॥
निज पानि जनक सुजान सब कहुँ आनि सिंघासन धरे॥
कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे बिनय करि आसिष लही।
कौसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही॥

दो. बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस।
दि दिब्य आसन सबहि सब सन लही असीस॥ ३२०॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा। जानि ईस सम भा न दूजा॥
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ा। कहि निज भाग्य बिभव बहुता॥

पूजे भूपति सकल बराती। समधि सम सादर सब भाँती॥
आसन उचित दि सब काहू। कहौं काह मूख एक उछाहू॥
सकल बरात जनक सनमानी। दान मान बिनती बर बानी॥
बिधि हरि हरु दिसिपति दिनरा। जे जानहिं रघुबीर प्रभा॥
कपट बिप्र बर बेष बनाँ। कौतुक देखहिं अति सचु पाँ॥
पूजे जनक देव सम जानें। दि सुआसन बिनु पहिचानें॥

छं. पहिचान को केहि जान सबहिं अपान सुधि भोरी भ।
आनंद कंदु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनँद म॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन द।
अवलोकि सीलु सुभा प्रभु को बिबुध मन प्रमुदित भ॥

दो. रामचंद्र मुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर॥ ३२१॥

समउ बिलोकि बसिष्ठ बोला। सादर सतानंदु सुनि आ॥
बेगि कुँरि अब आनहु जा। चले मुदित मुनि आयसु पा॥
रानी सुनि उपरोहित बानी। प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी॥
बिप्र बधू कुलबृद्ध बोलां। करि कुल रीति सुमंगल गां॥

नारि बेष जे सुर बर बामा। सकल सुभायँ सुंदरी स्यामा॥
तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारीं। बिनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं॥
बार बार सनमानहिं रानी। उमा रमा सारद सम जानी॥
सीय सँवारि समाजु बना। मुदित मंडपहिं चलीं लवा॥

छं. चलि ल्या सीतहि सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनीं।
नवसप्त साजें सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनीं॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गती बर बाजहीं॥

दो. सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय।
छबि ललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय॥ ३२२॥

सिय सुंदरता बरनि न जा। लघु मति बहुत मनोहरता॥
आवत दीखि बरातिन्ह सीता॥ रूप रासि सब भाँति पुनीता॥
सबहि मनहिं मन किए प्रनामा। देखि राम भ पूरनकामा॥
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता। कहि न जा उर आनँदु जेता॥
सुर प्रनामु करि बरसहिं फूला। मुनि असीस धुनि मंगल मूला॥
गान निसान कोलाहलु भारी। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी॥

एहि बिधि सीय मंडपहिं आ। प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिरा॥
तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू॥

छं. आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं॥
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो सब लिहिं परिचारक रहैं॥ १॥

कुल रीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर कियो।

एहि भाँति देव पुजा सीतहि सुभग सिंघासनु दियो॥

सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेम काहु न लखि परै॥

मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसें करै॥ २॥

दो. होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं।
बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं॥ ३२३॥

जनक पाटमहिषी जग जानी। सीय मातु किमि जा बखानी॥
सुजसु सुकृत सुख सुदंरता। सब समेटि बिधि रची बना॥
समउ जानि मुनिबरन्ह बोला। सुनत सुआसिनि सादर ल्या॥
जनक बाम दिसि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनि जनु मयना॥
कनक कलस मनि कोपर रूरे। सुचि सुंगध मंगल जल पूरे॥
निज कर मुदित रायँ अरु रानी। धरे राम के आगें आनी॥
पढ़हिं बेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसरु जानी॥
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥

छं. लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं।
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं॥ १॥

जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकम।
मकरंदु जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरन॥
करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे से अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय सब कहै॥ २॥

बर कुँरि करतल जोरि साखोचारु दो कुलगुर करैं।
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आँनद भरैं॥
सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो॥ ३॥

हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर द।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति न॥
क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेहु मूरति सावँरी।
करि होम बिधिवत गाँठि जोरी होन लागी भावँरी॥ ४॥

दो. जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान॥ ३२४॥

कुँरु कुँरि कल भावँरि देहीं॥ नयन लाभु सब सादर लेहीं॥
जा न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी॥
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगात मनि खंभन माहीं।
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा। देखत राम बिआहु अनूपा॥
दरस लालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी॥
भ मगन सब देखनिहारे। जनक समान अपान बिसारे॥

प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरी। नेगसहित सब रीति निबेरीं॥
राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं॥
अरुन पराग जलजु भरि नीकें। ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें॥
बहुरि बसिष्ठ दीन्ह अनुसासन। बरु दुलहिनि बैठे एक आसन॥

छं. बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भ।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें सुकृत सुरतरु फल न॥
भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा॥ १॥

तब जनक पा बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।
माँडवी श्रुतिकीरति उरमिला कुँरि लं हँकारि के॥
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभाम।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि द॥ २॥

जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै॥
जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो द रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी॥ ३॥

अनुरुप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुर गन बरषहीं॥
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारि अवस्था बिमुन सहित बिराजहीं॥ ४॥

दो. मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पार महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि॥ ३२५॥

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी। सकल कुँर ब्याहे तेहिं करनी॥
कहि न जा कछु दाज भूरी। रहा कनक मनि मंडपु पूरी॥
कंबल बसन बिचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत कामदुहा सी॥
बस्तु अनेक करि किमि लेखा। कहि न जा जानहिं जिन्ह देखा॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने॥
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासेहिं आवा॥
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी। बोले सब बरात सनमानी॥

छं. सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ा कै।

प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ा कै ॥
सिरु ना देव मना सब सन कहत कर संपुट किँ ।
सुर साधु चाहत भा सिंधु कि तोष जल अंजलि दिँ ॥ १ ॥

कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों ।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥
संबंध राजन रावरें हम बड़े अब सब बिधि भ ।
एहि राज साज समेत सेवक जानिबे बिनु गथ ल ॥ २ ॥

ए दारिका परिचारिका करि पालिबीं करुना न ।
अपराधु छमिबो बोलि पठ बहुत हौं ढीट्यो क ॥
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी कि ।
कहि जाति नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हि ॥ ३ ॥

बृंदारका गन सुमन बरिसहिं रा जनवासेहि चले ।
दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखीं मंगल गान करत मुनीस आयसु पा कै ।
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कोहबर ल्या कै ॥ ४ ॥

दो. पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न।
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पिआसे नैन॥ ३२६॥

मासपारायण ग्यारहवाँ विश्राम

स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन। सोभा कोटि मनोज लजावन॥
जावक जुत पद कमल सुहा। मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छा॥
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बाल रबि दामिनि जोती॥
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर॥
पीत जने महाछबि दे। कर मुद्रिका चोरि चितु ले॥
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत उरभूषन राजे॥
पिर उपरना काखासोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती॥
नयन कमल कल कुंडल काना। बदनु सकल सौंदर्ज निधाना॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलकु रुचिरता निवासा॥
सोहत मौरु मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे॥

छं. गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर नारि सुर सुंदरीं बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीं॥
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहिं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीं॥ १॥

कोहबरहिं आने कुँअर कुँअरि सुआसिनिन्ह सुख पा कै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गा कै॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं।
रनिवासु हास बिलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं॥ २॥

निज पानि मनि महुँ देखिति मूरति सुरूपनिधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी॥
कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न जा कहि जानहिं अलीं।
बर कुँरि सुंदर सकल सखीं लवा जनवासेहि चलीं॥ ३॥

तेहि समय सुनि असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा।
चिरु जिहुँ जोरीं चारु चारयो मुदित मन सबहीं कहा॥
जोगीन्द्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी॥ ४॥

दो. सहित बधूटिन्ह कुँर सब तब आ पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि उमगे जनु जनवास॥ ३२७॥

पुनि जेवनार भ बहु भाँती। पठ जनक बोला बराती॥
परत पाँवड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा॥
सादर सबके पाय पखारे। जथाजोगु पीढ़न्ह बैठारे॥
धो जनक अवधपति चरना। सीलु सनेहु जा नहिं बरना॥
बहुरि राम पद पंकज धो। जे हर हृदय कमल महुँ गो॥
तीनि भा राम सम जानी। धो चरन जनक निज पानी॥
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे। बोलि सूपकारी सब लीन्हे॥
सादर लगे परन पनवारे। कनक कील मनि पान सँवारे॥

दो. सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।
छन महुँ सब कें परुसि गे चतुर सुआर बिनीत॥ ३२८॥

पंच कवल करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे॥
भाँति अनेक परे पकवाने। सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने॥
परुसन लगे सुआर सुजाना। बिंजन बिबिध नाम को जाना॥
चारि भाँति भोजन बिधि गा। एक एक बिधि बरनि न जा॥
छरस रुचिर बिंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती॥
जेवँत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी॥
समय सुहावनि गारि बिराजा। हँसत रा सुनि सहित समाजा॥

एहि बिधि सबहीं भौजनु कीन्हा। आदर सहित आचमनु दीन्हा॥

दो. दे पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज।
जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज॥ ३२९॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं॥
बड़े भोर भूपतिमनि जागे। जाचक गुन गन गावन लागे॥
देखि कुँर बर बधुन्ह समेता। किमि कहि जात मोदु मन जेता॥
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं। महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं॥
करि प्रनाम पूजा कर जोरी। बोले गिरा अमिँ जनु बोरी॥
तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा। भयउँ आजु मैं पूरनकाजा॥
अब सब बिप्र बोला गोसां। देहु धेनु सब भाँति बना॥
सुनि गुर करि महिपाल बड़ा। पुनि पठ मुनि बृंद बोला॥

दो. बामदे अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि।
आ मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि॥ ३३०॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे। पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे॥
चारि लच्छ बर धेनु मगा। कामसुरभि सम सील सुहा॥

सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं। मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं॥
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू। लहेँ आजु जग जीवन लाहू॥
पा असीस महीसु अनंदा। लि बोलि पुनि जाचक बृंदा॥
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन। दि बूझि रुचि रबिकुलनंदन॥
चले पढ़त गावत गुन गाथा। जय जय जय दिनकर कुल नाथा॥
एहि बिधि राम बिआह उछाहू। सकइ न बरनि सहस मुख जाहू॥

दो. बार बार कौसिक चरन सीसु ना कह रा।
यह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसा॥ ३३१॥

जनक सनेहु सीलु करतूती। नृपु सब भाँति सराह बिभूती॥
दिन उठि बिदा अवधपति मागा। राखहिं जनकु सहित अनुरागा॥
नित नूतन आदरु अधिका। दिन प्रति सहस भाँति पहुना॥
नित नव नगर अनंद उछाहू। दसरथ गवनु सोहा न काहू॥
बहुत दिवस बीते एहि भाँती। जनु सनेह रजु बँधे बराती॥
कौसिक सतानंद तब जा। कहा बिदेह नृपहि समुझा॥
अब दसरथ कहँ आयसु देहू। जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू॥
भलेहिं नाथ कहि सचिव बोला। कहि जय जीव सीस तिन्ह ना॥

दो. अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जना ।
भ प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद रा ॥ ३३२ ॥

पुरबासी सुनि चलिहि बराता । बूझत बिकल परस्पर बाता ॥
सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने । मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती । तहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती ॥
बिबिध भाँति मेवा पकवाना । भोजन साजु न जा बखाना ॥
भरि भरि बसहँ अपार कहारा । पठ जनक अनेक सुसारा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा । सकल सँवारे नख अरु सीसा ॥
मत्त सहस दस सिंधुर साजे । जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे ॥
कनक बसन मनि भरि भरि जाना । महिषीं धेनु बस्तु बिधि नाना ॥

दो. दाज अमित न सकि कहि दीन्ह बिदेहँ बहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि ॥ ३३३ ॥

सबु समाजु एहि भाँति बना । जनक अवधपुर दीन्ह पठा ॥
चलिहि बरात सुनत सब रानीं । बिकल मीनगन जनु लघु पानीं ॥
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं । दे असीस सिखावनु देहीं ॥
होहु संतत पियहि पिआरी । चिरु अहिबात असीस हमारी ॥

सासु ससुर गुर सेवा करेहू। पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू॥
अति सनेह बस सखीं सयानी। नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी॥
सादर सकल कुँरि समुझा। रानिन्ह बार बार उर ला॥
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारीं। कहहिं बिरंचि रचीं कत नारीं॥

दो. तेहि अवसर भान्ह सहित रामु भानु कुल केतु।
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु॥ ३३४॥

चारि भा सुभायँ सुहा। नगर नारि नर देखन धा॥
को कह चलन चहत हहिं आजू। कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी॥
को जानै केहि सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी॥
मरनसीलु जिमि पाव पिषा। सुरतरु लहै जनम कर भूखा॥
पाव नारकी हरिपदु जैसें। इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसे॥
निरखि राम सोभा उर धरहू। निज मन फनि मूरति मनि करहू॥
एहि बिधि सबहि नयन फलु देता। ग कुँर सब राज निकेता॥

दो. रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु।
करहि निछावरि आरती महा मुदित मन सासु॥ ३३५॥

देखि राम छबि अति अनुरागीं। प्रेमबिबस पुनि पुनि पद लागीं॥
रही न लाज प्रीति उर छा। सहज सनेहु बरनि किमि जा॥
भान्ह सहित उबटि अन्हवा। छरस असन अति हेतु जेवाँए॥
बोले रामु सुवसरु जानी। सील सनेह सकुचमय बानी॥
रा अवधपुर चहत सिधा। बिदा होन हम इहाँ पठा॥
मातु मुदित मन आयसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू॥
सुनत बचन बिलखे रनिवासू। बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू॥
हृदयँ लगा कुँरि सब लीन्ही। पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्ही॥

छं. करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।
बलि जाँउ तात सुजान तुम्ह कहुँ बिदित गति सब की अहै॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी।
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी॥

सो. तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन॥ ३३६॥

अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी॥

सुनि सनेहसानी बर बानी। बहुबिधि राम सासु सनमानी॥
राम बिदा मागत कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी॥
पा असीस बहुरि सिरु ना। भान्ह सहित चले रघुरा॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भ सनेह सिथिल सब रानी॥
पुनि धीरजु धरि कुँरि हँकारी। बार बार भेटहिं महतारीं॥
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी। बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी॥
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगा। बाल बच्छ जिमि धेनु लवा॥

दो. प्रेमबिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुनाँ बिरहँ निवासु॥ ३३७॥

सुक सारिका जानकी ज्या। कनक पिंजरन्हि राखि पढ़ा॥
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही। सुनि धीरजु परिहरइ न केही॥
भ बिकल खग मृग एहि भाँति। मनुज दसा कैसें कहि जाती॥
बंधु समेत जनकु तब आ। प्रेम उमगि लोचन जल छा॥
सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी॥
लीन्हि राँय उर ला जानकी। मिटी महामरजाद ग्यान की॥
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचारु न अवसर जाने॥
बारहिं बार सुता उर ला। सजि सुंदर पालकीं मगा॥

दो. प्रेमबिबस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस ।
कुँअरि चढ़ा पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥ ३३८ ॥

बहुबिधि भूप सुता समुझा । नारिधरमु कुलरीति सिखा ॥
दासीं दास दि बहुतेरे । सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी । होहिं सगुन सुभ मंगल रासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा । संग चले पहुँचावन राजा ॥
समय बिलोकि बाजने बाजे । रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे ॥
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे । दान मान परिपूरन कीन्हे ॥
चरन सरोज धूरि धरि सीसा । मुदित महीपति पा असीसा ॥
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना । मंगलमूल सगुन भ नाना ॥

दो. सुर प्रसून बरषहि हरषि करहिं अपछरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजा निसान ॥ ३३९ ॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे । सादर सकल मागने टेरे ॥
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे । प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
बार बार बिरिदावलि भाषी । फिरे सकल रामहि उर राखी ॥

बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनकु प्रेमबस फिरै न चहहीं॥
पुनि कह भूपति बचन सुहा। फिरि महीस दूरि बड़ि आ॥
रा बहोरि उतरि भ ठाढ़े। प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढ़े॥
तब बिदेह बोले कर जोरी। बचन सनेह सुधाँ जनु बोरी॥
करौ कवन बिधि बिनय बना। महाराज मोहि दीन्हि बड़ा॥

दो. कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति।
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदयँ समाति॥ ३४०॥

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा। आसिरबादु सबहि सन पावा॥
सादर पुनि भेंटे जामाता। रूप सील गुन निधि सब भ्राता॥
जोरि पंकरुह पानि सुहा। बोले बचन प्रेम जनु जा॥
राम करौ केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा॥
करहिं जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता मदु त्यागी॥
ब्यापकु ब्रह्मु अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी॥
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी॥
महिमा निगमु नेति कहि कह। जो तिहुँ काल एकरस रह॥

दो. नयन बिषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख मूल।

सबइ लाभु जग जीव कहँ भँ ईसु अनुकुल ॥ ३४१ ॥

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ा । निज जन जानि लीन्ह अपना ॥
होहिं सहस दस सारद सेषा । करहिं कलप कोटिक भरि लेखा ॥
मोर भाग्य रार गुन गाथा । कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥
मै कछु कहउँ एक बल मोरें । तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥
बार बार मागउँ कर जोरें । मनु परिहरै चरन जनि भोरें ॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे । पूरनकाम रामु परितोषे ॥
करि बर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सप्रेमु पुनि आसिष दीन्ही ॥

दो. मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस ।
भ परस्पर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस ॥ ३४२ ॥

बार बार करि बिनय बड़ा । रघुपति चले संग सब भा ॥
जनक गहे कौसिक पद जा । चरन रेनु सिर नयनन्ह ला ॥
सुनु मुनीस बर दरसन तोरें । अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें ॥
जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं । करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी । सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥

कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु ना। फिरे महीसु आसिषा पा॥
चली बरात निसान बजा। मुदित छोट बड़ सब समुदा॥
रामहि निरखि ग्राम नर नारी। पा नयन फलु होहिं सुखारी॥

दो. बीच बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुख देत।
अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आ जनेत॥ ३४३॥

हने निसान पनव बर बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे॥
झाँझि बिरव डिंडमीं सुहा। सरस राग बाजहिं सहना॥
पुर जन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता॥
निज निज सुंदर सदन सँवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे॥
गलीं सकल अरगजाँ सिंचा। जहँ तहँ चौकें चारु पुरा॥
बना बजारु न जा बखाना। तोरन केतु पताक बिताना॥
सफल पूगफल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदंब तमाला॥
लगे सुभग तरु परसत धरनी। मनिमय आलबाल कल करनी॥

दो. बिबिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि॥ ३४४॥

भूप भवन तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मनु मोहा॥
मंगल सगुन मनोहरता। रिधि सिधि सुख संपदा सुहा॥
जनु उछाह सब सहज सुहा। तनु धरि धरि दसरथ दसरथ गृहँ छा॥
देखन हेतु राम बैदेही। कहहु लालसा होहि न केही॥
जुथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि। निज छबि निदरहिं मदन बिलासनि॥
सकल सुमंगल सजें आरती। गावहिं जनु बहु बेष भारती॥
भूपति भवन कोलाहलु हो। जा न बरनि समउ सुखु सो॥
कौसल्यादि राम महतारीं। प्रेम बिबस तन दसा बिसारीं॥

दो. दि दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेस पुरारी।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पा पदारथ चारि॥ ३४५॥

मोद प्रमोद बिबस सब माता। चलहिं न चरन सिथिल भ गाता॥
राम दरस हित अति अनुरागीं। परिछनि साजु सजन सब लागीं॥
बिबिध बिधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्राँ साजे॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मंगल मूला॥
अच्छत अंकुर लोचन लाजा। मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा॥
छुहे पुरट घट सहज सुहा। मदन सकुन जनु नीड़ बना॥
सगुन सुंगध न जाहिं बखानी। मंगल सकल सजहिं सब रानी॥

रचीं आरतीं बहुत बिधाना। मुदित करहिं कल मंगल गाना॥

दो. कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिँ मात।
चलीं मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात॥ ३४६॥

धूप धूम नभु मेचक भय। सावन घन घमंडु जनु ठय॥
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं॥
मंजुल मनिमय बंदनिवारे। मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे॥
प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि॥
दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा। जाचक चातक दादुर मोरा॥
सुर सुगन्ध सुचि बरषहिं बारी। सुखी सकल ससि पुर नर नारी॥
समउ जानी गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा॥
सुमिरि संभु गिरजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा॥

दो. होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुंदुभीं बजा।
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गा॥ ३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिं जसु तिहु लोक उजागर॥
जय धुनि बिमल बेद बर बानी। दस दिसि सुनि सुमंगल सानी॥

बिपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे॥
बने बराती बरनि न जाहीं। महा मुदित मन सुख न समाहीं॥
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भ सुखारे॥
करहिं निछावरि मनिगन चीरा। बारि बिलोचन पुलक सरीरा॥
आरति करहिं मुदित पुर नारी। हरषहिं निरखि कुँअर बर चारी॥
सिबिका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी॥

दो. एहि बिधि सबही देत सुखु आ राजदुआर।
मुदित मातु परुछनि करहिं बधुन्ह समेत कुमार॥ ३४८॥

करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा॥
भूषन मनि पट नाना जाती॥ करही निछावरि अगनित भाँती॥
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी॥
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी॥ मुदित सफल जग जीवन लेखी॥
सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही। गान करहिं निज सुकृत सराही॥
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा॥
देखि मनोहर चारि जोरीं। सारद उपमा सकल ढँढोरीं॥
देत न बनहिं निपट लघु लागी। एकटक रहीं रूप अनुरागीं॥

दो. निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवा निकेत॥ ३४९॥

चारि सिंघासन सहज सुहा। जनु मनोज निज हाथ बना॥
तिन्ह पर कुँरि कुँर बैठारे। सादर पाय पुनित पखारे॥
धूप दीप नैबेद बेद बिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि॥
बारहिं बार आरती करहीं। ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीं॥
बस्तु अनेक निछावर होहीं। भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं॥
पावा परम तत्व जनु जोगीं। अमृत लहे जनु संतत रोगीं॥
जनम रंक जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभु सुहावा॥
मूक बदन जनु सारद छा। मानहुँ समर सूर जय पा॥

दो. एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु॥
भान्ह सहित बिआहि घर आ रघुकुलचंदु॥ ३५०क॥

लोक रीत जननी करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं।
मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ रामु मनहिं मुसकाहिं॥ ३५०ख॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी। पूजीं सकल बासना जी की॥

सबहिं बंदि मागहिं बरदाना। भान्ह सहित राम कल्याना॥
अंतरहित सुर आसिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेंहीं॥
भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे॥
आयसु पा राखि उर रामहि। मुदित ग सब निज निज धामहि॥
पुर नर नारि सकल पहिरा। घर घर बाजन लगे बधा॥
जाचक जन जाचहि जो जो। प्रमुदित रा देहिं सो सो॥
सेवक सकल बजनिआ नाना। पूरन कि दान सनमाना॥

दो. देंहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ।
तब गुर भूसुर सहित गृहँ गवनु कीन्ह नरनाथ॥ ३५१॥

जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्ही। लोक बेद बिधि सादर कीन्ही॥
भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठीं भाग्य बड़ जानी॥
पाय पखारि सकल अन्हवा। पूजि भली बिधि भूप जेवाँए॥
आदर दान प्रेम परिपोषे। देत असीस चले मन तोषे॥
बहु बिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा। नाथ मोहि सम धन्य न दूजा॥
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी। रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी॥
भीतर भवन दीन्ह बर बासु। मन जोगवत रह नृप रनिवासू॥
पूजे गुर पद कमल बहोरी। कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी॥

दो. बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु।
पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीसु॥ ३५२॥

बिनय कीन्हि उर अति अनुरागें। सुत संपदा राखि सब आगें॥
नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा। आसिरबादु बहुत बिधि दीन्हा॥
उर धरि रामहि सीय समेता। हरषि कीन्ह गुर गवनु निकेता॥
बिप्रबधू सब भूप बोला। चैल चारु भूषन पहिरा॥
बहुरि बोला सुआसिनि लीन्हीं। रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं॥
नेगी नेग जोग सब लेहीं। रुचि अनुरुप भूपमनि देहीं॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भाँति सनमाने॥
देव देखि रघुबीर बिबाहू। बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू॥

दो. चले निसान बजा सुर निज निज पुर सुख पा।
कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयँ समा॥ ३५३॥

सब बिधि सबहि समदि नरनाहू। रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू॥
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे। सहित बहूटिन्ह कुँर निहारे॥
लि गोद करि मोद समेता। को कहि सकइ भयउ सुखु जेता॥

बधू सप्रेम गोद बैठारीं। बार बार हियँ हरषि दुलारीं॥
देखि समाजु मुदित रनिवासू। सब कें उर अनंद कियो बासू॥
कहे भूप जिमि भयउ बिबाहू। सुनि हरषु होत सब काहू॥
जनक राज गुन सीलु बड़ा। प्रीति रीति संपदा सुहा॥
बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी। रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी॥

दो. सुतन्ह समेत नहा नृप बोलि बिप्र गुर ग्याति।
भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पंच गइ राति॥ ३५४॥

मंगलगान करहिं बर भामिनि। भै सुखमूल मनोहर जामिनि॥
अँचइ पान सब काहूँ पा। स्रग सुगंध भूषित छबि छा॥
रामहि देखि रजायसु पा। निज निज भवन चले सिर ना॥
प्रेम प्रमोद बिनोदु बढ़ा। समउ समाजु मनोहरता॥
कहि न सकहि सत सारद सेसू। बेद बिरंचि महेस गनेसू॥
सो मै कहौं कवन बिधि बरनी। भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी॥
नृप सब भाँति सबहि सनमानी। कहि मृदु बचन बोला रानी॥
बधू लरिकनीं पर घर आं। राखेहु नयन पलक की ना॥

दो. लरिका श्रमित उनीद बस सयन करावहु जा।

अस कहि गे बिश्रामगृहँ राम चरन चितु ला ॥ ३५५ ॥

भूप बचन सुनि सहज सुहा । जरित कनक मनि पलँग डसा ॥
सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल कलित सुपेतीं नाना ॥
उपबरहन बर बरनि न जाहीं । स्त्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥
रतनदीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनइ जान जेहिं जोवा ॥
सेज रुचिर रचि रामु उठा । प्रेम समेत पलँग पौढ़ा ॥
अग्या पुनि पुनि भान्ह दीन्ही । निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥
मारग जात भयावनि भारी । केहि बिधि तात ताड़का मारी ॥

दो. घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिं नहिं काहु ॥
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ॥ ३५६ ॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईस अनेक करवरें टारी ॥
मख रखवारी करि दुहुँ भा । गुरु प्रसाद सब बिद्या पा ॥
मुनितय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठ पीठि पबि कूट कठोरा । नृप समाज महुँ सिव धनु तोरा ॥
बिस्व बिजय जसु जानकि पा । आ भवन ब्याहि सब भा ॥

सकल अमानुष करम तुम्हारे। केवल कौसिक कृपाँ सुधारे॥
आजु सुफल जग जनमु हमारा। देखि तात बिधुबदन तुम्हारा॥
जे दिन ग तुम्हहि बिनु देखें। ते बिरंचि जनि पारहिं लेखें॥

दो. राम प्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बर बैन।
सुमिरि संभु गुर बिप्र पद कि नीदबस नैन॥ ३५७॥

नीदउँ बदन सोह सुठि लोना। मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना॥
घर घर करहिं जागरन नारीं। देहिं परसपर मंगल गारीं॥
पुरी बिराजति राजति रजनी। रानीं कहहिं बिलोकहु सजनी॥
सुंदर बधुन्ह सासु लै सो। फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गो॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुनचूड़ बर बोलन लागे॥
बंदि मागधन्हि गुनगन गा। पुरजन द्वार जोहारन आ॥
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता। पा असीस मुदित सब भ्राता॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे॥

दो. कीन्ह सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहा।
प्रातक्रिया करि तात पहिं आ चारि भा॥ ३५८॥

नवान्हपारायणतीसरा विश्राम

भूप बिलोकि लि उर ला। बैठै हरषि रजायसु पा॥
देखि रामु सब सभा जुड़ानी। लोचन लाभ अवधि अनुमानी॥
पुनि बसिष्ठु मुनि कौसिक आ। सुभग आसनन्हि मुनि बैठा॥
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे। निरखि रामु दो गुर अनुरागे॥
कहहिं बसिष्ठु धरम इतिहासा। सुनहिं महीसु सहित रनिवासा॥
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी। मुदित बसिष्ट बिपुल बिधि बरनी॥
बोले बामदे सब साँची। कीरति कलित लोक तिहुँ माची॥
सुनि आनंदु भयउ सब काहू। राम लखन उर अधिक उछाहू॥

दो. मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस एहि भाँति।
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति॥ ३५९॥

सुदिन सोधि कल कंकन छौरे। मंगल मोद बिनोद न थोरे॥
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं। अवध जन्म जाचहिं बिधि पाहीं॥
बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं। राम सप्रेम बिनय बस रहहीं॥
दिन दिन सयगुन भूपति भा। देखि सराह महामुनिरा॥
मागत बिदा रा अनुरागे। सुतन्ह समेत ठाढ़ भे आगे॥
नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी॥

करब सदा लरिकनः पर छोहू। दरसन देत रहब मुनि मोहू॥
अस कहि रा सहित सुत रानी। परे चरन मुख आव न बानी॥
दीन्ह असीस बिप्र बहु भाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती॥
रामु सप्रेम संग सब भा। आयसु पा फिरे पहुँचा॥

दो. राम रूपु भूपति भगति ब्याहु उछाहु अनंदु।
जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंदु॥ ३६०॥

बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा बखानी॥
सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन रा। बरनत आपन पुन्य प्रभा॥
बहुरे लोग रजायसु भय। सुतन्ह समेत नृपति गृहँ गय॥
जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा। सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा॥
आ ब्याहि रामु घर जब तें। बसइ अनंद अवध सब तब तें॥
प्रभु बिबाहँ जस भयउ उछाहू। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू॥
कबिकुल जीवनु पावन जानी॥ राम सीय जसु मंगल खानी॥
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी॥

छं. निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कबि कौनें लह्यो॥

उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्बदा सुखु पावहीं॥

सो. सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु॥ ३६१॥

मासपारायण बारहवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने
प्रथमः सोपानः समाप्तः।
बालकाण्ड समाप्त